A Daily News Magazine
भोपाल
सोमवार, 23 मार्च, 2026

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 23, अंक 199, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

प्रसंगवश

धरी रह गई अमेरिकी सुरक्षा, दुबई जैसे शहरों का टूटा भ्रम

पॉला रोसास

पिछले कुछ दशकों में, जब लेबनान पर बम गिर रहे थे, इराक़ में आत्मघाती हमले हो रहे थे और सीरिया में इस्लामिक स्टेट विदेशियों को अगवा कर उन्हें मौत के घाट उतार रहा था, तब दुबई में लगातार जश्न का माहौल बना हुआ था। दुनिया के अमीर लोग दुबई के कृत्रिम द्वीपों पर हवेलियां ख़रीद रहे थे, अबू धाबी के लूव्र संग्रहालय में घूम रहे थे, या क़तर के रेगिस्तान में सफ़ारी का लुत्फ़ उठा रहे थे। इन देशों ने सालों तक खुद को सुरक्षा और समृद्धि के गढ़ के तौर पर पेश किया है। इसी वजह से दुबई, अबू धाबी और दोहा जैसे शहर अरबपतियों, लग्ज़री पर्यटन, और अंतरराष्ट्रीय आयोजनों के लिए पसंदीदा ठिकाने बन गए। लेकिन यह सब 28 फ़रवरी को बदल गया।

उस दिन अमेरिका और इसराइल के ईरान पर हमले ने एक ऐसे युद्ध को जन्म दिया, जिसमें ईरान ने न सिर्फ़ इसराइली शहरों और इलाके में मौजूद अमेरिकी ठिकानों पर बमबारी करके जवाब दिया, बल्कि खाड़ी में अमेरिका के सहयोगियों को भी निशाना बनाया। राजशाही वाले इन देशों ने अचानक खुद को ऐसे संघर्ष में घिरा हुआ पाया, जिसकी उन्हें उम्मीद नहीं थी।

ईरानी मिसाइलें अचानक शॉपिंग मॉल, आलीशान गगनचुंबी इमारतों और नौकाओं से भरे बंदरगाहों के पास आकर गिरने लगीं। यह सब क़तर, यूएई, कुवैत, बहरीन, सऊदी अरब और ओमान के लोगों की भयभीत निगाहों के सामने हुआ। युद्ध अब दुनिया के कुछ सबसे आलीशान होटलों तक भी पहुंच चुका है। ईरान के एक ड्रोन को हवा में मार गिराए जाने के बाद उसके अवशेष दुबई के बुर्ज अल अरब पर गिरे, जबकि कृत्रिम द्वीप पाम जुमेराह पर स्थित फ़ेयरमोंट द पाम होटल पर सीधा हमला हुआ। क़तर की सरकारी तेल कंपनी ने कहा कि रा लाफ़ान औद्योगिक परिसर पर मिसाइल हमलों के चलते उसे 'भारी नुक़सान' झेलना पड़ा है। इसके नतीजे बेहद विनाशकारी साबित हो रहे हैं, और खाड़ी की देशों का गुस्सा चरम पर है। उड़ानों, होटल बुकिंग्स, सम्मेलनों और बहरीन व सऊदी अरब में फ़ॉर्मूला 1 जैसे अंतरराष्ट्रीय आयोजनों के रद्द होने की लहर ने इन अमीर राजशाहियों को झकझोर कर रख दिया है। इसमें होर्मुज़ स्ट्रेट के बंद होने का असर भी जुड़ गया है, जिससे ईंधन के निर्यात पर ब्रेक लग गया है।

कुवैत विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर बद्र अल सैफ़, जो कुवैत के प्रधानमंत्री के कार्यालय में उप प्रमुख रह चुके हैं,ने कहा, 'खाड़ी के देशों ने मध्य पूर्व में खुद को सुरक्षित ठिकानों के तौर पर पेश करने के लिए काफ़ी मेहनत की है। लेकिन पिछले एक हफ़्ते की कार्रवाइयों और घटनाओं ने उस छवि को धुंधला कर दिया है।'

खाड़ी देशों के ये तानाशाह निगरानी तंत्र पर बड़े पैमाने में निवेश करते हैं। इससे वे काफ़ी हद तक आतंकवाद से सुरक्षित रहे हैं। लेकिन साथ ही उन्होंने असहमति की आवाज़ों या ऐसी किसी भी चीज़ पर सख़्ती की है, जो उनकी छवि को नुक़सान पहुंचा सकती थी।

फ़ाइनेंशियल टाइम्स ने वर्ल्ड ट्रैवल एंड टूरिज़्म काउंसिल के हवाले से लिखा है कि सिर्फ़ पर्यटन उद्योग को ही इस क्षेत्र में रोज़ाना क़रीब 60 करोड़ अमेरिकी डॉलर का नुक़सान हो रहा है। कम से कम तीन हवाई अड्डे- दुबई, कुवैत और अबू धाबी- ईरानी मिसाइलों या ड्रोन हमलों की चपेट में आ चुके हैं, जिसके चलते हज़ारों उड़ानें रद्द करनी पड़ी हैं। हार्वर्ड के कैनेडी स्कूल के बेल्फ़र सेंटर की शोधकर्ता एल्हाम फ़ख़रो ने कहा, 'सुरक्षा की यह छवि आंशिक रूप से कृत्रिम थी, लेकिन आंशिक रूप से वास्तविक भी थी। क्योंकि खाड़ी देशों ने दशकों तक खुद अपने आस-पास हो रही हिंसा से दूर रखा था।'

ईरान के साथ युद्ध बेहद महंगा साबित हो रहा है और इससे वहां के नागरिकों और हुकमरानों- दोनों के बीच गुस्से और हताशा की भावना गहराती जा रही है। अमीराती अरबपति कारोबारी ख़लफ़ अहमद अल हब्तूर ने अमेरिकी राष्ट्रपति को लिखे एक कड़े पत्र में पूछा, 'किसने उन्हें यह अधिकार दिया कि वे हमारे क्षेत्र को ईरान के साथ युद्ध में घसीट लें? और उन्होंने यह ख़तरनाक फैसला किस आधार पर लिया?'

हार्वर्ड के कैनेडी स्कूल के बेल्फ़र सेंटर की शोधकर्ता एल्हाम फ़ख़रो ने कहा, 'खाड़ी की राजधानियों में विश्वासघात की भावना काफ़ी गहरी है।' लंदन स्थित थिंक टैंक चैटहम हाउस के शोधकर्ता नील क्लिलियम ने कहा कि खाड़ी की राजधानियों में 'भारी गुस्सा' है, लेकिन फ़िलहाल 'वे ज़्यादा कुछ कर पाने की स्थिति में नहीं हैं।' यह पहली बार नहीं है जब अमेरिका ने उन्हें नज़रअंदाज़ किया हो। साल 2015 में जब ईरान के साथ परमाणु समझौता हुआ था, तब भी खाड़ी के देशों को बाहर ही रखा गया था।

फ़ारस की खाड़ी की राजशाहियों के अपने पड़ोसी ईरान के साथ रिश्ते लंबे समय से तनावपूर्ण रहे हैं। ईरान शिया बहुल देश है जबकि खाड़ी के देश ज़्यादातर सुन्नी हैं। इसके अलावा ईरान में 1979 की क्रांति के बाद से खुद को क्षेत्र में अमेरिका के सबसे बड़े दुश्मन के रूप में पेश किया है, जबकि अरब राजशाहियाँ अमेरिका की सहयोगी रही हैं। लंदन स्थित थिंक टैंक चैटहम हाउस के शोधकर्ता नील क्लिलियम के मुताबिक़, 'इन सभी देशों ने किसी न किसी तरह नेटो के अनुच्छेद 5 जैसी व्यवस्था चाही, जिसमें यह माना जाता है कि अगर एक सदस्य पर हमला होता है, तो बाकी उसके बचाव में आगे आएंगे। खाड़ी देशों की सुरक्षा नीति, तीन अनुमानों पर टिकी थी- पहला ये कि अमेरिका बाहरी ख़तरों के ख़िलाफ़ उन्हें सुरक्षा की गारंटी देगा।'

'दूसरा, ईरान के साथ तनाव कम होने से, सीधे टकराव का जोखिम घटेगा और तीसरा, कुछ देशों के लिए इसराइल के साथ सीमित रिश्ते बनाना रणनीतिक फ़ायदों वाला होगा। ताकि खाड़ी की सरकारें अमेरिका, ईरान और इसराइल तेल अवीव के बीच संतुलन बनाए रख सकें। लेकिन ईरान के साथ मौजूदा युद्ध ने इस पूरी व्यवस्था की सीमाओं को उजागर कर दिया है। नील विलियम का कहना है कि अमेरिका से दूर जाना उनके लिए आसान नहीं होगा।'

तो अब खाड़ी देशों के पास क्या विकल्प बचे हैं? विशेषज्ञों की राय में, कोई भी विकल्प आसान नहीं है. लेकिन संघर्ष जितनी जल्दी ख़त्म होगा, नुक़सान उतना ही कम रहेगा। एल्हाम फ़ख़रो का कहना है कि अगर युद्ध लंबा खिंचता है, तो प्रवासी कामगारों का पलायन तेज़ होगा और पूंजी का बाहर जाना भी बढ़ेगा- जबकि दुबई जैसी अर्थव्यवस्थाएं इन्हीं पर निर्भर हैं। होर्मुज़ स्ट्रेट के बंद होने से खाड़ी देशों को जो आर्थिक नुक़सान हो रहा है, उसे सिर्फ़ स्थाई युद्धविराम के ज़रिए ही रोका जा सकता है।

(बीबीसी हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

अमेरिका से एलपीजी रूस से क्रूड आया भारत

● जल्द संकट दूर होने के बन गए आसार, सरकार ऐक्टिव

गैस-कच्चा तेल लेकर अब तक 5 जहाज भारत आ चुके

बेंगलुरु (एजेंसी)। अमेरिका के टेक्सास से लिक्विफाइड पेट्रोलियम गैस (एलपीजी) लेकर एक कार्गो शिप रविवार को मेंगलुरु पोर्ट पर पहुंच गया है। वहीं रूस से एक जहाज क्रूड लेकर भारत आया। पिछले 7 दिनों में करीब पांच जहाज गैस-कच्चा तेल लेकर समुद्र के रास्ते भारत पहुंचे। इससे पहले 18 मार्च को क्रूड ऑयल टैंकर 'जग लाडकी' गुजरात में अडाणी पोर्ट्स आया था। वहीं, दो अन्य एलपीजी कैरियर एलपीजी शिवालिक और एलपीजी नंदा देवी करीब 92,712 मीट्रिक टन गैस लेकर 16 और 17 मार्च को भारत आए थे। हालांकि, ये तीनों जहाज होर्मुज के रास्ते से होकर गुजरे थे। फारस की खाड़ी में अभी भी करीब 22 भारतीय जहाज फंसे हुए हैं। हालांकि, वे सभी सुरक्षित हैं। फारस की खाड़ी में मौजूद होर्मुज स्ट्रेट दुनिया के अहम शिपिंग रूट्स में शामिल है।

ईरानी नेवी ने होर्मुज पार कराया एलपीजी लदा भारतीय जहाज

ईरानी नेवी ने 13 मार्च की रात को एक भारतीय जहाज को सुरक्षित तरीके से होर्मुज स्ट्रेट पार कराया था। एलपीजी लेकर आ रहा ये जहाज 10 दिन से फारस की खाड़ी में फंसा था। यह खबर ब्लूमबर्ग ने दी है। रिपोर्ट के मुताबिक, यह काम भारत और ईरान के बीच बातचीत के बाद हुआ। जहाज को पहले से तय रास्ते से निकाला गया ताकि वह हमलों से बच सके। इस दौरान जहाज का ट्रैकिंग सिस्टम बंद कर दिया गया था। हालांकि रिपोर्ट में इस जहाज का नाम नहीं बताया गया है। अभी तक दो भारतीय जहाज शिवालिक (16 मार्च) और नंदा देवी (17 मार्च) होर्मुज के रास्ते एलपीजी लेकर भारत पहुंचे हैं। वहीं फारस की खाड़ी में अभी भी 22 भारतीय जहाज फंसे हुए हैं।

पश्चिम एशिया के हालात पर पीएम ने की बड़ी बैठक

● शाह-नड्डा, पुरी समेत सीनियर लीडर रहे मौजूद, गैस-तेल और ऊर्जा की स्थिति पर चर्चा

नई दिल्ली (एजेंसी)। अमेरिका-इजराइल की ईरान से जंग के कारण पश्चिम एशिया में बने संघर्ष के हालात पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अध्यक्षता में हाई लेवल मीटिंग हुई। इसमें पेट्रोलियम, कच्चा तेल, गैस, बिजली और फर्टिलाइजर्स की स्थिति की समीक्षा की गई। बैठक में केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह, वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण, स्वास्थ्य मंत्री जेपी नड्डा, पेट्रोलियम मंत्री हरदीप सिंह पुरी, कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान, विदेश मंत्री एस जयशंकर, सिविल एविएशन मिनिस्टर राममोहन नायडू, रेल और आईटी मिनिस्टर अश्विनी वैष्णव समेत अन्य सीनियर लीडर मौजूद रहे।

उर्वरक क्षेत्रों से जुड़ी स्थिति की समीक्षा

इस बैठक का मुख्य उद्देश्य पेट्रोलियम, कच्चे तेल, गैस, बिजली और उर्वरक क्षेत्रों से जुड़ी स्थिति की समीक्षा करना था। इसके अलावा अधिकारियों को देश भर में इन जरूरी चीजों की निर्बाद आपूर्ति पर विशेष ध्यान देने का भी निर्देश दिया गया। सरकारी सूत्रों के मुताबिक सरकार देश भर में ऊर्जा आपूर्ति सुरक्षित करने के लिए पर्याप्त कदम उठा रही है। पीएम से लेकर वरिष्ठ अधिकारी सभी इस मामले पर लगातार नजर बनाए हुए हैं। देश में गैस और तेल की आपूर्ति निर्बाध होती रहे, इसी सिलसिले में कल प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ईरान के राष्ट्रपति से भी बात की थी। इस बातचीत के दौरान दोनों नेताओं ने शांति, सुरक्षा और मुक्त व्यापार को लेकर बात की। प्रधानमंत्री मोदी ने इस बातचीत के दौरान ही खाड़ी क्षेत्रों के महत्वपूर्ण बुनियादी ढ़ांचों पर हुए हमलों की निंदा भी की थी। उन्होंने कहा कि ऐसी कार्रवाई ठीक नहीं है।

शरद की सुबह

एक मन है कि यहीं रुक जायें
एक मन है कि कहीं और रहें
एक मन है कि कहीं रहना क्या
एक मन है कि अभी और रहें
साथ आने के लिए कोई न था
साथ जाने के लिए कोई नहीं
एक मन है कि खूब ख़ाली हों
एक मन है कि अभी और भरें
मौत हर पल उठा रही हम को
फिर भी जीना-सा लगा रहता है
एक मन है कि कुछ किया ही नहीं
एक मन है अभी कुछ और करें

- ध्रुव शुक्ल

एक्शन में मोहन सरकार: सीधी कलेक्टर और गुना एसपी को हटाया

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने रविवार को सीधी जिले में अचानक पहुंचकर स्थानीय नागरिकों से सीधा संवाद कर प्रशासनिक व्यवस्था और योजनाओं के मैदानी क्रियान्वयन की स्थिति जानी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने जनसंवाद के दौरान आमजन और जनप्रतिनिधियों द्वारा विभिन्न मुद्दों पर की गई शिकायतों और जिला प्रशासन

*** जिला सहकारी बैंक के महाप्रबंधक को किया निलंबित**
*** श्रीमती हीतिका वसंत गुना की नई एसपी बनी**

एवं विभिन्न विभागों की कार्य प्रणाली पर विस्तार से समीक्षा एवं फीडबैक लिया गया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने प्राप्त शिकायतों के दृष्टिगत सीधी कलेक्टर श्री स्वरोचित सोमवंशी को तत्काल प्रभाव से हटाने और जिला सहकारी बैंक के के महाप्रबधंक श्री पी.एस. धनवाल को तत्काल प्रभाव से

निलंबित करने के निर्देश दिये। वहीं श्रीमती हीतिका वसंत गुना की नई एसपी बनाई गई।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने गुना जिले में तलाशी के दौरान मिली नगद राशि में हेरफेर के मामले में पुलिस अधीक्षक गुना श्री अंकित सोनी की भूमिका को यथोचित न मानते हुए पुलिस अधीक्षक पद से हटाने के निर्देश भी दिये। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि नागरिकों से प्राप्त शिकायतों के संदर्भ में शासन स्तर पर आवश्यक कदम भी उठाये जायेंगे। प्रदेश में सुशासन की व्यवस्था के चलते अधिकारी-कर्मचारियों द्वारा की गई लापरवाही किसी भी स्थिति में बर्दाश्त नहीं की जायेगी। उन्होंने कहा कि जनकल्याण राज्य सरकार की प्राथमिकता है। आमजन की समस्याओं के निराकरण के लिये प्रदेश में अभियान के साथ शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में शिविर भी आयोजित किये जाते हैं। अधिकारी-कर्मचारियों को यह संदेश देना चाहता हूँ कि यदि वे फील्ड में रहकर आमजन की समस्याओं का निराकरण नहीं कर सकते तो उन्हें फील्ड में रहने का कोई अधिकार नहीं है।

सभी के लिए खुला है होर्मुज

● डोनाल्ड ट्रंप की धमकी के बाद तेहरान से आ गया जवाब

तेहरान (एजेंसी)। स्ट्रेट ऑफ होर्मुज खोलने को लेकर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की धमकी के बाद ईरान की भी प्रतिक्रिया आई है। ईरान ने कहा है कि होर्मुज 'दुश्मन देशों' को छोड़कर सभी के लिए खुला है। ईरान के एक अधिकारी ने यह बात रविवार को संयुक्त राष्ट्र की समुद्री संस्था से कही। ईरान के अधिकारी अली मौसावी ने कहा कि उनका देश गल्फ में समुद्री सुरक्षा बढ़ाने के लिए इंटरनेशनल मैरीटाइम ऑर्गेनाइजेशन के साथ मिलकर काम करने के लिए तैयार हैं लेकिन वहां से वही जहाज जा सकते हैं जो ईरान के दुश्मनों से जुड़े नहीं हैं। अन्य जहाजों को होर्मुज से गुजरने के लिए ईरान के नियम मानने होंगे और उसके साथ समन्वय करना होगा। ईरान पर अमेरिका और इजरायल के हमलों को होर्मुज में वर्तमान हालातों की जड़ बताते हुए उन्होंने कहा कि कूटनीति ही ईरान की प्राथमिकता है लेकिन हमलों को रोके जाना और दोनों पक्षों के बीच भरोसा बनना बेहद जरूरी है। स्ट्रेट ऑफ होर्मुज से होकर दुनिया का 20 फीसदी तेल और गैस व्यापार होता है। ईरान ने इस रास्ते से गुजरने वाले कुछ जहाजों को निशाना बनाया है। इन हमलों के बाद इस रास्ते से होने वाला व्यापार लगभग बंद है।

पंचम मां स्कंदमाता

देवी मां का पांचवां रूप स्कंदमाता के नाम से प्रचलित है। भगवान् कार्तिकेय का एक नाम स्कन्द भी है जो ज्ञानशक्ति और कर्मशक्ति के एक साथ सूचक है। स्कन्द इन्हीं दोनों के मिश्रण का परिणाम है।

मोदी सबसे ज्यादा दिन सरकार प्रमुख रहने वाले राजनेता बने

● पीएम-सीएम मिलाकर बतौर हेड ऑफ गवर्नमेंट 8931 दिन पूरे

नई दिल्ली (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भारत में सबसे लंबे समय तक सरकार के प्रमुख रहने वाले नेता बन गए हैं। गुजरात के मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री के तौर पर सरकार के प्रमुख के रूप में 8,931 दिन पूरे करने के साथ ही पीएम मोदी ने चामलिंग के 8,930 दिनों के रिकॉर्ड को तोड़ दिया है। उन्होंने सिक्किम के पूर्व मुख्यमंत्री पवन कुमार चामलिंग को पीछे छोड़ दिया है। पीएम मोदी इससे पहले गुजरात के चार बार सीएम रह चुके हैं, और वे ऐसे पीएम भी हैं जिनके पास मुख्यमंत्री के तौर पर काम करने का सबसे लंबा अनुभव है।

● **मोदी 4 बार गुजरात के मुख्यमंत्री, 3 बार प्रधानमंत्री बने**–मोदी गुजरात के 14वें मुख्यमंत्री बने। इसके बाद वे 2002 में, 2007 में और फिर 2012 में गुजरात के मुख्यमंत्री चुने गए। पिछले 11 साल से वे देश के प्रधानमंत्री हैं। यह तीसरा कार्यकाल है।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 20 °c
न्यूनतम 18°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ सोमवार, 23 मार्च 2026

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।
चाणक्य नीति

● 9000 बच्चों ने पकड़ी किताबें, अंदरूनी इलाकों में भी बदला नजारा

माओवाद की पाठशाला से लोकतंत्र के ककहरे की ओर बस्तर

जगदलपुर (एजेंसी)। सुबह का धुंधलका अभी पूरी तरह छंटा नहीं है। बीजापुर के घने जंगलों में महुए की गंध तैर रही है, ओस से भीगी घास पर आदिवासी महिलाओं के कदम महुआ बीनते हुए आगे बढ़ रहे हैं, तभी इस सन्नाटे को एक साफ लेकिन धीमी आवाज चीरती है- क ख ग यह किसी साधारण गांव से निकल रही आवाज नहीं है, बल्कि कभी माओवादियों की फैक्ट्री कहे जाने वाले बीजापुर के पेद्दाकोरमा की है, जहां पांच दशक तक बंदूक की गूंज ही पहचान थी। अब से कुछ माह पहले तक यहां एक झोपड़ी में माओवादी पाठशाला चलती थी,

जहां बच्चों को अक्षर नहीं, बारूद और बंदूक की भाषा सिखाई जाती थी। आज उसी जमीन पर सरकारी स्कूल की दीवारों से ककहरा की आवाज गूंज रही है।

इस बदलाव के केंद्र में हैं गांव के युवा विकेश कोड़मे जैसे 'शिक्षादूत', जिन्होंने घर-घर जाकर बच्चों को जोड़ा, भरोसा जगाया और स्कूल तक पहुंचाया। शुरुआत पेड़ों के नीचे और झोपड़ियों से हुई, अब पक्के स्कूल खड़े हो रहे हैं। इसी तरह भट्टीगुड़ा में जहां कभी माओवादियों का स्मारक डर की पहचान था, अब स्कूल की घंटी गूंजती है।

अंदरूनी इलाकों के 263 स्कूलों में फिर बजी घंटी

पेद्दाकोरमा, भट्टीगुड़ा, तुषवाल और गुण्डापुर जैसे अंदरूनी इलाकों में माओवादी हिंसा के दौर में 300 से अधिक स्कूल या तो बंद करा दिए गए या ध्वस्त कर दिए गए। 2019 में शुरू हुए स्कूल खोलो अभियान के साथ प्रशासन जब गांवों तक पहुंचा, तो सबसे बड़ी चुनौती इन्हें फिर से जीवित करना था। आज 263 स्कूल फिर से खुल चुके हैं, जहां 9,000 से ज्यादा बच्चे पढ़ाई करते हैं। साथ ही करीब 100 नए स्कूल भवन निर्माणाधीन हैं। हिंसा के बीच भी नहीं टूटा शिक्षादूतों का हौंसला जब एक ओर प्रशासन स्कूल खोलने में जुटा था, उसी समय माओवादी इन प्रयासों को कुचलने के लिए शिक्षादूतों को निशाना बना रहे थे। बीते चार-पांच वर्षों में 20 से अधिक शिक्षादूतों की हत्या की गई। जुलाई 2025 में पिल्लूर के विनोद माड़े और टेकामेटा के सुरेश मेटा को घर से उठाकर मार दिया गया। लक्ष्मण बरसे को परिवार के सामने हत्या कर दी गई।

ज्ञानवापी का श्रृंगार गौरी मंदिर एक साल बाद खुला

● 2 किमी लंबी लाइन, महिलाएं बोलीं-ज्ञानवापी मुक्त करो

वाराणसी (एजेंसी)। वाराणसी की ज्ञानवापी में मां श्रृंगार गौरी मंदिर के दर्शन के लिए रविवार को श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़ी। दर्शन के लिए 2 किलोमीटर लंबी कतार लग गई। यह मंदिर हर साल चैत्र नवरात्रि के चौथे दिन दर्शन के लिए खोला जाता है। यानी, अब यह मंदिर अगले साल खुलेगा। ज्ञानवापी की वादी चार महिलाएं भी पूजा-अर्चना के लिए पहुंचीं। इन्होंने 'ज्ञानवापी मुक्त करो' के नारे लगाए। इन महिलाओं ने ज्ञानवापी के मंदिर होने का दावा करते हुए कोर्ट में केस कर रखा है। भारी भीड़ को देखते हुए सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए थे। सुरक्षा घेरे में श्रद्धालुओं की एंट्री कराई गई। 25 मिनट की पूजा के दौरान श्रृंगार गौरी मंदिर के प्राचीन पत्थरों

को सिंदूर-चंदन लगाया गया। मंत्र पढ़कर मां की आराधना की गई। श्रद्धालु शंखनाद और डमरू की गूंज के बीच 'हर-हर महादेव' के जयकारे लगाते रहे। ऑस्ट्रेलिया की मारिया भी माता के जयकारे लगाती रहीं। 1992 के बाद नियमित पूजा पर लगी रोक 1992 तक मां श्रृंगार गौरी का नियमित दर्शन-पूजन किया जाता था। अयोध्या में बाबरी विध्वंस के बाद सुरक्षा कारणों से नियमित दर्शन पर रोक लगा दी गई। इसके बाद साल में एक दिन चैत्र नवरात्रि के चौथे दिन दर्शन के लिए मंदिर खोला जाने लगा।

संक्षिप्त समाचार

छत्तीसगढ़ के खल्लारी माता मंदिर में रोप-वे केबल टूटा

● ट्रॉली 20 फीट नीचे गिरी, चट्टान से टकराई, युवती की मौत

महासमुंद (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के महासमुंद जिले के प्रसिद्ध खल्लारी माता मंदिर में रविवार को सुबह करीब 10.30 बजे रोप-वे का केबल अचानक टूट गया। ट्रॉली में सवार 5 श्रद्धालु 20 फीट की ऊंचाई से नीचे गिरे। ट्रॉली पहाड़ी की चट्टान से टकराई। हादसे में एक युवती की मौत हो गई है। 4 गंभीर रूप से घायल हैं।

घायलों में बच्चे और बुजुर्ग भी शामिल हैं। सभी को इलाज के लिए बागबाहरा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र से जिला अस्पलात रेफर किया गया। पांचों लोग चैत्र नवरात्रि के चौथे दिन माता के दर्शन करने आए थे। दर्शन करके लौटते वक्त हादसा हुआ। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, श्रद्धालु दर्शन करके रोपवे से लौट रहे थे। केबल टूटने के बाद ट्रॉली अनियंत्रित हो गई। लगभग 20 फीट नीचे पहाड़ी की चट्टान से जा टकराई। इस जोरदार झटके के कारण ट्रॉली में बैठे लोगों को गंभीर चोटें आईं।

मुख्य चुनाव आयुक्त के खिलाफ विपक्ष के 7 आरोप

● हटाने की मांग वाले नोटिस में दावा- सरकार के इशारों पर चलते हैं

नई दिल्ली (एजेंसी)। मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार को हटाने के लिए संसद में विपक्षी सांसदों ने नोटिस दिया है। लोकसभा-राज्यसभा में लाए गए नोटिस में सीईसी पर 7 आरोप है लगाए गए हैं। यह कहा गया है कि वे सरकार के इशारे पर काम करते हैं। विपक्ष का आरोप है कि ज्ञानेश कुमार ने एसआईआर के जरिए लोगों के वोट देने के अधिकार छीन लिया। नोटिस में उनकी नियुक्ति पर भी सवाल उठाए गए हैं। 12 मार्च को संसद के दोनों सदन में जमा किए गए नोटिस

में सीईसी के खिलाफ साबित दुर्व्यवहार के आधार पर उन्हें हटाने की मांग की गई है। लोकसभा में 130 और राज्यसभा में 63 विपक्षी सांसदों ने सीईसी को हटाने के लिए एक प्रस्ताव लाने की भी मांग की है। विपक्ष के आरोपों में कुमार की सीईसी के तौर पर नियुक्ति की प्रक्रिया, 17 अगस्त 2025 को राहुल गांधी को निशाना बनाते हुए उनकी पक्षपातपूर्ण प्रेस कॉन्फ्रेंस, विपक्ष और सत्ताधारी दल के सदस्यों के साथ भेदभावपूर्ण व्यवहार, जांच में बाधा डालना, पारदर्शिता के साधन उपलब्ध कराने से इनकार करना और सत्ताधारी दल के राजनीतिक उद्देश्यों के अनुरूप विशेष गहन पुनरीक्षण प्रक्रिया को लागू करना शामिल है।

पाक में लश्कर कमांडर ढेर

● ईद की नमाज के बाद मारा गया बिलाल अहमद सलाफी

इस्लामाबाद (एजेंसी)। भारत की जमीन पर हिंसा फैलाने वाले आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा के कमांडर की पाकिस्तान में हत्या कर दी गई है। रिपोर्ट के मुताबिक, लश्कर कमांडर बिलाल आरिफ सलाफी को शनिवार को ईद की नमाज के बाद

चाकू और गोली मारकर मौत के घाट उतार दिया गया। बिलाल को मुरीदके में लश्कर के तबाह हो चुके मुख्यालय के पास मारा गया। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान भारत ने लश्कर के इस आतंकी अड्डे को निशाना बनाया था। हत्या के पीछे की वजह का पता नहीं चल पाया है लेकिन सूत्रों का शक है कि यह किसी पारिवारिक विवाद का नतीजा हो सकता है। सूत्रों ने बताया कि हत्या में शामिल लोगों को गिरफ्तार कर लिया गया है। बिलाल आतंकवादी संगठन में अहम भूमिका निभाता था।

रेत माफिया ने पुलिस जीप को ट्रैक्टर से मारी टक्कर

दिमनी में पुलिस पर हमला, आरक्षक के सिर में आई चोट, आरोपी चालक गिरफ्तार

मुरैना (नप्र)। दिमनी थाना क्षेत्र के बरेठा गांव के पास रविवार सुबह करीब 11 बजे अवैध रेत खनन पर कार्रवाई करने गई पुलिस टीम की महिंद्रा जीप को एक रेत से भरे ट्रैक्टर-ट्रॉली ने टक्कर मार दी। इस घटना में पुलिस का वाहन क्षतिग्रस्त हो गया और गाड़ी चला रहे आरक्षक सुदामा रजक के सिर में चोट आई है। पुलिस टीम ने सामने से आ रहे ट्रैक्टर को रोकने का प्रयास किया था, लेकिन चालक ने रुकने के बजाय वाहन में टक्कर मार दी।

घटना के बाद पुलिस ने घेराबंदी कर आरोपी चालक संतोष परमार को ट्रैक्टर सहित गिरफ्तार कर लिया है। घायल आरक्षक को जिला अस्पताल में प्राथमिक उपचार के बाद घर भेज दिया गया है और पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है।

रोकने का इशारा किया तो जीप में घुसा दिया ट्रैक्टर- दिमनी थाना पुलिस की टीम रविवार सुबह करीब 11 बजे अवैध रेत उत्खनन पर कार्रवाई करने गई थी। इसी दौरान पुलिस को बरेठा गांव के पास सामने से एक रेत से भरा ट्रैक्टर-ट्रॉली आता दिखाई दिया। पुलिस ने जब उसे रोकने का प्रयास किया तो ट्रैक्टर चालक संतोष परमार (निवासी मृगपुरा) ने ट्रैक्टर से पुलिस

वाहन (महिंद्रा जीप) में टक्कर मार दी।

सिर में चोट लगने से घायल हुआ आरक्षक- ट्रैक्टर की सीधी टक्कर के कारण पुलिस का वाहन क्षतिग्रस्त हो गया। इस घटना में वाहन चला रहे दिमनी थाने में पदस्थ आरक्षक सुदामा रजक के सिर में चोट लगी। घायल आरक्षक को तत्काल डायल 112 की मदद से जिला अस्पताल भेजा गया। वहां प्राथमिक इलाज के बाद आरक्षक को घर पहुंचा दिया गया है।

घेराबंदी कर पकड़ाया आरोपी, वरिष्ठ अधिकारी मौके पर रवाना- टक्कर मारने के बाद भागने की कोशिश कर रहे आरोपी चालक संतोष परमार को पुलिस टीम ने मशक्कत और घेराबंदी के बाद ट्रैक्टर-ट्रॉली सहित गिरफ्तार कर लिया। घटना की जानकारी वरिष्ठ अधिकारियों को दे दी गई है, जिसके बाद पुलिस अधिकारी मौके के लिए रवाना हो गए हैं।

एसडीओपी बोले- आरक्षक सुरक्षित है, मामला दर्ज कर लिया है

घटना को लेकर एसडीओपी मुख्यालय विजय भदौरिया ने बताया कि, रेत खनन माफिया पर कार्यवाही करने पुलिस टीम गई थी। रेत की ट्रेक्टर ट्रॉली दिखी तो उसे रोकने का इशारा किया लेकिन ट्रेक्टर चालक ने पुलिस वाहन को ही टक्कर मार दी। मामला दर्ज कर लिया है आरोपी चालक और ट्रेक्टर गिरफ्तार है। आरक्षक सुरक्षित है।

घरेलू फ्लाइट्स का किराया आज से बढ़ा सकेंगी सभी एयरलाइंस

सरकार ने रोक हटाई, इंडिगो संकट के दौरान 18 हजार तय की थी अधिकतम सीमा

नई दिल्ली (एजेंसी)। अब एयरलाइन कंपनियां घरेलू फ्लाइट्स का किराया सीटों की मांग की हिसाब से बढ़ा सकेंगी। सिविल एविएशन मिनिस्ट्री ने हवाई किराए पर लगी रोक को हटा दिया है। आदेश के मुताबिक यह फैसला कल 23 मार्च से लागू होगा। पिछले साल दिसंबर में इंडिगो की उड़ानों में आई रुकावटों के बाद फेयर कैप लगाया लगाया गया था। सरकार ने एयरलाइंस का अधिकतम किराया 18000 तय किया था। एयरलाइन इससे ज्यादा दाम नहीं ले सकती थीं। आदेश में कहा गया पूरे सेक्टर में उड़ानों की क्षमता बहाल हो गई है तथा परिचालन सामान्य हो गया है। समीक्षा के बाद, यह फैसला किया गया है कि किराए पर लगाई गई सीमा को 23 मार्च, 2026 से हटा दिया जाएगा।

मंत्रालय ने कहा- हवाई किराए पर नजर रख रहे

अपने आदेश में, मंत्रालय ने यह भी कहा कि एयरलाइंस को कीमतों के मामले में अनुशासन बनाए रखना होगा और जिम्मेदारी से काम करना होगा। मंत्रालय ने कगा कि एयरलाइंस यह सुनिश्चित करेंगी कि किराया उचित, पारदर्शी और बाजार की स्थितियों के अनुरूप हो, और यात्रियों के हितों पर कोई बुरा असर न पड़े। मंत्रालय ने कहा कि किराए में किसी भी तरह की अत्यधिक या अनुचित बढ़ोतरी को गभीरता से देखा जाएगा। मंत्रालय हवाई किराए के रुझानों पर नजर रखेगा।

मणिपुर में नजर आई 'शांति' की पहली किरण

● नए मुख्यमंत्री खेमचंद से मिले कुकी और जो नेता ● बोले-बीरेन सीएम होते तो बैठक में शामिल नहीं होते

इंफाल (एजेंसी)। मणिपुर के मुख्यमंत्री युमनाम खेमचंद सिंह ने शनिवार शाम को गुवाहाटी में चुराचंदपुर में स्थित सिविल सोसायटी ऑर्गेनाइजेशन कुकी जो काउंसिल के नेताओं के साथ मीटिंग की। मई 2023 में हिंसा भड़कने के बाद से यह पहली बार है कि राज्य के किसी मुख्यमंत्री ने इस निकाय से मुलाकात की है और बातचीत की है।

सरकार के साथ एसओओ व्यवस्था के तहत आने वाले विद्रोही समूह केंद्र सरकार के गृह मंत्रालय के प्रतिनिधियों के साथ बातचीत में लगे हुए हैं, जिसके दौरान वे एक केंद्र शासित प्रदेश के रूप में एक अलग प्रशासन की मांग कर रहे हैं। लगभग एक घंटे और 45 मिनट तक चली इस

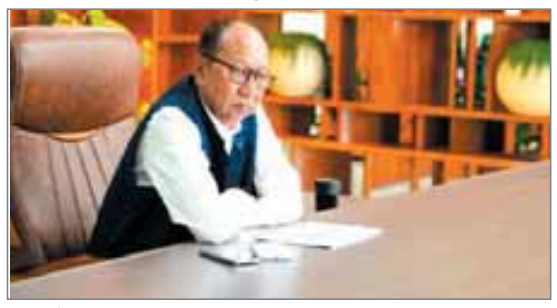

बैठक में भाग लेने वाले केजेडसी नेताओं ने इसे एक आइस ब्रेकर मीटिंग बताया और भविष्य में और ज्यादा बातचीत की संभावना का संकेत दिया।

मुख्यमंत्री के सचिव ने केजेडसी के अध्यक्ष को लिखा था पत्र

इस हफ्ते की शुरुआत में मुख्यमंत्री के सचिव ने केजेडसी के अध्यक्ष हेनलियानथांग थांगलेट को पत्र लिखकर गुवाहाटी में उनसे और केजेडसी के अन्य सदस्यों से मणिपुर में शांति और सामान्य स्थिति बहाल करने से संबंधित मामलों पर चर्चा करने के लिए एक बैठक का अनुरोध किया। थांगलेट ने कहा, अगर बीरेन सिंह मुख्यमंत्री होते तो हम बैठक में शामिल नहीं होते। नई सरकार बनने के कारण हम आए। राज्य में एक साल के राष्ट्रपति शासन के बाद फरवरी में नई सरकार बनने पर केजेडसी ने कुकी-जोमी-हमार समुदाय के उन विधायकों का सामाजिक बहिष्कार घोषित किया था जिन्होंने नई सरकार में शामिल होने का फैसला किया था। शनिवार की बैठक के बाद थांगलेट ने कहा, बैठक में कोई प्रस्ताव या समझौता नहीं हुआ। हमने अपनी मांगों पर चर्चा की और शायद उन पर चर्चा के लिए और बैठकें होंगी। एक बयान में, केजेडसी ने कहा कि बैठक में उठाए गए मुद्दों में उखरुल जिले में कुकी और तांगखुल समुदायों के बीच तनाव कम करने की आवश्यकता शामिल थी, जहां पिछले महीने से हिंसा जारी है। साथ ही राजनीतिक समाधान होने तक बफर जोन की पवित्रता बनाए रखना भी शामिल था।

बिहार दिवस 2026

पीएम मोदी और अमित शाह ने किया जमकर बखान

● चाणक्य-चंद्रगुप्त का किया जिक्र, नीतिश बोले-आभार

पटना (एजेंसी)। बिहार के मुख्यमंत्री नीतिश कुमार ने बिहार दिवस पर संदेश के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का आभार व्यक्त किया है। सीएम नीतीश ने कहा कि यह हमारे लिए गर्व का विषय है कि आपने बिहार की समृद्ध विरासत,

संस्कृति और प्रगति के प्रयासों की सराहना की है। मुख्यमंत्री नीतिश कुमार ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट किया, हम राज्य के सर्वांगीण विकास, सामाजिक न्याय, सुशासन और आधारभूत संरचना के सुदृढ़ीकरण के लिए निरंतर प्रतिबद्ध हैं। केंद्र सरकार का पूरा सहयोग प्राप्त हो रहा है। अब बिहार और अधिक विकसित होगा।

पीएम मोदी ने किया बिहार का बखान

उन्होंने कहा कि बिहार की धरती ने प्राचीन काल से ही ज्ञान, आध्यात्मिकता और नैतिक मूल्यों के माध्यम से समाज को समृद्ध किया है। इस धरा पर दिए गए भगवान बुद्ध के विचार आज भी वैश्विक चेतना का हिस्सा हैं और मानवता को मार्ग दिखा रहे हैं। इस भूमि ने आचार्य चाणक्य जैसे महान कूटनीतिज्ञ का प्रभाव देखा, जिन्होंने सम्राट चंद्रगुप्त मौर्य के साथ मिलकर एक सशक्त और संगठित भारत की नींव रखी। ये विरासत आज भी भारत की सोच और दिशा को प्रेरित करती है। सीएम नीतिश ने अपने पत्र में लिखा, बिहारवासियों ने देश और दुनियाभर में अपनी मेहनत, ईमानदारी और प्रतिभा से एक अलग पहचान बनाई है।

ईंधन संकट के बीच मोदी सरकार का मास्टरस्ट्रोक

● रेस्तरां, ढाबों और कैंटीन के लिए बढ़ाया गैस आवंटन

नई दिल्ली (एजेंसी)। सरकार ने राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को कमर्शियल एलपीजी का आवंटन 20 प्रतिशत बढ़ा दिया है। इससे कुल आवंटन 50 प्रतिशत हो गया है। आवंटन बढ़ाए जाने का सीधा लाभ रेस्तरां, ढाबों और कैंटीन जैसे वाणिज्यिक प्रतिष्ठानों को मिलेगा। घरेलू उत्पादन में वृद्धि के कारण स्थिति सामान्य होने की ओर बढ़ रही है। पश्चिम एशिया में युद्ध के कारण भारत

की ऊर्जा आपूर्ति बाधित हुई। इसके चलते शुरुआत में होटल और रेस्तरां जैसे वाणिज्यिक प्रतिष्ठानों को एलपीजी की आपूर्ति में कटौती की गई, ताकि घरेलू रसोई में आपूर्ति को प्राथमिकता दी जा सके। बाद में, 20 प्रतिशत आपूर्ति बहाल कर दी गई। कुछ दिनों बाद सरकार ने पाइपलाइन गैस (पीएनजी) परियोजनाओं में तेजी लाने की शर्त पर राज्यों को अतिरिक्त 10 प्रतिशत आवंटन की पेशकश की।

ममता बनर्जी के गढ़ में रोड शो करेंगे पीएम मोदी

● पश्चिम बंगाल के लिए बीजेपी ने बनाया तगड़ा प्लान

कोलकाता (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल में चुनावों की घोषणा के बाद से लगातार राज्य का सियासी पारा चढ़ता ही जा रहा है। राज्य में अपनी पार्टी बीजेपी के पक्ष में माहौल बनाने के लिए पीएम नरेंद्र मोदी 10 से 12 रैलियां और रोड शो करेंगे। बीजेपी के शीर्ष सूत्र ने बताया कि पीएम नरेंद्र मोदी पूरे राज्य में बड़े पैमाने पर रैलियां और रोड शो करेंगे।

रामनवमी के बाद बीजेपी का कैंपेन और तेज होने वाला है। एक अन्य नेता ने बताया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने बंगाल में ज्यादा से ज्यादा रैलियां करने पर सहमति जताई है। उन्होंने कहा कि पीएम

नरेंद्र मोदी कोलकाता में भी रोड शो करेंगे और यह रोड शो भवानीपुर विधानसभा सीट भी कवर करेगा, जहां से सुवेंदु अधिकारी चुनाव लड़ रहे हैं। भवानीपुर विधानसभा सीट ममता का गढ़ है।

रैली भवानीपुर में शुरू होगी या खत्म अभी तय नहीं

हालांकि बीजेपी सूत्र ने यह भी कहा कि पीएम मोदी के रोड शो के लिए न तो अभी तक तारीख तय हुई है और न ही यह तय हुआ है कि रैली भवानीपुर में शुरू होगी या खत्म होगी। पीएम नरेंद्र मोदी के अलावा पश्चिम बंगाल में बीजेपी के कई सीनियर नेता प्रचार करते नजर आएंगे। इनमें गृह मंत्री अमित शाह, बीजेपी अध्यक्ष नितिन नवीन, पूर्व बीजेपी अध्यक्ष जेपी नड्डा, यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ शामिल हैं। अमित शाह पश्चिम बंगाल में 12 से 14 कार्यक्रमों में हिस्सा ले सकते हैं। बीजेपी अध्यक्ष नितिन नवीन, पूर्व बीजेपी अध्यक्ष जेपी नड्डा भी पश्चिम बंगाल में कई रैलियां करेंगे। पार्टी सूत्रों ने बताया कि नितिन नवीन 24 और 25 मार्च को कोलकाता में रहेंगे।

ओबीसी और अल्पसंख्यक युवाओं को मिलेगी क्लेट की फ्री कोचिंग

इंदौर-भोपाल सहित 4 शहरों में खुलेंगे सेंटर, सौ सीटें हर शहर में होंगी

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश के पिछड़ा वर्ग और अल्पसंख्यक वर्ग के होनहार युवाओं के लिए कानून के क्षेत्र में करियर बनाने का सुनहरा मौका है। राज्य सरकार की सरदार पटेल कोचिंग एवं प्रशिक्षण योजना 2021 (संशोधित 2025) के तहत अब छात्रों को नेशनल लॉ यूनिवर्सिटीज में एडमिशन के लिए होने वाली क्लेट(कॉमन लॉ एडमिशन टेस्ट) की तैयारी मुफ्त कराई जाएगी।

पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण विभाग के अंतर्गत संचालित राज्य स्तरीय रोजगार एवं प्रशिक्षण केंद्र ने इसके लिए टेंडर जारी कर दिए हैं। इस पूरी परियोजना के लिए सरकार ने 17.25 करोड़ रुपये का बजट रखा है।

विभाग ने कोचिंग संस्थाओं से टेंडर बुलाए हैं। 1 अप्रैल तक टेंडर जमा होंगे। वहीं 10 अप्रैल को टेक्निकल बिड ओपन की जाएगी। संस्थानों का चयन क्यूसीबीएस (क्वालिटी कॉस्ट बेस्ड सिलेक्शन) पद्धति से होगा। यानी जिस संस्थान की पढ़ाई की क्वालिटी और ट्रैक रिकॉर्ड बेहतर होगा, उसे प्राथमिकता मिलेगी।

छात्रों को क्या मिलेगा? डिजिटल सपोर्ट और अनुभवी फैकल्टी- चयनित कोचिंग संस्थानों को केवल क्लासरूम टीचिंग ही नहीं, बल्कि छात्रों को ऑनलाइन पोर्टल और मोबाइल ऐप के जरिए स्टडी मटेरियल भी देना होगा। इसके अलावा डाउट क्लियरिंग सेशन भी आयोजित किए जाएंगे। प्रत्येक सेंटर पर अंग्रेजी, लीगल रीजनिंग और करंट अफेयर्स के लिए कम से कम 2 फुल-टाइम एक्सपर्ट टीचर रखना अनिवार्य होगा।

इन 4 शहरों में होगी पढ़ाई, हर सेंटर पर 100 सीटें

सरकार ने प्रदेश के चार बड़े संभाग मुख्यालयों भोपाल, इंदौर, ग्वालियर और जबलपुर को कोचिंग सेंटर के लिए चुना है। हर सेंटर पर सौ-सौ सीटें होंगी। चारों शहरों में कुल 400 सीटें होंगी। इनमें से पिछड़ा वर्ग के लिए 352 और अल्पसंख्यक वर्ग के लिए 48 सीटें आरक्षित होंगी। ओबीसी वर्ग के लिए 15 करोड़ और अल्पसंख्यक वर्ग के लिए 2.25 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं।

कोचिंग संस्थानों के लिए कड़े नियम : 5 साल का अनुभव और 5 करोड़ का टर्नओवर जरूरी

सरकार ने कोचिंग की गुणवत्ता से कोई समझौता न करने का फैसला लिया है। टेंडर में शामिल होने वाले संस्थानों के लिए शर्तें तय की गई हैं। इन शर्तों में संस्थान का कम से कम 5 साल पुराना रजिस्ट्रेशन होना चाहिए। पिछले 3 साल का कुल टर्नओवर 5 करोड़ रुपये होना जरूरी है।

हर साल कम से कम 500 छात्रों को पढ़ाने का अनुभव हो। सेंटर पर 5000 वर्ग फीट की जगह, सीसीटीवी और आधुनिक लाइब्रेरी जैसी सुविधाएं जरूरी हैं।

अब भोपाल एम्स करेगा फेफड़ों का ट्रांसप्लांट

एंड स्टेज लंग डिजीज के मरीजों को मिलेगा नया जीवन ; मुंबई और देशभर के एक्सपर्ट्स देंगे गाइडेंस

भोपाल (नप्र)। एम्स भोपाल अब लंग ट्रांसप्लांट सुविधा शुरू करने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। संस्थान में इसको लेकर एक विशेष अकादमिक कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है, जिसमें मुंबई से आने वाली विशेषज्ञ टीम डॉक्टरों को मार्गदर्शन देगी।

कार्यक्रम में सर्जरी, एनेस्थीसिया, पल्मोनोलॉजी और क्रिटिकल केयर से जुड़े विशेषज्ञ शामिल होंगे। एम्स में पहले ही 18 किडनी और 3 हार्ट ट्रांसप्लांट हो चुके हैं। लंग ट्रांसप्लांट शुरू होने से गंभीर फेफड़ों के मरीजों को प्रदेश में ही इलाज मिलेगा और बड़े शहरों पर निर्भरता कम होगी।

इसके लिए 28 मार्च 2026 को संस्थान में लंग ट्रांसप्लांट- द रोड अहेड विषय पर सिम्पोजियम आयोजित किया जाएगा। इस कार्यक्रम में मुंबई और देश के अन्य प्रमुख संस्थानों से आए विशेषज्ञ डॉक्टर एम्स की टीम को प्रशिक्षण और मार्गदर्शन देंगे। इसका उद्देश्य डॉक्टरों को लंग ट्रांसप्लांट की सर्जिकल तकनीक, मरीज चयन, ऑपरेशन के दौरान सावधानियां और बाद की देखभाल के बारे में प्रशिक्षित करना है।

मुंबई और देशभर के एक्सपर्ट्स देंगे गाइडेंस

कार्यक्रम में देश के प्रतिष्ठित संस्थानों से विशेषज्ञ शामिल होंगे। इनमें प्रमुख रूप से डॉ. ज्ञानेश ठक्कर (कार्डियोथोरेसिक सर्जरी, ग्लोबल हॉस्पिटल), डॉ. शारन्या कुमार (एनेस्थीसिया एवं क्रिटिकल केयर), डॉ. शारदा नगोटी (पैथोलॉजी, ट्रांसप्लांट पैथ) और डॉ. अपार जिंदल (लंग ट्रांसप्लांट विशेषज्ञ, मैक्स अस्पताल) लंग ट्रांसप्लांट की जटिलताओं और आधुनिक तकनीकों पर अपने अनुभव साझा करेंगे।

एम्स भोपाल के यह डॉक्टर रहेंगे शामिल

डॉ. अलकेश खुराना (आयोजक, पल्मोनरी मेडिसिन)
डॉ. योगेश निवाड़िया (सीटीवीएस विभाग)
डॉ. अभिनव चौबे
डॉ. निशांत श्रीवास्तव
डॉ. एस. आर. ए. एन. भूषण
डॉ. लोकेन्द्र दवे
डॉ. वैशाली वाल्के
डॉ. अश्विनी मल्होत्रा

लंग ट्रांसप्लांट इन मरीजों के लिए जरूरी

लंग ट्रांसप्लांट एक जटिल सर्जरी है, जिसमें खराब हो चुके फेफड़ों को हटाकर डोनर के स्वस्थ फेफड़े लगाए जाते हैं। यह प्रक्रिया उन मरीजों के लिए की जाती है, जिन्हें एंड स्टेज लंग डिजीज, पल्मोनरी फाइब्रोसिस, सीओपीडी और गंभीर फेफड़ों का संक्रमण जैसी समस्याएं होती हैं और अन्य उपचार काम नहीं करते।

लंग ट्रांसप्लांट से जुड़े अहम फैक्ट्स

यह सर्जरी 6 से 12 घंटे तक चल सकती है

मरीज को लंबे समय तक आईसीयू में निगरानी की जरूरत होती है

जीवनभर इम्यूनोसप्रेसिव दवाएं लेनी पड़ती हैं

सही समय पर ट्रांसप्लांट से जीवन बच सकता है

भारत में यह सुविधा अभी सीमित केंद्रों पर ही उपलब्ध है

लंग ट्रांसप्लांट के लिए शुरू हुई तैयारियां

एम्स भोपाल में लंग ट्रांसप्लांट जैसी जटिल चिकित्सा सुविधा शुरू करने के लिए इंफ्रास्ट्रक्चर, उपकरण और विशेषज्ञ टीम को तैयार किया जा रहा है। संस्थान में इस विषय पर एक विशेष वैज्ञानिक कार्यक्रम भी 28 मार्च को आयोजित किया जा रहा है। जिसमें लंग ट्रांसप्लांट की पूरी प्रक्रिया, चुनौतियां और प्रबंधन पर विस्तार से चर्चा होगी।

डॉक्टरों की ट्रेनिंग पूरी, अब अगला कदम

एम्स भोपाल के डॉक्टरों ने लंग ट्रांसप्लांट से जुड़ी आवश्यक ट्रेनिंग पूरी कर ली है। इसके लिए टीम ने चेन्नई में हार्ट और लंग्स ट्रांसप्लांट की विशेष तकनीकी प्रशिक्षण लिया। यह ट्रेनिंग सफल ट्रांसप्लांट के लिए अनिवार्य मानी जाती है।

अब संस्थान अंतिम चरण की तैयारियों में जुटा है, जिसमें सर्जिकल सेटअप, आईसीयू सपोर्ट और पोस्ट-ट्रांसप्लांट केयर को मजबूत किया जा रहा है। विशेषज्ञों का कहना है कि यह प्रक्रिया टीमवर्क पर आधारित होती है, जिसमें सर्जन, एनेस्थीसिया विशेषज्ञ, पल्मोनोलॉजिस्ट और अन्य विभागों की अहम भूमिका होती है।

एम्स में मौजूद है जरूरी इंफ्रास्ट्रक्चर- लंग्स ट्रांसप्लांट के लिए एक्मो मशीन, हार्ट-लंग्स मशीन और आइएडीपी मशीन का उपयोग किया जाएगा। ये मशीनें मरीज को सर्जरी से पहले और दौरान स्थिर रखने में मदद करती हैं।

गोमांस, लोकायुक्त-नई बिल्डिंग पर 'शहर सरकार' को घेरेगा विपक्ष

3500 करोड़ का होगा भोपाल निगम का बजट ; टैक्स बढ़ाने की संभावना कम

भोपाल (नप्र)। भोपाल नगर निगम परिषद की मीटिंग 23 मार्च को होगी। इसमें 'शहर सरकार' बजट भी पेश करेगी। सूत्रों की माने तो अबकी बार बजट 3500 करोड़ रुपए का होगा। वहीं, मंत्री-विधायकों की आपत्ति के बाद प्रॉपर्टी या जल कर बढ़ाने की संभावना कम ही है। पिछली बार कुल 3611 करोड़ रुपए का बजट पेश किया गया था।

बजट मीटिंग में गोमांस, नई बिल्डिंग और लोकायुक्त की हाल ही हुई कार्रवाई का मुद्दा भी उठेगा। निगम के स्लॉटर हाउस में 26 टन गोमांस मिलने के मामले में पिछली बैठक में भी कांग्रेस ने जमकर हंगामा किया था। वहीं, लिंक रोड नंबर-2 पर 40 करोड़ रुपए से बनी नई बिल्डिंग की अधूरी तैयारियों के बीच शुरुआत होने, बिल्डिंग से गिरकर एक बुजुर्ग की मौत होने का मामला भी गरमाएगा।

पार्किंग का मुद्दा भी आएगा

बैठक में 14 नई पार्किंग को लेकर प्रस्ताव आएगा। इनमें से 5 पार्किंग मेट्रो स्टेशन के नीचे प्रस्तावित की गई है। जहां 40 फोर व्हीलर और 250 टू व्हीलर्स खड़े किए जा सकेंगे। 16 मार्च को हुई मेयर इन कौंसिल की बैठक में इस प्रस्ताव को मंजूरी दे दी गई थी। अब परिषद में यह प्रस्ताव आएगा। पार्किंग को लेकर निगम ने पुलिस की भी सहमति ली है।

खजुरी जोड़ पर निर्माणाधीन ब्रिज के पिलर से टकराई कार

टूर्स एंड ट्रेवल्स कंपनी संचालक की मौत, दोस्त गंभीर जख्मी

भोपाल (नप्र)। भोपाल-इंदौर हाईवे पर खजुरी जोड़ में रविवार तड़के सुबह आई20 कार एक निर्माण अधीन ब्रिज के पिलर से जा टकराई। हादसे में कार चालक की मौके पर ही मौत हो गई जबकि उसके साथी की हालत नाजुक बताई जा रही है।

मृतक एक टूर्स एंड ट्रेवल्स कंपनी का संचालन करता थे। जानकारी के मुताबिक वह फूफा के निधन की सूचना के बाद दोस्त के साथ कार में सवार होकर इंदौर जाने के लिए निकला थे। भोपाल की खजूरी सड़क थाना पुलिस ने मामले में मर्ग कायम कर जहां शुरू कर दी है। रविवार दोपहर पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों के हवाले कर दिया गया है।

साथी दोस्त की हालत गंभीर- पुलिस के मुताबकि गौरव सिंह (30) पिता स्वर्गीय शिवराज सिंह बड़ा कॉलोनी अवधपुरी के रहने

वाले थे और टूर्स एंड ट्रेवल्स एजेंसी का संचालन करते थे। रविवार तड़के सुबह 3:00 बजे फूफा के निधन की सूचना के बाद इंदौर के लिए रवाना हुए थे। उनके साथ दोस्त लकी भी उनकी कर में मौजूद था। तड़के करीब 3:45 बजे गौरव की कर भौरी जोड़ के करीब एक निर्माण अधीन ब्रिज के पिलर से जा टकराई। इससे गौरव की मौके पर ही मौत हो गई जबकि लकी की हालत गंभीर है और हमीदिया अस्पताल में उनका इलाज जारी है।

4 साल पहले की थी शादी- गौरव की 4 साल पहले लव-अरेंज मैरिज हुई थी। हालांकि उनकी फिलहाल कोई संतान नहीं है। गौरव ने अपने दम पर टूर्स एंड ट्रेवल्स के कारोबार को बढ़ाया। वहीं गौरव की मौत के बाद पुलिस ने मामले में मर्ग कायम कर जांच शुरू कर दी है। हादसे की सभी एंगल पर जांच की जा रही है।

वन वे रोड पर क्रॉसिंग के दौरान हुआ हादसा

मृतक के रिश्तेदार शिवराज सिंह ने बताया कि निर्माण कार्य के चलते भोपाल-इंदौर रोड भौरी जोड़ पर सड़क को वनवे किया गया है। उन्हें लोगों ने बताया कि गौरव सामने से आ रही तेज रफ्तार कार को क्रॉसिंग देने के प्रयास में पिलर से जा टकराए। राहगीरों ने तत्काल 108 एंबुलेंस पर कॉल किया। इस बीच पुलिस भी मौके पर पहुंच गई। दोनों घायलों को कार से निकालकर अस्पताल पहुंचाया। जहां गौरव को चेक करने के बाद डॉक्टर ने मृत्य घोषित कर दिया जबकि लकी का इलाज जारी है।

प्रदेश के 45 जिलों में बारिश 17 में ओले भी गिरे

स्ट्रॉन्ग सिस्टम से फसलें तबाह, मुआवजे की मांग ; अगले 4 दिन तेज गर्मी पड़ेगी

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश में पिछले 98 घंटे यानी, 4 दिन से एक्टिव स्ट्रॉन्ग सिस्टम से कुल 45 जिलों में आंधी-बारिश का दौर रहा। इनमें से 17 जिलों में ओले भी गिरे। यह सिस्टम अब आगे बढ़ गया है। ऐसे में बारिश की बजाय तेज गर्मी का अलर्ट है। अगले 4 दिन कहीं भी आंधी-बारिश का अलर्ट नहीं है। आखिरी सप्ताह में वेस्टर्न डिस्टरबेंस (पश्चिमी विक्षोभ) की वजह से मौसम फिर से बदल सकता है।

मौसम विभाग के अनुसार, 26 मार्च से नया वेस्टर्न डिस्टरबेंस एक्टिव हो रहा है। इस वजह से उत्तरी व पश्चिमी हिस्से में बूंदाबांदी या बादल छा सकते हैं। इससे पहले शनिवार को कुछ जिलों में मौसम बदला रहा। भोपाल में बादल छाए रहे। इस वजह से दिन के तापमान में भी गिरावट दर्ज की गई है।

सबसे कम पचमढ़ी में 25.6 डिग्री रहा। रीवा-दतिया में 28.2 डिग्री, नौगांव-सतना में 28.3 डिग्री, सिवनी में 28.4 डिग्री, टीकमगढ़-सीधी में 28.6 डिग्री, दमोह-उमरिया में 29 डिग्री, श्योपुर में 29.4 डिग्री, मंडला और खजुराहो में पारा 29.5 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया। पांच बड़े शहरों की बात करें तो भोपाल में 29.4 डिग्री, जबलपुर में 29.5 डिग्री, इंदौर में 30.6 डिग्री, ग्वालियर में 28.4 डिग्री और उज्जैन में 31.5 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।

कई जिलों में फसलों को नुकसान- तेज आंधी की वजह से केला, पपीता और गेहूं की फसलों पर असर पड़ा। ऐसे में अब किसान मुआवजे की मांग उठा रहे हैं। धार, खरगोन समेत कई जिलों में ज्यादा असर रहा।

इन जिलों में बारिश का दौर- मौसम विभाग के अनुसार, पिछले 4 दिन में इंदौर, धार, खरगोन, बड़वानी, अलीराजपुर, झाबुआ, बुरहानपुर, खंडवा, भोपाल, राजगढ़, विदिशा, रायसेन, सीहोर, नर्मदापुरम, हरदा, बैतूल, ग्वालियर, मऊगंज, श्योपुर, मुरैना, दतिया, अशोकनगर, रतलाम, उज्जैन, आगर-मालवा, शाजापुर, देवास, सागर, दमोह, पन्ना, छतरपुर, कटनी, उमरिया, मैहर, सतना, अनूपपुर, जबलपुर, नरसिंहपुर, छिंदवाड़ा, सिवनी, पांढुर्णा, मंडला समेत 45 जिलों में आंधी-बारिश का दौर रहा। वहीं, अलीराजपुर, बड़वानी, विदिशा बैतूल, झाबुआ, खंडवा, आगर-मालवा, छिंदवाड़ा, जबलपुर, सिवनी, छतरपुर, शिवपुरी, रायसेन, सागर, दमोह, पन्ना, मंडला जिलों में ओले गिरे हैं।

खरगोन में पिता ने नाबालिग बेटी से किया दुष्कर्म

पत्नी से विवाद के बाद की गंदी हरकत, आरोपी फरार

खरगोन (नप्र)। मध्य प्रदेश के खरगोन जिले में मासूम बच्ची से रेप का मामला सामने आया है। पत्नी से विवाद के बाद पिता ने ही अपनी 12 साल की बेटी के साथ रेप किया है। पीड़िता ने मां के साथ थाने पहुंचकर शिकायत दर्ज कराई है। घटना के बाद से आरोपी फरार है। पुलिस ने मामला दर्ज कर आरोपी की तलाश शुरू कर दी है।

चैनपुर थाना क्षेत्र की घटना- घटना चैनपुर थाना क्षेत्र की है। यहां नाबालिग के साथ दुष्कर्म के मामले में उसके पिता के खिलाफ प्रकरण दर्ज किया गया है। प्रकरण दर्ज होने के बाद से आरोपी पिता फरार है। पुलिस के अनुसार 12 साल की नाबालिग और उसकी मां ने रेप का मामला दर्ज कराया है। पिता के खिलाफ दुष्कर्म और पोक्सो एक्ट के तहत प्रकरण दर्ज किया गया है। पुलिस की एक टीम को आरोपी की तलाश में भेजा गया है।

पत्नी से हुआ था आरोपी का विवाद- पीड़िता ने शिकायत के अनुसार, उसके मां बाप एक हफ्ते पहले ही मजदूरी कर अपने क्षेत्र में लौटे थे। 17 मार्च को आरोपी अपने ससुराल में था और उसका पत्नी से किसी बात को लेकर विवाद हो गया था। विवाद के बाद वह अपनी दोनों बेटियों और बेटों को लेकर अपने गांव जाने के लिए निकल गया। गांव पहुंचने से पहले उसने बच्चों को एक अनाज गोदाम में सुला दिया और वहीं रुक गया। थाना प्रभारी चैनपुर ने पीड़िता और उसकी मां की शिकायत पर रेप का मामला दर्ज कर लिया गया है। आरोपी की तलाश की जा रही है।

मां को दी जान से मारने की धमकी- घटना के बाद पीड़ित बच्ची ने अपनी मां को मामले की जानकारी दी। जिसके बाद पत्नी ने पति की खोजबीन की। आरोपी जब घर पहुंचा तो पत्नी ने मामले में आपत्ति जताई जिसके बाद आरोपी ने उसे जान से मारने की धमकी दी और मौके से फरार है गया। जिसके बाद शनिवार को मां पीड़िता को लेकर थाने पहुंची और केस दर्ज कराया।

बड़ी बेटी के साथ किया दुष्कर्म

आरोपी ने तीनों बच्चों को वही सोने का कहा लेकिन लड़की को अपनी मां के साथ सोने की आदत थी। इसलिए उसे नींद नहीं आ रही थी। इसी बीच आरोपी ने उसके साथ दुष्कर्म किया और अगले दिन वहां से चल गया।

भोपाल-इटारसी होकर गुजरेंगी, सीएसएमटी -गोरखपुर व एलटीटी-बनारस ट्रेनें

यात्रियों की बढ़ती मांग को देखते हुए रेलवे का फैसला, अप्रैल से अलग-अलग तारीखों में संचालन

भोपाल (नप्र)। गर्मी के सीजन में यात्रियों की बढ़ती भीड़ को देखते हुए रेलवे ने विशेष ट्रेनों का संचालन करने का निर्णय लिया है। पश्चिम मध्य रेलवे के तहत आने वाले इटारसी, भोपाल और बीना स्टेशन इन ट्रेनों के प्रमुख ठहराव रहेंगे, जिससे मध्यप्रदेश के यात्रियों को सीधा लाभ मिलेगा।

भोपाल में रहेगा हॉल्ट- रेलवे के अनुसार, सीएसएमटी-गोरखपुर स्पेशल ट्रेन 01079/01080 का संचालन अप्रैल में अलग-अलग चरणों में किया जाएगा। यह ट्रेन छत्रपति शिवाजी महाराज टर्मिनस से रात 10:30 बजे रवाना होकर दूसरे दिन दोपहर इटारसी, शाम भोपाल और फिर बीना होते हुए

तीसरे दिन सुबह गोरखपुर पहुंचेगी। वापसी में गोरखपुर से दोपहर में चलकर अगले दिन सुबह बीना, भोपाल और इटारसी पहुंचते हुए तीसरे दिन मुंबई पहुंचेगी।

हफ्ते में तीन दिन चलेगी- इसी तरह एलटीटी-बनारस स्पेशल ट्रेन 01073/01074 भी अप्रैल में सप्ताह में तीन दिन चलाई जाएगी। यह ट्रेन लोकमान्य तिलक टर्मिनस से दोपहर में रवाना होकर रात में इटारसी, फिर रानी कमलापति और बीना होते हुए अगले दिन बनारस पहुंचेगी।

वापसी में बनारस से सुबह चलकर तय स्टेशनों से गुजरते हुए मुंबई पहुंचेगी। रेलवे अधिकारियों का कहना है कि इन ट्रेनों के संचालन से गर्मी की छुट्टियों में यात्रियों को कंफर्म सीट मिलने में राहत मिलेगी। यात्रियों से अपील की गई है कि वे समय-सारणी और ठहराव की विस्तृत जानकारी के लिए एनटीईएस, रेलवे हेल्पलाइन 139 या आधिकारिक वेबसाइट का उपयोग करें।

जल है तो कल है, जल ही जीवन है : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

मुख्यमंत्री ने दी विश्व जल दिवस की शुभकामनाएं

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रदेशवासियों को विश्व जल दिवस की शुभकामनाएं दी हैं। उन्होंने कहा है कि जल है तो ही सुरक्षित हमारा आने वाला कल है। जल ही जीवन है, यह सूत्र हम सबको आत्मसात करना ही होगा। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि जल प्रकृति द्वारा प्रदत्त अमूल्य उपहार और समस्त जीव-जगत के अस्तित्व का आधार है। हमें जल की एक-एक बूंद का महत्व समझते हुए इसे बचाना है। आइए, हम सब संकल्प लें कि जल संरक्षण के प्रयासों में सदैव सहभागी बनेंगे।

मुख्यमंत्री ने बिहार के स्थापना दिवस पर दीं शुभकामनाएं

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने बिहार प्रदेशवासियों को राज्य के स्थापना दिवस की बधाई और शुभकामनाएं दीं हैं।मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा है कि नालंदा और विक्रमशिला की ज्ञान परम्परा, भगवान बुद्ध की करुणा, भगवान महावीर की अहिंसा और लोकजीवन की सादगी से समृद्ध धरा बिहार, आज प्रतिभा और परिश्रम के बल पर विकास की नई ऊंचाइयों को स्पर्श कर रहा है।

राज्य की जीएसडीपी पहुंचेगी 18.48 लाख करोड़ रुपये

प्रदेश का 4.38 लाख करोड़ का बजट बढ़ाएगा आर्थिक विकास की गति

भोपाल (नप्र)। मध्यप्रदेश में मोहन सरकार के अथक प्रयासों से राज्य की अर्थव्यवस्था 2026-27 में 18.48 लाख करोड़ रुपये तक पहुँच जायेगी। राज्य के बजट प्रावधानों को देखते हुए उल्लेखनीय वृद्धि का अनुमान लगाया गया है। वर्ष 2025-26 में जीएसडीपी 16.48 लाख करोड़ रुपये रही जो अब बढ़ रही है। राज्य की अर्थव्यवस्था तेज़ी से बढ़ रही है।

सरकार ने वित्तीय वर्ष 2026-27 के लिए 4 लाख 38 हजार 317 करोड़ रुपये के बजट में विकास, सामाजिक सुरक्षा और अधोसंरचना विस्तार को केंद्र में रखा है। सरकार के प्रयासों से स्पष्ट है कि वित्तीय वर्ष के अंत में 44 करोड़ रुपये का राजस्व आधिक्य रहेगा।

बजट में अधोसंरचना और विकास परियोजनाओं को गति देने के लिए 80 हजार 266 करोड़ रुपये का पूंजीगत व्यय प्रस्तावित किया गया है। यह राज्य के जीएसडीपी का 4.80 प्रतिशत है। इससे प्रदेश में औद्योगिक गतिविधियों, शहरी अधोसंरचना और ग्रामीण विकास परियोजनाओं को नई गति मिलेगी।

विकास योजनाओं को गति देने के लिए कई प्रमुख विभागों के आवंटन में उल्लेखनीय वृद्धि की गई है। ग्रामीण विकास विभाग के बजट में 37 प्रतिशत, नगरीय विकास एवं आवास विभाग में 16 प्रतिशत, महिला एवं बाल विकास विभाग में 26 प्रतिशत, राजस्व विभाग में 43 प्रतिशत और स्कूल शिक्षा विभाग में 11 प्रतिशत की वृद्धि होगी। आगामी वर्ष में ग्रामीण आधारभूत संरचना, शहरी सुविधाओं और सामाजिक क्षेत्र को मजबूत बनाया जाएगा।

किसान समृद्धि- कृषि और किसानों के कल्याण को विशेष प्राथमिकता दी गई है। कृषि एवं संबद्ध क्षेत्रों के लिए 88 हजार 910 करोड़ रुपये का बजट प्रावधान किया गया है। गैर-बजटीय संसाधनों को सम्मिलित करने पर इस क्षेत्र के लिए कुल लगभग 1 लाख 15 हजार करोड़ रुपये उपलब्ध होंगे। किसानों की आय बढ़ाने और कृषि गतिविधियों को आधुनिक बनाने में यह पहल मील का पत्थर साबित होगी ।

महिला सशक्तिकरण की दिशा में राज्य सरकार की प्रमुख योजना लाड़ली बहना योजना के लिए इस बजट में लगभग 23 हजार 800 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। इसके अलावा वीबीजी राम जी योजना के लिए लगभग 10 हजार 400 करोड़ रुपये, मुख्यमंत्री किसान कल्याण योजना के लिए लगभग 5 हजार 500 करोड़ रुपये तथा राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के लिए लगभग 4 हजार 600 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है। आगामी सिंहस्थ आयोजन की तैयारियों के लिए भी लगभग 3 हजार करोड़ रुपये की राशि प्रस्तावित है।

स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ बनाने के लिए इस वर्ष 23 हजार 747 करोड़ रुपये का बजट रखा गया है। वहीं सामाजिक और आर्थिक उत्थान से जुड़ी योजनाओं के लिए 1 लाख 83 हजार 708 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है, जिसमें अनुसूचित जनजाति वर्ग के लिए 26 प्रतिशत और अनुसूचित जाति वर्ग के लिए 17 प्रतिशत राशि निर्धारित है।

बजट में नई दीर्घकालिक योजनाओं की भी घोषणा की गई है। द्वारका योजना के तहत अगले तीन वर्षों में 5 हजार करोड़ रुपये का निवेश प्रस्तावित है। स्वामित्व योजना के लिए 3 हजार 800 करोड़ रुपये तथा यशोदा दुग्ध प्रदाय योजना के लिए 700 करोड़ रुपये का प्रावधान किया गया है, जिनसे ग्रामीण अर्थव्यवस्था और पशुपालन गतिविधियों को बल मिलेगा।

राज्य की राजकोषीय स्थिति के अनुसार कुल राजस्व प्राप्तियां 3 लाख 8 हजार 703 करोड़ रुपये अनुमानित हैं, जबकि पूंजीगत प्राप्तियां 80 हजार 694 करोड़ रुपये रहने का अनुमान है।

वर्ष 2026-27 में अधोसंरचना विकास, कृषि सशक्तिकरण, महिला कल्याण और सामाजिक सुरक्षा योजनाओं को गति देने के साथ राज्य की आर्थिक वृद्धि को बनाए रखने की रणनीति पर काम होगा। विकास और कल्याणकारी योजनाओं के बीच संतुलन स्थापित करने के प्रयासों से प्रदेश की अर्थव्यवस्था को नई गति मिलेगी।

संपादकीय

'नदियों का मायका' संकट में

मध्यप्रदेश को 'नदियों का मायका' कहना दिल को समझाने के लिए भले अच्छा खयाल हो, लेकिन जमीनी हकीकत बहुत अलग और बेहद चिंतनीय है। क्योंकि प्रदेश की कई नदियां और जलस्रोत मरते जा रहे हैं। समय रहते इसे नहीं रोका गया तो आने वाले पीढ़ी के लिए दो बूंद पानी भी मुश्किल से मिलेगा। मध्यप्रदेश को नदियों का मायका इसलिए कहा जाता है, क्योंकि यह नर्मदा, बेतवा, चंबल, क्षिप्रा,सोन, ताप्ती जैसी नदियों का उद्गम है। नर्मदा तो मप्र की जीवन रेखा है ही, साथ ही यह समूचे मप्र को विंध्य और सतपुड़ा में विभाजित योजनाएं भी करती है। इन तमाम नदियों की बदौलत मप्र कृषि और पारिस्थितिकीय रूप से समृद्ध है। लेकिन अब इन सब पर मौत का खतरा मंडरा रहा है। अवैध रेत खनन, नदियों का अत्यधिक दोहन और प्रदूषण इन नदियों की जान ले रहे हैं। नदियों के सूक्ष्म जलीय जीव और वनस्पति तेजी से खत्म होते जा रहे हैं। खतरे के इस दायरे में नर्मदा जैसी बड़ी नदी भी है। पिछले दिनों मध्य भारत की चार नदियों पर हुए अध्ययन में पाया गया कि इन नदियों का जलस्तर तेजी से कम होता जा रहा है। नेहरू ग्राम भारती विश्वविद्यालय प्रयागराज के डीन साइंस और डायरेक्टर रिसर्च डॉ. आशीष शिवम मिश्रा द्वारा किए गए इस अध्ययन में चिंता जताई गई है कि नदियों को बचाने के लिए सिर्फ सरकारी उपाय काफी नहीं हैं, बल्कि इन नदियों का उपभोग करने वाले लोगों को नदियों और उनमें रहने वाले जीवों का महत्व समझाना होगा। ये अध्ययन बुंदेलखंड की धसान, केन, पैसुनी और टोंस नदी पर हुआ है। अध्ययन में पाया गया कि पेयजल और सिंचाई के लिए इन नदियों का अंधाधुंध दोहन जारी है। इससे नदियों के ऊपरी हिस्से का पानी यानी लगभग आधा पानी खत्म होता जा रहा है। पानी खत्म होने से प्रकृति प्रदत्त जीव जो नदी के पानी की गुणवत्ता मैंटेन करते हैं, उनकी गुणवत्ता को संतुलित रखते हुए उसका जीवन बचाते हैं। यही सिलसिला जारी रहा तो आने वाले वक्त में लोग इन नदियों के पानी का उपयोग भी नहीं कर पाएंगे। दरअसल नदी एक प्राकृतिक जलस्रोत है और प्रकृति इन नदियों को ऐसे जीव या ऑर्गेनिज्म देती है, जो इन नदियों के जीवन और स्वच्छता के लिए बहुत जरूरी होते हैं। लेकिन मानव हस्तक्षेप इन जलीय जीवों के इकोसिस्टम को बुरी तरह प्रभावित कर रहा है। जबकि ये जलीय जीव ही पानी को साफ करते रहते हैं। आज अधिकांश नदियों में शहरों गांवों का सीवेज और औद्योगिक अवशिष्ट बहाया जा रहा है। हालत यह है कि गंगा जैसी पवित्र नदी भी भयंकर प्रदूषण से नहीं बच पाई है। यही हाल राज्य में गंगा जल संवर्द्धन अभियान के तहत बने 'अमृत सरोवरों' की है। गहन पड़ताल में उजागर हुआ कि इनमें से ज्यादातर कागजों में बने हैं। उनमें से कई की जमीन पर आज रसूखदार खेती कर रहे हैं। नदियों के केवल घाटों को रंग-रोगन कर चमका दिया गया, जबकि पानी की गुणवत्ता में कोई सुधार नहीं हुआ। प्रदूषण जस का तस है। इसी प्रकार खेत-तालाब योजना के तहत बने ढांचे साल के 8 महीने सूखे पड़े रहते हैं, जिससे किसानों को सिंचाई का कोई ठोस लाभ नहीं मिल पा रहा है। हैरानी की बात यह है कि पिछले हजारों करोड़ का हिसाब ढंग से जमीन पर उतरा नहीं और इस साल के लिए फिर 195 रू. करोड़ का नया 'प्लान' तैयार है। इसमें 2700 से ज्यादा काम प्रस्तावित हैं। पंचायत विभाग 170 रू. करोड़ खर्च करेगा और 25 करोड़ रू.वन्यजीवों के जल स्रोतों के नाम पर निकलेंगे। क्या यह नया बजट भी पुराने गड्ढों को भरने में ही जाएगा या वाकई प्यासी धरती की प्यास बुझेगी?

डॉ. राम मनोहर लोहिया की प्रासंगिकता

नजरिया

रघु ठाकुर

लेखक समाजवादी विचारक हैं।

23 मार्च समाजवादी नेता डॉ. राममनोहर लोहिया का जन्म दिन है। उनकी युवा अवस्था जर्मनी से शिक्षा पूरी करके और देश आने के बाद आजादी के आंदोलन में बीती। लाहौर से लेकर आगरा जेल तक भीषण यातना के साथ उन्होंने जेल यात्रा पूरी की। 1945 में जेल से रिहा होने के बाद उन्होंने गोवा मुक्ति आंदोलन शुरू किया, जिसकी शुरुआत गोवा में नागरिक अधिकारों के साथ शुरू हुई और वह बाद में गोवा मुक्ति आंदोलन में बदल गया। इस आंदोलन में वे आग्वा किले में बनाई गई जेल में रहे जो बहुत कष्टकारी जेल यात्रा थी। आजादी के बाद भी वे बहुत बार देश की आजाद सरकार की जेलों में रहे परंतु उनकी कानपुर की जेल यात्रा भी काफी तकलीफप्रद थी। जिस प्रकार ब्रिटिश हुकुमत या पुर्तगाली हुकुमत ने उन्हें शत्रु मानकर व्यवहार किया था कुछ उससे भी अधिक बुरा व्यवहार देश की आजाद सरकार ने उनके साथ कानपुर जेल में किया था।

लोहिया के जीवन के बहुत पहलु हैं, भाषा, राजनीति, धर्म, सिविल नाफरमानी, कृषि नीति, आदि कितने ही ऐसे विषय हैं जिन्हें लोहिया ने अपने विचारों से पुष्ट कर देश के समक्ष रखा। उन विषयों पर अब भी लोहिया के विचारों के आगे कम से कम मूल और सूत्र रूप में कोई उसके आगे चिन्तन नहीं हो सका है। हालाँकि समयकाल के साथ चिन्तन की धारा को निरंतर आगे ले जाने के प्रयास होना चाहिए।

कुछ मित्र मुझसे पूछते हैं कि आप सदैव दुनिया की चर्चा करते हैं, तो उसमें लोहिया ही क्यों जरूरी है। इस 21वीं सदी में, बाजारवाद के युग में, वैश्वीकरण के दौर में, लोहिया के विचारों की क्या प्रासंगिकता है? मैं उनको कहता हूँ कि, लोहिया की सप्तक्रांति आज भी अपने मूल और सूत्र रूप में समता के विश्व का आधार है। मैं इसके अलावा कुछ अन्य मुद्दों पर आज डॉ. लोहिया को वर्तमान काल की प्रासंगिकता को कसौटी पर कसूँगा।

1. हिन्दुस्तान की संसद को डॉ. लोहिया ने एक नया दर्शन व सूत्र दिया था। देश की संसद केवल खाता बही रखने व पेश करने वाली मुनीम साहब की खाता वही नहीं है। बल्कि देश के गरीब और आम आदमी का प्रतिबिम्ब है। लोहिया ने हिन्दुस्तान की संसद में श्तीन आने बनाम पन्द्रह आने वाल्य भाषण देकर गरीबों की संसद बना दिया, और उस अल्प काल याने लगभग 5-6 वर्षों के दौरान देश का गरीब चाय वाला, पान वाला, छोटा व्यापारी, गाँव का किसान जो आज संसद की कार्यवाही को देखना तो दूर सुनना भी नहीं चाहता, लोहिया के संसदीय जीवन के दौरान संसद की कार्यवाही को रेडियो पर सुनते थे। लोहिया संसद में बोलते थे, गरीबों की बात उठाते थे और हजारों मील दूर बैठा किसान-मजदूर लोहिया के भाषण में अपने जीवन की व्यथा व कथा देखता था। इसीलिये डॉ लोहिया ने कहा था कि मेरे पास कोई संपत्ति नहीं है, सिवाय इसके कि देश का गरीब आदमी मुझे अपना आदमी मानते हैं। पिछले 1967 के बाद से संसद की चाल और चरित्र बदल चुका है। अब संसद में गरीबों की भागीदारी नहीं है बल्कि संसद अमीरों की बन गई। तीन-चौथाई से अधिक सांसद आज करोड़पति हैं जबकि देश के 85 करोड़ लोग 5 किलो अनाज के लिये मोहताज और अपना वोट बेचने को लाचार हैं। क्या संसद का यह बदला हुआ स्वरूप गरीबों की संसद से अमीरों की संसद, भारतीय संसद से वैश्वकीकृत संसद में परिवर्तिन, संप्रभु संसद से विश्व व्यापार के समझौते की गुलाम संसद तक में परिवर्तन क्या आज भी लोहिया को प्रासंगिक सिद्ध नहीं करता? आज संसद देश में आमजन के लिये विश्वसनीय नहीं है, यह लोकतंत्र के लिये एक बुरा दौर है। संसद की कार्यवाही को आम आदमी देखना ही नहीं चाहता। किसी नग्नावतार अभिनेता-अभिनेत्री की फिल्म को देखने के लिये, क्रिकेट के मैच को देखने के लिये देश का मध्य व उच्च वर्ग बैचेन रहता है परंतु संसद की कार्यवाही को देखना तो दूर, शुरू होने के पूर्व टी.वी. बंदकर देता है। आज की संसद संवाद करने की जगह बहिष्कार की संसद बन गई। कई बार तो यह लगता है कि सत्ता पक्ष व प्रतिपक्ष बहिष्कार चाहते हैं। ताकि सत्ता पक्ष अपने मनोनुकूल निर्णय करने को स्वतंत्र रहे और विपक्ष नकली क्रांतिकारी नकाब ओढ़े हुए बने रहे।

2. लोहिया ने 1950 के दशक में 18 साल के बालिग मतदाता द्वारा समूची दुनिया की एक निर्वाचित विश्व संसद के गठन की कल्पना प्रस्तुत की थी। आज अगर यह विश्व संसद बनी होती तो क्या रूस व यूक्रेन युद्ध आरंभ हो पाता? अफगानिस्तान-पाकिस्तान, ईरान-इजरायल, इजरायल-फिलिस्तीनी जैसे जो सीमाई आजादी या खनिज संपदा को लेकर क्या सांपत्तिक युद्ध हो पाते? क्या आतंकवाद की घटनायें होती? क्या वैश्विक पूँजीवाद अपने आगोश में विश्व को लेने में समर्थ होता? अभी दुनिया जो तीसरे युद्ध की ओर बढ़ रही है, इसका अंत क्या होगा, कैसे होगा, कितना विनाशकारी होगा? इन सवालों की कल्पना कठिन है। कहने को यूएनओ है पर वह एक लकवाग्रस्त संस्था है। इजरायल,अमेरिका बनाम ईरान युद्ध शुरू होने के बाद यूएनओ के महासचिव ने एक पुकार लगाई है कि श्युद्ध समाप्त होना चाहिये, परंतु कर्म के स्तर पर कुछ भी नहीं है। यहाँ तक कि वे युद्धरत महाशक्तियों के बारे में एक निंदा का शब्द भी नहीं बोल पाते। यूएनओ की महासभा की सुरक्षा परिषद की बैठक भी नहीं बुला पाते। क्या ऐसा यूएनओ दुनिया की समस्याओं का हल कर सकता है? दूसरी ओर आप कल्पना करें कि अगर लोहिया की कल्पना के अनुसार निर्वाचित विश्व संसद बनी होती तो क्या दुनिया इस विश्व युद्ध के संकट व त्रासदी को झेलने को विवश होती? क्या जिस दुनिया का निर्माण आज हो रहा है उसमें एक व्यक्ति वारेन वफेट के पास 70 लाख करोड़ की नगदी है और दूसरा व्यक्ति 70 रुपये पर जिंदा है ऐसी विषम दुनिया बन पाती। क्या दुनिया में नशे का व्यापार हो पाता? क्या दुनिया में व्यक्ति व राज्य की तानाशाही हो पाती? अगर विश्व संसद बनी होती या बन जाए तो न केवल इन सब समस्याओं से निजात मिलेगी बल्कि एक सुंदर दुनिया बन जाये। क्या यह लोहिया की प्रासंगिकता महसूस नहीं कराती?

3. राजनैतिक दलों में आंतरिक लोकतंत्र लगभग समाप्त है। दल व्यक्तिपरक और परिवारपरक बन गये हैं। एक नये प्रकार के लोकतांत्रिक आवरण में ढके क्रूर पारिवारिक सामंतवाद का न केवल उदय हो रहा है बल्कि यह व्यापक रूप से फैल चुका है। लोहिया ने लगातार सत्ता के विकेंद्रीकरण चौखंभा राज्य, दलों में आंतरिक लोकतंत्र की बात को मजबूती से उठाया था और व्यक्तिपरक दलों को लोकतंत्र की तरफ झुकने के लिये लाचार किया था। आज राजनीतिक दलों की गिरावट, अलोकतांत्रिक कार्यप्रणाली जातिवाद और परिवारवाद, दलीय तानाशाही, क्या लोहिया की प्रासंगिकता सिद्ध नहीं करती है?

4. डॉ लोहिया ने महात्मा गांधी के दुनिया को दिये सबसे बड़े हथियार सत्याग्रह को अपने काल के अनुकूल एक नये स्वरूप में प्रस्तुत किया था। उन्होंने सिविल नाफरमानी को लोकतंत्र की बुनियाद के साथ जोड़ा, सिविल नाफरमानी को संसद को बेहतर बनाने के लिये, उसके साथ रिश्ता जोड़ा। यह लोहिया ही कहते थे कि श्अगर सड़कें सूनी रहेगी तो संसद आवारा हो जायेगी। संसद तभी कोई अच्छा कानून पारित कर सकती है जब जनता का दबाव बने। अहिंसक सिविल नाफरमानी के बजाय संसद बांझ है। जो कोई नई रचना नहीं कर सकती है। लोहिया ने अहिंसक सिविल नाफरमानी को नागरिक अधिकारों का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष माना और नागरिक अधिकारों का सबसे मजबूत हथियार भी बनाया। वे कहते थे कि वे ऐसा व्यक्ति गढ़ना चाहते हैं जो स्वभाव से सत्याग्रही हो, याने व्यक्ति अपने आपमें ही हर अन्याय की मुखालपत वाला बने और जहां कहीं भी कोई अन्याय हो वहाँ उसका प्रतिकार करे। क्या आज की परिस्थितियां जो दलीय और राजकीय तानाशाही की गिरफ्त में है। क्या लोहिसा की प्रासंगिकता सिद्ध नहीं करती?

डॉ. लोहिया ने महात्मा गांधी को इस अर्थ में भी पुर्नजीवित किया, कि आजादी के बाद एक विचार देश के समक्ष कुछ समूहों के द्वारा रखा था कि आजादी के बाद देश में सत्याग्रह की क्या आवश्यकता है? अपनी सरकार है, अब सत्याग्रह की जरूरत नहीं है। पर डॉ लोहिया ने कहा कि सत्याग्रह एक सर्वकालिक गांधी का दिया हुआ औजार है और सतत सत्याग्रह ही एक बेहतर देश, समाज संसद और राजनीति का निर्माण कर सकता है। आज जिस प्रकार लोग भयभीत हैं, अपनी बात हिम्मत से कहने में डरते हैं, क्या उन्हें निर्भय बनाने के लिये लोहिया की अहिंसक सिविल नाफरमानी सबसे सशक्त माध्यम नहीं है? आज राज्य निरंकुश बन रहा है और राजनैतिक नेतृत्व दब्बू व बौना हो रहा है। तब क्या इस हालत को बदलने के लिये लोहिया की अहिंसक सिविल नाफरमानी सबसे उपयुक्त माध्यम नहीं है? एक जीवित मुर्दा व्यक्ति को जीवित जीवंत व्यक्ति में बदलने के लिये, सड़कों को गरमा कर, संसद को उपयोगी बनाने के लिये, देश को गरमाकर, केन्द्रीकरण और तानाशाही की ओर बढ़ती सरकार के कदमों के सामने अंगार बिछाने के लिये, अहिंसक नाफरमानी के अलावा कया और कोई विकल्प हो सकता है? और क्या यह लोहिया की प्रासंगिकता नहीं है?

अगर देश के प्रबुद्धजन कोई और मार्ग सुझा सकते हैं तो बतायें, मैं उनका स्वागत करूँगा। परंतु तब तक तो लोहिया प्रासंगिक बने रहेंगे और मैं उनकी चर्चा करता रहूँगा।

सामयिक

नरेंद्र सिंह तोमर

लेखक मध्य प्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष एवं लोकसभा के पूर्व संसदीय कार्य मंत्री हैं।

संसद नियमों व परंपरा से चलता है, जिद से नहीं

भारतीय संसदीय प्रक्रिया उन मानक प्रक्रियाओं में सम्मलित हैं जिसका अनुकरण पूरी दुनिया के लोकतंत्र करते हैं। राजशाही और तानाशाही जैसी शासन प्रणाली को छोड़ कर लोकतंत्र को अपनाने के उत्सुक देश भारत की लोकतांत्रिक प्रणाली की ओर श्रद्धा से देखते हैं। वे जानते हैं कि राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और वैचारिक विविधताओं वाले इस देश को यहां की लोकतांत्रिक प्रणालियों ने ही एक सूत्र में बांधा हुआ है। भारतीय संविधान ने शासन तंत्र को संचालित करने का कार्य विधायिका और कार्यपालिका को दिया है। न्याय दृष्टि के साथ न्यायपालिका नियंत्रक और निगरानीकर्ता की भूमिका में है। विधायिका यानी संसद और विधानसभाओं में होने वाली कार्यवाहियों में लोकतंत्र स्पंदित होता है। लेकिन बीते कुछ वर्षों में विपक्ष ने जिस व्यवहार का प्रदर्शन किया है, वह इन कार्यवाहियों में बाधा ही नहीं है अपितु लोकतंत्र को ठेस पहुंचाने वाला कार्य है। अभी-अभी लोकसभा में लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला के विरुद्ध लाया गया विपक्ष का अविश्वास प्रस्ताव सदन में खारिज हो गया। यह प्रस्ताव संख्या बल के कारण तो खारिज हुआ ही। इसे तो विपक्ष के मंतव्य के कारण भी खारिज हो जाना था। संसदीय कार्य व्यवस्था नियमों और मान्य परंपराओं से संचालित होती हैं। वह विपक्ष या सत्ता पक्ष की मन-मर्जियों से संचालित नहीं हो सकती है। लोकसभा अध्यक्ष एक व्यक्ति नहीं होता बल्कि यह नियमों का पालन, संरक्षण और संवर्धन करने वाला दायित्व है। विपक्ष अपनी अनुशासहीनता के चलते नियमों के पर्याय लोकसभा अध्यक्ष पर ही निर्मूल आरोप लगाता है तो उसकी परिणति ऐसी ही होती है।

लोकतंत्र जनता का, जनता के लिए, जनता द्वारा शासन है। जनता का बहुमत पा कर सत्ता पक्ष शासन के सूत्र संभालता है और विपक्ष निगरानीकर्ता की भूमिका में सरकार से सवाल करता है। संविधान को आत्मार्पित करने के उपरांत अब तक भारतीय लोकतांत्रिक परंपराएं 76 वर्ष की यात्रा पूर्ण कर चुकी हैं। इस अवधि में संसद कई तरह की घटनाओं की साक्षी रही है। हमारी आस्था के केंद्र वरिष्ठ नेताओं की तीखी बहसें, आरोप-प्रत्यारोप, विरोध और असहमतियों के लंबे विमर्श लोकसभा और राज्यसभा के गौरवशाली अतीत में दर्ज हैं। कुछ अप्रिय घटनाक्रम भी हुए लेकिन नियमों और मान्य परंपराओं की मर्यादाओं को कभी जानबूझ कर ओझल नहीं होने दिया गया। सत्ता-पक्ष और विपक्ष ने एक-दूसरे की सहमति और असहमति का सदैव सम्मान और आदर किया है। फिर अब ऐसा क्या हुआ कि विपक्ष आक्रामकता के चरम पर पहुंच कर मर्यादाओं धयान नहीं रख रहा है रहा है? यह प्रश्न सामयिक है और इस पर चिंतन होना चाहिए।

लोकतंत्र की जब भी बात होती है तो यह याद दिलाया जाता है कि सदन में कोई भी नियमों से ऊपर नहीं है। मतभेद होना अलग बात है। मतभेद को व्यक्त करना लोकतांत्रिक अधिकार है मगर जिद में, आक्रामकता से, केवल हमारी ही सुनी जाए जैसे जटिल व्यवहार से लोकतांत्रिक व्यवस्था को ठेस पहुंचती है। जब कोई एक पक्ष ऐसा आचरण कर रहा होता है तो आसंदी पर बैठा व्यक्ति सिर्फ एक प्रतिनिधि नहीं रहता। वह अपने समूचे कार्य व्यवहार में लोकतंत्र का संरक्षक, पोषक और संवर्धक होता है। लोकसभा अध्यक्ष माननीय श्री ओम बिरला के अध्यक्षीय कार्यकाल को देखें तो पाएंगे कि विपक्ष के जिद्दी और आक्रामक रवैये के क्षणों में भी उन्होंने अकल्पनीय संयम, संतुलन और निष्पक्षता का परिचय दिया है। वे नियमों के पालन के प्रति सजग थे और यही सजगता विपक्ष को खटकती रही।

एक तरफ, जहां विपक्ष का अमर्यादित व्यवहार है, वहीं, लोकसभा अध्यक्ष माननीय ओम बिरला के कार्यकाल और नवाचार पर भी दृष्टि डाल लेनी चाहिए। सदन की कार्यवाहियां साक्षी हैं कि अपने अध्यक्षीय कार्यकाल में ओम बिरला ने निरंतर यह प्रयत्न किया है कि अधिक से अधिक सांसदों को सदन में बोलने का अवसर मिले। युवा सांसदों, पहली बार निर्वाचित होकर आए जनप्रतिनिधि को, महिला सांसदों और संख्या में कम सांसदों को भी पर्याप्त समय देना सुनिश्चित किया गया। ऐसा होने पर ही 17 वीं लोकसभा ने लगभग 97 प्रतिशत की कार्य उत्पादकता हासिल की है। यह पिछले दो दशकों की उल्लेखनीय उपलब्धि है। 2019 से अब तक आयोजित 21 सत्रों में से 10 सत्र ऐसे रहे, जिनमें सदन की उत्पादकता 100 प्रतिशत से अधिक दर्ज की गई। वर्ष 2025 के शीतकालीन सत्र में तो लोकसभा ने निर्धारित समय से भी अधिक काम करते हुए 103 प्रतिशत कार्य निष्पादन किया है। लोकसभा अध्यक्ष श्री ओम बिरला सही अर्थों में संसदीय कार्य प्रणाली के संरक्षक हैं। तभी उन्होंने सदन में समय के आवंटन को संख्या बल के आधार पर नहीं, बल्कि लोकतांत्रिक भागीदारी के आधार पर सुनिश्चित किया है। यही कारण है कि 17वीं लोकसभा में सत्ता पक्ष के भारी बहुमत के बावजूद विपक्ष और गैर-एनडीए दलों को कुल चर्चा समय का लगभग 61.05 प्रतिशत, अर्थात् 807 घंटे प्रदान किए गए।

अपने कार्यकाल में नियमों और प्रक्रियाओं को समृद्ध करने की लोकसभा अध्यक्षों की परंपरा को अग्रसर करते हुए श्री ओम बिरला द्वारा नव निर्वाचित और अपेक्षाकृत कम चर्चित सांसदों को अपनी बात रखने के लिए प्राथमिकता दी गई। नव निर्वाचित सांसदों के लिए प्रबोधन कार्यक्रम आयोजित कर उन्हें संसदीय प्रक्रिया, नियमों और संसदीय परंपराओं से परिचित करवाना लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को सुदृढ़ करने का ही तो यत्न था। लोकसभा के संसदीय शोध एवं प्रशिक्षण संस्थान 'प्राइड' के माध्यम से विभिन्न विधानसभाओं तथा संसद के अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए भी प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। समिति प्रणाली को अधिक प्रभावी बनाने के उद्देश्य से पीठासीन अधिकारियों की एक समिति का गठन भी किया गया, जिसका उद्देश्य संसद तथा राज्य विधानसभाओं की समिति व्यवस्था की समीक्षा करना है। संसदीय प्रक्रियाओं में एकरूपता लाने के उद्देश्य से देश की विभिन्न विधानसभाओं के कार्य संचालन नियमों की समीक्षा के लिए भी एक समिति का गठन किया गया, जिसकी अध्यक्षता उत्तर प्रदेश विधानसभा के अध्यक्ष सतीश महाना को सौंपी गई है। इसे भारतीय संसदीय संघीय ढांचे में समन्वय को सशक्त बनाने का स्तुत्य प्रयत्न कहा जाना चाहिए। अध्यक्ष ओम बिरला के नेतृत्व में लोकसभा को 'पेपरलेस' बनाने की दिशा में उल्लेखनीय कार्य हुआ है। डिजिटल संसद प्लेटफॉर्म की स्थापना, सांसदों के लिए डिजिटल अटेंडेंस प्रणाली और ऑनलाइन ऑनबोर्डिंग जैसी व्यवस्थाएं इसी परिवर्तन का हिस्सा हैं। मंत्रियों द्वारा सदन में दिए गए आश्वासनों की निगरानी के लिए 'ऑनलाइन एश्योरेंस मॉनिटरिंग सिस्टम' को भी सशक्त किया गया, जिससे पारदर्शिता और जवाबदेही में वृद्धि हुई है। संसदीय कार्यवाही में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के उपयोग की दिशा में भी महत्वपूर्ण कदम उठाए गए। इस तकनीक के माध्यम से संसद की 18,000 से अधिक घंटों की ऐतिहासिक कार्यवाही का डिजिटलीकरण किया गया, जो संसदीय विरासत के संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला के नेतृत्व में होने वाले नवाचारों की सूची विस्तृत है। इसके बाद भी यदि संसद में उनके विरुद्ध अविश्वास प्रस्ताव लाया जाता है, तो यह सिर्फ एक प्रक्रिया भर नहीं है बल्कि संसदीय परंपराओं पर ही प्रश्नचिह्न है। विपक्ष का यह व्यवहार लोकतांत्रिक संसदीय मर्यादाओं के अनुकूल नहीं है।

भारतीय लोकतंत्र का आदर्श होना किसी एक व्यक्ति का कार्य नहीं है बल्कि यह समवेत प्रयासों का सुफल है। यह हम सभी चुने हुए जनप्रतिनिधियों का सौभाग्य और दायित्व है कि हम लोकतांत्रिक प्रक्रिया को समृद्ध करें, इसका संरक्षण करें, इसे संवर्धित करें लेकिन इसे पंगु, निरंकुश और अशक्त बनाने का कार्य न करें। कष्ट यही है कि विपक्ष इस राह पर चल रहा है। विपक्ष के अमर्यादित व्यवहार के समक्ष लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला का कार्यकाल प्रेरणा, उम्मीद और आश्वस्ति का पर्याय बन गया है। उन्हें इस अनुकरणीय कार्य के लिए बधाई और शुभेच्छाएं।

विश्व को दिशा देने वाली भारतीय वैज्ञानिक धरोहर

अभिव्यक्ति

अदिति सिंह भदौरिया

लेखक स्तंभकार हैं।

जब हम भारत की बात करते हैं, तो हम केवल एक देश की नहीं, बल्कि एक ऐसी महान विरासत की कल्पना करते हैं जिसने सम्पूर्ण विश्व को ज्ञान और विज्ञान का मार्ग दिखाया है। यह वही पवित्र भूमि है जहाँ शून्य का आविष्कार हुआ, जहाँ आकाश के अनंत रहस्यों को समझने का साहस किया गया और जहाँ चिकित्सा विज्ञान ने अद्भुत ऊँचाइयों को स्पर्श किया। वास्तव में, भारत प्राचीन काल से ही ज्ञान, विज्ञान और अनुसंधान की समृद्ध परंपरा का धनी रहा है।

भारतीय वैज्ञानिक विरासत को समृद्ध बनाना केवल एक विषय नहीं, बल्कि हमारी पहचान, हमारा गर्व और हमारे उज्ज्वल भविष्य की सुदृढ़ नींव है। यहाँ की सभ्यता ने न केवल आध्यात्मिक क्षेत्र में, बल्कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी विश्व को नई दिशा प्रदान की है। यह विरासत हमें यह सिखाती है कि ज्ञान की खोज तर्क, प्रमाण और प्रयोग के आधार पर होनी चाहिए।

इसी दिशा में भारतीय शिक्षण मंडल निरंतर कार्य करते हुए भारतीय ज्ञान परंपरा को पुनर्जीवित करने का सार्थक प्रयास कर रहा है। अतः आज आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने अतीत को केवल गौरव के रूप में न देखें, बल्कि उसे प्रमाणिकता (authenticity) के साथ समझते हुए आगे बढ़ाएँ। भारतीय वैज्ञानिक विरासत की जड़ें सिंधु-सरस्वती सभ्यता में निहित हैं, जो लगभग 2500 ईसा पूर्व की है। मोहनजोदड़ो और हड़प्पा जैसे नगरों की सुव्यवस्थित योजना आज भी वैज्ञानिक दृष्टि से अत्यंत आश्चर्यजनक मानी जाती है। यहाँ की चौड़ी और सीधी सड़कों, पक्की ईंटों से निर्मित भवनों तथा उन्नत भूमिगत जल निकासी प्रणाली से यह स्पष्ट होता है कि उस समय के लोग स्वच्छता, शहरी नियोजन और प्रबंधन के उच्च सिद्धांतों से भली-भाँति परिचित थे। यह सब केवल कल्पना नहीं, बल्कि ठोस पुरातात्विक प्रमाणों पर आधारित सत्य है।

वैदिक और उत्तरवैदिक काल में भी भारत ने गणित के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। बौधायन के शुल्बसूत्र में वर्णित सिद्धांत पायथागोरस प्रमेय से साम्य रखते हैं, जो प्राचीन भारतीय गणितीय चिंतन की उन्नत अवस्था को दर्शाते हैं। इसी प्रकार, शून्य और दशमलव प्रणाली का आविष्कार भारत की ऐसी अमूल्य देन है, जिसने सम्पूर्ण विश्व की गणना पद्धति को एक नई दिशा प्रदान की।

खगोल विज्ञान के क्षेत्र में आर्यभट्ट का योगदान अत्यंत उल्लेखनीय है। उन्होंने अपनी प्रसिद्ध कृति आर्यभटीय में यह सिद्ध किया कि पृथ्वी अपनी धुरी पर घूमती है, जिससे दिन और रात होते हैं। उस समय के संदर्भ में यह विचार अत्यंत क्रांतिकारी था, जो आज आधुनिक विज्ञान द्वारा भी काफी हद तक प्रमाणित माना जाता है। यह उनके गहन वैज्ञानिक दृष्टिकोण और तार्किक सोच का परिचायक है। चिकित्सा के क्षेत्र में भी भारत की विरासत अत्यंत समृद्ध रही है। सुश्रुत, जिन्हें शल्य चिकित्सा का जनक कहा जाता है, ने सुश्रुत संहिता में शल्य चिकित्सा की अनेक विधियों और उपकरणों का विस्तृत वर्णन किया है। प्राचीन भारत में राइनोप्लास्टी (नाक की सर्जरी) जैसे जटिल ऑपरेशन सफलतापूर्वक किए जाते थे, जो उस समय की उन्नत चिकित्सा प्रणाली का प्रमाण हैं।

धातु विज्ञान में दिल्ली का लौह स्तंभ प्राचीन भारतीय तकनीकी दक्षता का अद्भुत उदाहरण है। लगभग 1600 वर्षों से बिना जंग लगे खड़ा यह स्तंभ आज भी वैज्ञानिकों के लिए आश्चर्य का विषय बना हुआ है। आधुनिक शोधों से यह स्पष्ट हुआ है कि इसकी विशेष संरचना इसे जंग से सुरक्षित रखती है।

इसी प्रकार, राजस्थान और गुजरात की बावड़ियाँ जल प्रबंधन की उत्कृष्ट तकनीक को दर्शाती हैं। ये संरचनाएँ न केवल जल संग्रहण का माध्यम थीं, बल्कि भूजल स्तर को बनाए रखने और तापमान नियंत्रण में भी सहायक थीं। आज के पर्यावरणीय संकट के समय ये हमें सतत विकास (sustainable development) की महत्वपूर्ण सीख देती हैं। इन सभी उदाहरणों से स्पष्ट होता है कि भारतीय वैज्ञानिक विरासत केवल मिथकों या मान्यताओं पर आधारित नहीं है, बल्कि इसके पीछे ठोस प्रमाण, प्राचीन ग्रंथ, भौतिक संरचनाएँ और आधुनिक वैज्ञानिक शोध मौजूद हैं। अतः हमें अपनी इस धरोहर को गर्व के साथ-साथ तर्क और प्रमाण के आधार पर समझना और स्वीकार करना चाहिए। अंततः, 'भारतीय वैज्ञानिक विरासत को समृद्ध बनाना' का वास्तविक अर्थ केवल अतीत की उपलब्धियों का स्मरण करना नहीं, बल्कि उन्हें वर्तमान और भविष्य से जोड़ना है। हमें अपनी शिक्षा प्रणाली में इन प्रमाणित तथ्यों को समुचित स्थान देना चाहिए, ताकि नई पीढ़ी अपने इतिहास को सही दृष्टिकोण से समझ सके। जब हम अपनी जड़ों से जुड़कर वैज्ञानिक दृष्टिकोण के साथ आगे बढ़ेंगे, तभी हम एक सशक्त, आत्मनिर्भर और प्रगतिशील राष्ट्र का निर्माण कर पाएंगे। यही हमारी सच्ची प्रगति है और यही भारत के उज्ज्वल भविष्य की कुंजी है।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

मुकेश नेमा

लेखक मप्र के प्रशासनिक अधिकारी हैं।

मुर्गी को तसल्ली देता मुर्गा खुद लगातार चिंतित बना हुआ है

मुर्गा सर पर हाथ धरे बैठा है, मुर्गी सन्नाटे में है। फड़फड़ाते चूजे कोने में दुबके हैं और नवजात अंडे माँ का मुँह निहार रहे हैं, जो मुसीबत सर पर आन पड़ी है वो बड़ी भारी है,उससे कैसे जूझें ,कैसे पार पाएं,अब इस मुद्दे पर विचार विमर्श हो रहा है।

सरकार का फरमान है। अब मुर्गी के दिए हर अंडे पर वो तारीख लिखी जाए जिस दिन उसकी डिलीवरी हुई हो। सरकार का ये फरमान कैसे माना जाएगा। क्या प्रक्रिया होगी इसकी। कैसे कर पाएंगे वो इस काम को। इसकी चिंता खाए जा रही है उन्हें।

मुर्गी मायूस है। अब तक तो ढकी थी बात। अब सब जान जाएँगे कि हमारे यहाँ बच्चों की लाईन लगी हुई है। हँसेंगे सब हम पर।

मुर्गा आगे की सोच रहा है। झंझट भी शुरू हो जाएगी घर मे। बड़े छोटे होने की तारीख पता चलेगी बच्चों को त

अब तक अधूरा है भगत सिंह का वह विराट बलिदान

जयंती पर विशेष

श्याम बोहरे

लेखक सामाजिक कार्यकर्ता हैं।

भगतसिंह और उनके साथी जिस सहर का इंतजार कर रहे थे उसकी एक झलक उनके उस पत्र में दिखती है जो उन्होंने पंजाब के गर्वनर को भेजा था। 'हम यह घोषणा करते हैं कि एक युद्ध चल रहा है और यह तब तक चलता रहेगा जब तक कुछ शक्तिशाली लोग भारतीय जनता और मेहनतकश लोगों को तथा उनकी आमदनी के साधनों को लूटते रहेंगा। ये लुटेरे चाहे अंग्रेज पूंजीपति हों या भारतीय पूंजीपति।' भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव के द्वारा लिखे गए लंबे पत्र का एक और हिस्सा उनके सपने समझने में मदद करता है। 'जब तक समाजवादी लोकराज्य स्थापित नहीं हो जाता और समाज का वर्तमान ढांचा खत्म करके इसकी जगह खुशहाली पर आधारित नया सामाजिक ढांचा निर्मित नहीं हो जाता, जब तक हर किस्म की लूट खसोट असंभव नहीं बना देते तब तक यह जंग नये जोशाऔर निडरता के साथ जारी रहेगी।' उनका यह भी कहना था कि भारत में हम भारतीय श्रमिकों की सत्ता से कम कुछ नहीं चाहते। भगतसिंह और उनके साथियों के लिए आजादी का लक्ष्य तब तक अधूरा रहेगा जब तक गैर-बराबरी और शोषण की व्यवस्था जारी रहेगी, शोषण करने वाले चाहे अंग्रेज हों या हिंदुस्तानी।

एक युवक साढ़े तेईस साल की उमर में देश की आजादी के लिए क्रांतिकारी गतिविधियों के अपराध में फांसी चढ़ गया हो। वही युवक बारह साल की उमर में जलियांवाले बाग की मिट्टी लेने पहुंच जाए, गम्भीर सोच-विचार करते हुए सोलह साल की उमर में बड़ा मकसद हासिल करने के लिए घर छोड़ दे। शादी के लिए दबाव आने पर कहे कि उसने देश की आजादी के साथ शादी कर ली, सत्रह साल की उमर में 'पंजाब की भाषा तथा लिपि की समस्या' पर प्रौढ़ चिंतक की तरह लेख लिखने लगे, क्रांतिकारी गतिविधियों के साथ साथ लगातार अध्ययन, चिंतन-मनन और लेखन में व्यस्त रहे तो वह क्रांतिकारी चिंतक का प्रतीक बन जाता है। ऐसे ही भगत सिंह की शहादत के 95 साल बाद आज भी उन्हें याद करने की जरुरत क्यों है? आजादी के 79 साल बाद भी एक तरफ देश की आबादी का बहुत बड़ हिस्सा जीवन की बुनियादी जरुरतों से वंचित है तो दूसरी ओर केवल एक प्रतिशत लोग देश के संसाधनों के बड़े हिस्से पर काबिज हैं। शोषण और लूट पर आधारित यह अपराधिक व्यवस्था उन सपनों से मेल नहीं खाती, जो भगतसिंह और उनके साथियों ने देखे थे और जिनके खातिर उन्होंने जान कुर्बान की थी।

फैज अहमद फैज की ये पंक्तियां हकीकत बयां करतीं हैः

ये दाग दाग उजाला ये शब-गजीदा सहर
वो इंतजार था जिस का ये वो सहर तो नहीं।

भगतसिंह और उनके साथी जिस सहर का इंतजार कर रहे थे उसकी एक झलक उनके उस पत्र में दिखती है जो उन्होंने पंजाब के गर्वनर को भेजा था। 'हम यह घोषणा करते हैं कि एक युद्ध चल रहा है और यह तब तक चलता रहेगा जब तक कुछ शक्तिशाली लोग भारतीय जनता और मेहनतकश लोगों को तथा उनकी आमदनी के साधनों को लूटते रहेंगा। ये लुटेरे चाहे अंग्रेज पूंजीपति हों या भारतीय पूंजीपति।' भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव के द्वारा लिखे गए लंबे पत्र का एक और हिस्सा उनके सपने समझने में मदद करता है। 'जब तक समाजवादी लोकराज्य स्थापित नहीं हो जाता और समाज का वर्तमान ढांचा खतम करके इसकी जगह खुशहाली पर आधारित नया सामाजिक ढांचा निर्मित नहीं हो जाता, जब तक हर किस्म की लूट खसोट असंभव नहीं बना देते तब तक यह जंग नये जोशाऔर निडरता के साथ जारी रहेगी।' उनका यह भी कहना था कि भारत में हम भारतीय श्रमिकों की सत्ता से कम कुछ नहीं चाहते। भगतसिंह और उनके साथियों के लिए आजादी का लक्ष्य तब तक अधूरा रहेगा जब तक गैर-बराबरी और शोषण की व्यवस्था जारी रहेगी, शोषण करने वाले चाहे अंग्रेज हों या हिंदुस्तानी।

अछूत समस्या का हल वे मसीहाई अंदाज में उपकार करने की जगह अछूतों को संगठित होकर संघर्ष के रास्ते को उचित समझते हुए कहते हैं- सेवायें प्रदान करने वाले मेहनतकश लोग आज भी छुआछूत, शोषण, गैर-बराबरी और अत्याचार के शिकार हैं। जून 1928 के किरती में प्रकाशित 'अछूत का सवाल' लेख में भगतसिंह लिखते हैं, 'संगठित होकर, अपने पैरों पर खड़े होकर सारे समाज को चुनौती दो। देखो फिर कौन तुम्हारे हक से वंचित रखने की जुर्रत कर सकता है? तुम लोगों की खुराक मत बनो। दूसरों का मुंह न ताको। नौकरशाही के झांसे में भी मत आना। यह सरमायेदार नौकरशाही तुम्हारी गुलामी और गरीबी का मुख्य कारण है, इसलिए उनके साथ तुम न मिल जाना। उनकी चालों से बचना। फिर काम बन जाएगा। तुम असली कामगार हो, कामगारो संगठित हो जाओ। इक्का-दुक्का सुधारों से कुछ नहीं हो सकता। सामाजिक इंकलाब पैदा कर दो और राजनैतिक और आर्थिक इंकलाब के लिए कमर कस लो। तुम ही तो देश का आधार हो, असली ताकत हो। उठो सोये हुए शेरों, विद्रोहियों, विप्लव कर डालो।'

भगतसिंह जो सोचते थे उसे जीते भी थे। जेल में जो उनका पाखाना साफ करता था उससे निवेदन किया कि वो अपने हाथ से खाना बनाकर खिलाए। बचपन में उनकी मां उनका पाखाना साफ करती थीं, यहां जो करता है उसे वे बेबे (मां) कहते थे। मई 1928 के किरती के अंक में प्रकाशित 'धर्म और हमारी आजादी की जंग' लेख में भगतसिंह ने लिखा, 11,12,13 अप्रैल 1928 में पंजाब पालिटिकल कांफ्रेंस हुई। उसी समय नौजवानों की कांफ्रेंस भी हुई। जब साम्प्रदायिक संगठनों के खिलाफ प्रस्ताव आया तो दबी छिपी बातें खुल्लम-खुल्ला होने लगीं और धर्म की समस्या हल करने पर विचार हुआ। प्राविन्सियल कांफ्रेंस में मौलाना जफर अली द्वारा 5-7 बार खुदा-खुदा दोहराने पर जवाहरलाल नेहरु ने टोका कि मंच पर आकर इस तरह खुदा-खुदा मत बोलिये। आप धर्म के संदेश-वाहक हैं तो मैं गैरधर्म का प्रचारक हूं। बाद में नौजवान सभा के जलसे में भी धर्म के नाम पर बवाल होने पर जोर देकर कहा गया कि धर्म के सवाल को छेड़ ही न जाए। बड़ी अच्छी सलाह है। यदि किसी की धार्मिक गतिविधियां लोगों की सुख-शांति में विघ्न डाले तो उसके विरुद्ध पुरजोर आवाज उठाने की जरुरत है। हर बार धर्म को लेकर सवाल उठे जिनमें हर एक को इस बारे में पूरी छूट दी गई थी, यहां तक कि कांग्रेस के मंच पर भी आयतें और मंत्र पढ़े जाने लगे। उन दिनों धर्म की बात से पीछे हटने वाले किसी आदमी को अच्छा नहीं समझा जाता था, फलस्वरुप संकीर्णता बढ़ने लगी। जाहिर है, इसके बुरे परिणाम निकले। जो लोग धार्मिक प्रपंच समझ गए वे इसे रास्ते का रोड़ा समझते हैं। इस समय पूर्ण स्वतंत्रता के कई उपासक सज्जन धर्म को दिमागी गुलामी का नाम देते हैं।

वे कहते हैं कि बच्चों को यह बताना कि ईश्वर सर्वशक्तिमान है और मनुष्य एक माटी का पुतला। उन्हें हमेशा के लिए कमजोर बनाना हैं। उनकी ताकत और आत्म विश्वास को नष्ट कर देना है। मूल प्रश्न यह है कि धर्म हमारे रास्ते की बहुत भारी अड़चन है। मसलन, हम चाहते हैं कि सब लोग बराबर हों लेकिन बीसवीं सदी में भी पंडित -मौलवी भंगी के लड़के से हार पहनने के बाद कपड़ों सहित स्नान करते हैं और अछूतों को जनेउ देने से इंकार करते हैं। अगर ऐसे धर्म के विरुद्ध कुछ भी न कहने की कसम खा लें तो चुपचाप घर बैठ जाना चाहिए। अन्यथा धर्म का विरोध होगा। लोग इन बुराइयों को सुधारना भी चाहते हैं तो दूसरी तरफ धर्म की बुनियादी विकृतियों पर सवाल भी नहीं करना चाहते। जब तक धर्म का पहाड़ आगे बढ़ने के रास्ते में रहेगा, सामाजिक न्याय कैसे मिलेगा?

5-6 अक्टूबर 1930 में लिखे गए 'मैं नास्तिक क्यों हूं?' लेख में भगतसिंह ने जिस विलक्षण ढंग से अंधविश्वास, तर्कहीनता और अवैज्ञानिक सोच को चुनौती दी है वह बेजोड़ है। पूंजीवाद के खिलाफ चल रही लड़ाई को समाजवादी क्रांति के मकसद से जोड़कर लिखा गया ऐतिहासिक महत्व का यह लेख समाज की मुक्ति का संदेश भी देता है। इसमें व्यक्त स्पष्ट विचार जो हमारा शिक्षण करते हैं। उसके एक प्रेरक अंश को देखते है, 'तुम जाओ, और किसी प्रचलित धर्म का विरोध करो, जाओ और किसी हीरो की, महान व्यक्ति की- जिसके बारे में सामान्यतः यह विश्वास किया जाता है कि वह आलोचना से परे हैं क्योंकि वह गलती कर ही नहीं सकता।आलोचना करो तो तुम्हारे तर्क की शक्ति हजारों लोगों को तुम पर व्याभिमानी होने का आरोप लगाने को मजबूर कर देगी। ऐसा मानसिक जड़ता के कारण होता है। आलोचना और स्वतंत्र विचार, दोनों ही एक क्रांतिकारी के अनिवार्य गुण हैं क्योंकि महात्मा जी महान हैं, अतः किसी को उनकी आलोचना नहीं करना चाहिए। चूंकि वह उपर उठ गए हैं, अतः हर बात जो वे कहते हैं- चाहे वह राजनीति के क्षेत्र की हो या धर्म, अर्थशास्त्र अथवा नीतिशास्त्र के-सब सही है। आप चाहे आश्वस्त हों या नहीं, आपको कहना चाहिए, 'हां यही सच है' ऐसी मानसिकता विकास की ओर नहीं ले जा सकती। यह तो स्पष्ट रुप से प्रतिक्रियावादी है।'

जब तक भारत की धरती पर सपनों का सूरज ढलता है
जब तक दुख के आंसू पीकर घर घर का बचपन पलता है
जब तक मेहनत की पीठों पर महल लूट के इतराते हैं
जब तक इंसानों के हक को पूंजी के दानव खाते हैं
जब तक भारत की धरती पर आजादी का अर्थ न पूरा
और तभी तक भगतसिंह का वह विराट बलिदान अधूरा। (- कृषक)

तीन चेहरे, एक इंकलाबः शौर्य, विचार और बलिदान की अमर त्रयी

शहीद दिवस पर विशेष

अतुल गोयल

लेखक न्यूयॉर्क की कंपनी में सॉफ्टवेयर डवलपमेंट इंजीनियर हैं!

जेल के भीतर 'इंकलाब जिंदाबाद' के गूंजते नारों ने यह स्पष्ट कर दिया था कि अंग्रेज भले ही तीन शरीरों को शांत कर दें लेकिन उस विचार को नहीं मार पाएंगे, जो अब एक दावानल बनकर पूरे हिंदुस्तान में फैल चुका था। भगत सिंह का जन्म 28 सितंबर 1907 को बंगा (अब पाकिस्तान) में हुआ था। उनके रगों में देशभक्ति का रक्त विरासत में मिला था। पांच वर्ष की अल्पायु में जब यह बालक मिट्टी में बंदूकें बोने की बात करता था तो वह कोई खेल नहीं बल्कि आने वाले उस प्रखर क्रांतिकारी का पूर्वाभास था, जिसने साम्राज्यवादी सत्ता की चूलें हिला देने का संकल्प लिया था।

23 मार्च 1931 की वह धुंधली शाम भारतीय कालखंड के माथे पर शौर्य का वह अमिट तिलक है, जिसे समय की कोई भी आंधी मिटा नहीं सकती। लाहौर सेंट्रल जेल की उन संकरी दीवारों के पीछे जब सूरज ढल रहा था, तब भारत के तीन सपूत (भगत सिंह, सुखदेव और राजगुरु) मृत्यु के आलिंगन के लिए तैयार हो रहे थे। आमतौर पर मृत्यु भय का पर्याय होती है लेकिन इन तीनों नायकों के लिए वह एक उत्सव थी, अपनी मातृभूमि की वेदी पर सर्वस्व न्योछावर करने का अंतिम अनुष्ठान। ब्रिटिश हुकूमत इतनी डरी हुई थी कि उसने तय समय से 11 घंटे पहले ही उन्हें फांसी देने का कायरतापूर्ण निर्णय लिया। जेल के भीतर 'इंकलाब जिंदाबाद' के गूंजते नारों ने यह स्पष्ट कर दिया था कि अंग्रेज भले ही तीन शरीरों को शांत कर दें लेकिन उस विचार को नहीं मार पाएंगे, जो अब एक दावानल बनकर पूरे हिंदुस्तान में फैल चुका था। भगत सिंह का जन्म 28 सितंबर 1907 को बंगा (अब पाकिस्तान) में हुआ था। उनके रगों में देशभक्ति का रक्त विरासत में मिला था। पांच वर्ष की अल्पायु में जब यह बालक मिट्टी में बंदूकें बोने की बात करता था तो वह कोई खेल नहीं बल्कि आने वाले उस प्रखर क्रांतिकारी का पूर्वाभास था, जिसने साम्राज्यवादी सत्ता की चूलें हिला देने का संकल्प लिया था। किशोरावस्था में जलियांवाला बाग की रक्त-रंजित मिट्टी को एक कांच की शीशी में भरकर अपने पास रखना और हर दिन उसे देखकर गुलामी के अपमान को महसूस करना, भगत सिंह को एक साधारण युवक से एक कालजयी क्रांतिकारी बना गया। भगत सिंह की विशेषता यह थी कि वे केवल हाथ में पिस्टल लेकर चलने वाले विद्रोही नहीं बल्कि एक प्रगाढ़ अध्येता और दार्शनिक भी थे। उन्होंने मार्क्सवाद, समाजवाद और विश्व के विभिन्न क्रांतिकारी आंदोलनों का इतना सूक्ष्म अध्ययन किया था कि वे जानते थे कि असली आजादी केवल गोरे साहबों के चले जाने से नहीं आएगी। उनके लिए स्वतंत्रता का अर्थ था एक ऐसे समाज की स्थापना, जहां मनुष्य द्वारा मनुष्य का शोषण न हो। उनका 'इंकलाब जिंदाबाद' का नारा व्यवस्था परिवर्तन की एक गूंज थी। इस महागाथा के दूसरे स्तंभ थे सुखदेव थापर, जिनका जन्म 15 मई 1907 को लुधियाना में हुआ। सुखदेव और भगत सिंह की जोड़ी इतिहास की उन विरल जोड़ियों में से एक थी, जहां मित्रता और मिशन एक-दूसरे में विलीन हो गए थे। सुखदेव 'नौजवान भारत सभा' के रणनीतिकार थे। वे संगठन की रीढ़ थे। जहां भगत सिंह क्रांति का चेहरा और उसकी आवाज थे, वहीं सुखदेव उस आंदोलन की योजना और सांगठनिक ढांचे को मजबूती प्रदान करने वाले शिल्पकार थे। उनकी अनुशासनप्रियता और दूरदर्शिता ने क्रांतिकारी आंदोलन को एक दिशा प्रदान की। जेल के भीतर भी उनकी दृढ़ता ने अंग्रेजी प्रशासन के पसीने छुड़ा दिए थे।

क्रांति के इस त्रिकोण का तीसरा कोण थे शिवराम राजगुरु। महाराष्ट्र की वीरभूमि पर 24 अगस्त 1908 को जन्मे राजगुरु साहस की प्रतिमूर्ति थे। वे छत्रपति शिवाजी महाराज की गुरिल्ला युद्ध नीति के उपासक थे और निशाना लगाने में इतने निपुण थे कि उन्हें 'द गनमैन ऑफ द पार्टी' कहा जाता था। राजगुरु का मानना था कि अत्याचारी शासन के विरुद्ध मौन रहना पाप है और शक्ति का उत्तर शक्ति से ही दिया जाना चाहिए। उनका जीवन इस सत्य को पुख्ता करता है कि जब बात राष्ट्र की अस्मिता की हो तो क्षेत्रीय पहचान पीछे छूट जाती है और पूरा भारत एक स्वर में बोलता है।

तीनों के जीवन में निर्णायक मोड़ तब आया, जब 1928 में साइमन कमीशन के विरोध के दौरान पंजाब केसरी लाला लाजपत राय पर बर्बर लाठीचार्ज हुआ। लालाजी की मृत्यु ने पूरे देश को स्तब्ध कर दिया। क्रांतिकारियों के लिए यह केवल एक नेता की मृत्यु नहीं थी बल्कि राष्ट्र के सम्मान पर गहरा आघात था। इसका प्रतिशोध लेने के लिए सांडर्स की हत्या की योजना बनाई गई। लाहौर की सड़कों पर जब राजगुरु की पहली गोली और भगत सिंह की अगली गोलियों ने सांडर्स को धराशायी किया तो वह केवल एक अंग्रेज अधिकारी का अंत नहीं था बल्कि ब्रिटिश साम्राज्य के अहंकार की पराजय थी। इसके बाद की घटना यानी 8 अप्रैल 1929 को केंद्रीय असेंबली में बम फैंकना, भारतीय इतिहास की सबसे साहसिक घटनाओं में से एक है। भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने बम वहां फैंका, जहां कोई मौजूद नहीं था। उनका उद्देश्य हत्या करना नहीं बल्कि 'बहरों को सुनाना' था। वे चाहते तो भाग सकते थे लेकिन उन्होंने गिरफ्तारी दी। वे जानते थे कि फांसी का फंदा पहनकर वे जो संदेश देश को देंगे, वह जेल से बाहर रहकर दिए गए सैंकड़ों भाषणों से अधिक प्रभावी होगा। मुकदमे के दौरान उन्होंने अदालत को अपने विचारों के प्रचार का मंच बना लिया। उनकी दलीलों ने यह साबित कर दिया कि वे अपराधी नहीं बल्कि अपनी मातृभूमि के हक के लिए लड़ने वाले योद्धा हैं।

जेल के भीतर का संघर्ष भी कम गौरवशाली नहीं था। जब 23 मार्च की शाम आई तो इन तीनों ने एक-दूसरे को गले लगाया और उस गीत को गुनगुनाया, जिसने करोड़ों भारतीयों की रगों में जोश भर दिया, 'मेरा रंग दे बसंती चोला।' फांसी के तख्ते पर चढ़ते समय उनके चेहरों पर न तो कोई शिकन थी, न मृत्यु का भय। वे मुस्कुरा रहे थे क्योंकि वे जानते थे कि उनकी मृत्यु गुलामी के ताबूत में आखिरी कील साबित होगी। इन बलिदानों का प्रभाव इतना व्यापक था कि 1931 के बाद भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की दिशा पूरी तरह बदल गई। गांधी जी के अहिंसक आंदोलनों के समांतर इन युवाओं के बलिदान ने ब्रिटिश शासन के भीतर एक अनजाना भय पैदा कर दिया था। उन्हें समझ आ गया था कि अब भारत को बलपूर्वक दबाकर रखना संभव नहीं है। आज जब हम एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में सांस ले रहे हैं, तो हमें यह समझना होगा कि यह स्वतंत्रता हमें किसी समझौते के तहत उपहार में नहीं मिली है बल्कि यह भगत सिंह की मेधा, सुखदेव की रणनीति और राजगुरु के साहस के रक्त से सींची गई है।

23-24 साल की उम्र में जब युवा अपने करियर और भविष्य की चिंता करते हैं, तब इन तीनों ने इतिहास के पन्नों में अपना नाम सदा के लिए दर्ज करवा लिया था। युवा पीढ़ी को इन नायकों से यह सीखना चाहिए कि देशभक्ति केवल सीमा पर खड़े होने का नाम नहीं है, अपने कार्य के प्रति ईमानदारी, सामाजिक न्याय के प्रति संवेदनशीलता और राष्ट्र के प्रति अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन ही आधुनिक युग की देशभक्ति है। भगत सिंह ने फांसी से पहले अपनी डायरी में लिखा था कि व्यक्तियों को कुचलकर वे विचारों को नहीं मार सकते। उनके वे विचार आज भी लोकतंत्र के प्रहरी के रूप में हमारे बीच मौजूद हैं। शौर्य, विचार और अमर बलिदान की यह त्रिवेणी भारतीय चेतना के मानसरोवर में सदैव प्रवाहित होती रहेगी। इन अमर शहीदों को सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम एक ऐसे भारत का निर्माण करें, जो न केवल स्वतंत्र हो बल्कि न्यायपूर्ण, समृद्ध और वैचारिक रूप से प्रबुद्ध भी हो।

संघर्षों पर विजय के नायकः राममनोहर लोहिया

जयंती पर विशेष

चित्रा माली

सहायक प्रोफेसर गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विवि क्षेत्रीय केंद्र कोलकाता।

डॉक्टर राममनोहर लोहिया का जन्म 23 मार्च 1910 में उत्तर प्रदेश के अकबरपुर फैजाबाद में हुआ था। लोहिया जी की माता का नाम चन्द्री था और पिता का नाम हीरालाल था। लोहिया की आरंभिक शिक्षा अकबरपुर की टंडन पाठशाला और विश्वनाथ विद्यालय में हुई थी। 1925 में बंबई के प्रसिद्ध मारवाड़ी स्कूल से मैट्रिक की परीक्षा प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की। आगे की पढ़ाई के लिए वे 'सेंट्रल हिंदू ब्वायज स्कूल' बनारस हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी चले गए। यहीं से उन्होंने 1927 में इंटर मीडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण की। स्नातक की पढ़ाई कलकत्ता के विद्यासागर महाविद्यालय से हुई। स्नातक की परीक्षा पास करने के बाद पिताजी की इच्छानुसार आगे की पढ़ाई के लिए वे इंग्लैंड चले गए। लेकिन इंग्लैंड में वे अधिक समय तक रह नहीं सके। गुलाम बनाने वाले देश में रह कर पढ़ाई करना उनको उचित प्रतीत नहीं हो रहा था। इंग्लैंड में रह कर पढ़ने न पढ़ने की दुविधा से एक अंग्रेज ने ही मुक्ति दिलाई जिससे उनकी मुलाकात ग्रंथालय में हुई थी उन्होंने सलाह दी कि कुछ नया पढ़ने और सीखने का इरादा है तो बर्लिन चले जाएं,वहां ताजा और विचारोत्तेजक वातावरण मिलेगा। डॉ. लोहिया इंग्लैंड से जर्मनी चले गए। हम्बोल्ट विश्वविद्यालय में उन्होंने अर्थशास्त्र में पी-एच.डी. के लिए दाखिला लिया। इसी विश्वविद्यालय में वैज्ञानिक आइंस्टीन और प्रसिद्ध अर्थशास्त्री ई.एम.शुमाकर अध्यापक रहे हैं। बर्लिन विश्वविद्यालय में शोध निर्देशक का चुनाव स्वयं छात्र को ही करना होता था। डॉ.लोहिया ने प्रसिद्ध अर्थशास्त्री प्रोफेसर वर्नर जेम्बार्ट को अपना अध्यापक चुना लेकिन उन्हें अंग्रेजी नहीं आती थी, लोहिया ने उनसे तीन महीने का समय लिया। इन तीन महीनों में लोहिया ने जर्मन भाषा का ज्ञान हासिल कर लिया और फिर प्रोफेसर जेम्बार्ट से मिले। प्रोफेसर जेम्बार्ट लोहिया की कार्य के प्रति निष्ठा और लगन से काफी प्रभावित हुए।

डॉ.लोहिया ने उस समय के प्रसिद्ध अर्थशास्त्री प्रोफेसर वर्नर जोम्बार्ट के निर्देशन में 'भारत में नमक कर कानून' विषय पर शोध कार्य किया। यह शोध कार्य महात्मा गांधी के नमक-सत्याग्रह और उनके सामाजिक आर्थिक दर्शन को केंद्र में रख कर किया गया था। जर्मनी विश्वविद्यालय के नियम के अनुसार शोध-प्रबंध मूल्यांकन के लिए बाहर नहीं जाता था बल्कि शोध निर्देशक के अतिरिक्त विश्वविद्यालय के ही दूसरे अनुशासनों के तीन प्रोफेसर नियुक्त किए जाते थे। डॉ.लोहिया के शोध-प्रबंध के लिए शोध निर्देशक के अतिरिक्त तीन परीक्षक थे - प्रोफेसर ई.एम.शुमाकर,प्रोफेसर जांकीन और प्रोफेसर देसनार थे। मौखिकी सम्पन्न होने के बाद एक परीक्षक ने जानना चाहा कि भारत लौटने के बाद वह क्या करना चाहते हैं। जवाब में डॉ. लोहिया ने कहा कि इतना निश्चित है कि प्राध्यापक नहीं बनूंगा।

डॉ.लोहिया की जन्म तारीख पक्की नहीं थी लेकिन बावजूद इसके डॉ.लोहिया 23 मार्च को ही अपना जन्मदिन मान लिया था। प्रारंभ में कभी न कभी दोस्तों ने डॉ.लोहिया का जन्म उत्सव भी मनाया हो। लेकिन 23 मार्च 1931 के बाद लोहिया ने कभी भी अपने जन्मदिन को न तो मनाया और ना ही कभी याद रखा क्योंकि इस दिन की काली स्मृतियां उन्हें लगातार परेशान करती रहती थीं। 23 मार्च 1931 को बर्लिन में 'लीग ऑफ नेशन्स' की बैठक हो रही थी और इसी दिन लाहौर में भगत सिंह को फांसी दी जा रही थी जिसके विरोध में लोहिया ने दर्शक दीर्घा से सीटी बजाकर अपना विरोध प्रदर्शित किया। इसके कारण उन्हें सभागार से बाहर निकाल दिया गया था। बर्लिन के छात्र पढ़ाई के साथ राजनीति में भी विशेष रुचि रखते थे और सक्रिय रहते थे जिससे डॉ.लोहिया भी अछूते नहीं रहे और उन्होंने भी

प्रवासी भारतीयों की एक संस्था 'मध्य यूरोप हिंदुस्तानी संघ' की स्थापना की। भारत के बाहर प्रवासी युवकों की यह पहली संस्था थी जिसने भारतीय राष्ट्रीयता के प्रचार का कार्य किया। डॉ. लोहिया बर्लिन शहर की सभी सभाओं में जाते थे उन्होंने हिटलर की चार सभाओं में भी हिस्सा लिया था लेकिन वे नाजी पार्टी को कभी पसंद नहीं कर पाए। 1932 में बर्लिन विश्वविद्यालय से उन्हें डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त हुई। 1933 में वे जर्मनी से जहाज में मद्रास पहुंचे। डॉ.लोहिया के पास कई सारी किताबें थीं जिन्हें रास्ते में ही जर्मन सरकार ने जब्त कर लिया था। मद्रास से आगे के सफर के लिए भी उनके पास पैसे नहीं थे। मद्रास में वे जहाज से उतरने के बाद सीधे 'हिंदू' अखबार के दफ्तर पहुंचे और संपादक से मिले, लोहिया ने उन्हें बताया कि वे जर्मनी से आ रहे हैं और दो लेख देना चाहते हैं। लोहिया ने दफ्तर में ही दो लेख लिखे। 25 रुपये की राशि उन्हें मेहनताने के रूप में दी गई जिससे उनकी आगे की यात्रा का जुगाड़ हो गया। लोहिया बंगाल पहुंचे। डॉ.लोहिया के पिता ने व्यवसाय करना बंद कर दिया था और वे कांग्रेस के कार्यों के प्रति पूर्ण समर्पित हो गए थे। इसके अतिरिक्त वे हिंदी नाट्य परिषद भी चलाते थे और शाम को बड़ा बाजार की हिंदी प्रचारक पुस्तकालय में बैठते थे। जहां की एक खासियत यह थी कि वहां सभी जाति धर्म के लोग एक ही कौमी बाल्टी से पानी पीते थे। डॉ.लोहिया अपने पिता से मिले और उन्हें राजनीति में सक्रिय रहने के अपने निर्णय से अवगत करवाया। पिता के कारोबार के बंद हो जाने के कारण आर्थिक परेशानियों के चलते उन्होंने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में अर्थशास्त्र के अध्यापक बनने के लिए आवेदन किया था लेकिन उनकी जगह किसी अन्य की नियुक्ति हो गई। बी.एच.यू के लिए यह अच्छा नहीं हुआ लेकिन भारतीय राजनीति के लिए यह अच्छा साबित हुआ। 1933 के बाद डॉ. लोहिया राजनीति में सक्रिय हो गए। 1942 के 'भारत छोड़ो आंदोलन' में डॉ. लोहिया ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उपनिवेशवाद विरोधी आंदोलन में जिस उद्देश्य को लेकर डॉ.लोहिया शामिल हुए थे वही उद्देश्य देश की स्वंतत्रता के बाद भी उन्होंने कायम रखा। देश की आम जनता के हित में सरकार के कार्यों और योजनाओं पर भी पैनी नज़र रखी और सरकार की लगातार आलोचना भी करते रहे। डॉ.लोहिया राजनीति के साथ साथ साहित्य में भी विशेष रुचि रखते थे और देश के कई साहित्यकारों,कलाकारों और पत्रकारों के साथ भी उनके मित्रवत संबंध थे। इनमें मक़बूल फिदा हुसैन,कुलदीप नैयर, यू.आर. अनंतमूर्ति, रघुवंश,जे.स्वामीनाथन आदि थे। इनके साथ बैठकर वे साहित्यिक,सांस्कृतिक और कलाओं पर गहन विचार-विमर्श किया करते थे। डॉ.लोहिया ने अपने निबंध 'सगुण-निर्गुण' में सिद्धांत और व्यवहार की विस्तृत व्याख्या की है और लिखा है कि 'महात्मा गांधी के सिद्धान्तों पर नहीं, महात्मा गांधी के भूत पर जितना खर्च किया जाता है, उससे सरकारी योजना की असली शक्ल का पता चलता है।' डॉ.लोहिया का यह कथन तब की सरकार के लिए भी एक बड़ा आईना था और आज भी यह कथन प्रासंगिक है।

डॉ.लोहिया ने 'रामायण-मेला' भी आयोजित किया था जिसको लेकर धर्मनिरपेक्ष ताकतों के द्वारा उनकी आलोचना की गयी थी और आरोप भी लगाया था कि वे जनसंघ और साम्प्रदायिक ताकतों को मदद पहुंचा रहे हैं जबकि उनके द्वारा रामायण मेले का आयोजन किया गया था ना कि राम मेला का। मशहूर चित्रकार मक़बूल फिदा हुसैन को डॉ.लोहिया ने सलाह दी थी कि वे रामायण और महाभारत की कथाओं पर चित्रों की एक श्रृंखला बनाए। मक़बूल फ़िदा हुसैन की रामायण और महाभारत आधारित चित्र-श्रृंखलाएं उसी सलाह का परिणाम हैं। निम्न पद पर आसीन लोगों से और छोटे से छोटे व्यक्ति से भी लोहिया बेअदबी से कभी बात नहीं करते थे वे इसका पूरा ध्यान रखते थे कि उनके वचनों से किसी को ठेस न पहुंचे। सत्तासीन,बड़े लोगों और अकड़े लोगों के प्रति वे कठोर शब्दों का कभी-कभी इस्तेमाल भी कर लेते थे। किंतु छोटे आदमी के लिए वे इस तरह के शब्दों का इस्तेमाल न करते थे और न ही करने देते थे। वे गरीब और जरूरतमंद व्यक्ति की मदद के लिए सदैव तत्पर रहते थे। ऐसे कई हिस्से प्रचलित हैं। साथ ही वे देश के किसानों और मजदूरों से भी बहुत प्रेम करते थे। उन्होंने किसानों और मजदूरों के लिए कई लड़ाईयां भी लड़ी थी। डॉ.लोहिया ही थे जिन्होंने जमींदारी प्रथा को खत्म करने का प्रस्ताव कांग्रेस के समक्ष रखा था और किसानों की बेहतरी के लिए एक 'छह सूत्री उद्देश्य' का प्रस्ताव भी दिया था।

बैलगाड़ी यात्रा के रूप में हुई थी 25 साल पहले शुरूआत

25वें वर्ष में भव्य रूप में आज निकलेगी 'शहीद क्रांति मशाल यात्रा'

बस स्टैंड से शुरू होकर शहीद चौराहे पर होगा समापन, शहीद परिवार का होगा सम्मान

धार । शहीदों के सम्मान और राष्ट्रभक्ति की भावना को जागृत करने के उद्देश्य से आयोजित होने वाली 'शहीद क्रांति मशाल यात्रा' इस वर्ष अपने 25वें वर्ष में और अधिक भव्य स्वरूप में निकाली जाएगी। इस आयोजन की शुरुआत वर्षों पहले बैलगाड़ी यात्रा के रूप में हुई थी, जो आज 25 वर्षों में विकसित होकर एक भव्य मशाल रैली बन चुकी है। इस यात्रा में शहीदों के स्वजन शामिल होंगे। साथ ही सेवानिवृत्त न्यायाधीश श्री अनिल वर्मा मुख्य वक्ता के तौर पर शामिल होंगे।

इस संबंध में आयोजित पत्रकार वार्ता में संयोजक राजीव यादव ने बताया कि यह आयोजन किसी व्यक्ति विशेष का नहीं, बल्कि पूरे शहर के आम नागरिकों का है। उन्होंने कहा कि आमतौर पर लोग अपने जीवन में विवाह, परिवार और बच्चों के भविष्य की योजना बनाते हैं, लेकिन देश के अमर शहीदों ने अपनी पूरी जिंदगी राष्ट्र की आजादी के लिए समर्पित करने का संकल्प लिया था। उन्हीं के बलिदान के प्रति सम्मान प्रकट करने के लिए यह मशाल यात्रा निकाली जाती है, ताकि समाज में राष्ट्रप्रेम और शहादत के प्रति चेतना जागृत हो। यादव ने जानकारी दी कि इस आयोजन की शुरुआत वर्षों पहले बैलगाड़ी यात्रा के रूप में हुई थी, जो आज 25 वर्षों में विकसित होकर एक भव्य मशाल रैली बन चुकी है। इस बार शहर को 200 मोहल्लों में विभाजित कर बैठकों का आयोजन किया गया, जिसमें लगभग 900 कार्यकर्ताओं ने सक्रिय सहभागिता निभाई है।

यात्रा 23 मार्च को शाम 6 बजे बस स्टैंड से प्रारंभ होकर उत्कृष्ट सड़क मार्ग से होते हुए शहीद चौराहे पर समाप्त होगी। इस दौरान शहीद परिवारों के सम्मानित परिजन विशेष रूप से शामिल होंगे, जिनका विभिन्न 12 स्थानों पर स्वागत और सम्मान किया जाएगा। समापन स्थल पर शहीदों के नाम दीप प्रज्वलित कर नमन किया जाएगा तथा आतिशबाजी भी की जाएगी। आयोजन समिति ने यह भी बताया कि प्रयास किया जा रहा है कि शहीद चौराहे पर स्थायी रूप से एक बोर्ड लगाया जाए, जिससे आम बोलचाल में भी इस स्थान की पहचान सशक्त रूप से स्थापित हो सके। इस आयोजन का मूल उद्देश्य समाज में देशभक्ति की भावना को मजबूत करना और उन शहीदों तथा उनके परिजनों के प्रति सम्मान व्यक्त करना है, जिनके बलिदान के कारण आज देश स्वतंत्र है।

तीनों वीर शहीदों के ये स्वजन शामिल होंगे

1- विशाल नय्यरजी (शहीद सुखदेव जी के वंशज)
2- प्रशांत राजगुरुजी (शहीद राजगुरुजी के वंशज)
3- अशफ़ाक उल्ला खान (शहीद अशफ़ाकजी उल्ला खान के वंशज)

यह रहेगा यात्रा मार्ग

23 मार्च, सोमवार को यात्रा बस स्टैंड से प्रारंभ होकर पठ्ठा चौपाटी, नालछा दरवाजा, पौ-चौपाटी, राजबाड़ा, आनंद चोपाटी, जवाहर मार्ग, मोहन टाकीज चौराहा व उदाजीराव चौराहा होते हुए शहर के विभिन्न मार्गों से गुजरते हुए अंत में शहीद चौक उत्कृष्ट मार्ग धार पर पहुंचेगी।

स्वच्छ सर्वेक्षण 2026: धार में 'लाल बाग' से 'इंदौर नाका' तक गूँजा स्वच्छता का संदेश

नागरिकों से अपील, कहा – 'खरीदारी के लिए घर से लाएं कपड़े की थैली'

धार । नगर पालिका परिषद धार द्वारा स्वच्छ सर्वेक्षण 2026 के संकल्प को धरातल पर उतारने के उद्देश्य से आज 'प्लग रन 2026' का सफल आयोजन किया गया। लाल बाग परिसर से प्रारंभ होते हुए इंदौर नाके तक के पूरे मार्ग पर प्रतिभागियों ने दौड़ते हुए 'प्लगिंग' (कचरा संग्रहण) की, जिससे राहगीरों और स्थानीय दुकानदारों के बीच स्वच्छता के प्रति सकारात्मक संदेश पहुँचा। अभियान के दौरान मुख्य नगर पालिका अधिकारी कुंवर विश्वनाथ सिंह ने बाजार क्षेत्र का भ्रमण कर एक अनूठी और प्रेरक पहल की।

सब्जी मंडी और प्रमुख बाजारों में खरीदारी करने आए लोगों को देखकर सीएमओ स्वयं उनके पास पहुँचे और उनसे निवेदन किया। उन्होंने नागरिकों से आग्रह करते हुए कहा कि, 'जब भी आप घर से खरीदारी करने निकलें, तो अपने साथ कपड़े की थैली अवश्य लाएं।' उन्होंने नागरिकों को प्लास्टिक के दुष्प्रभावों के प्रति जागरूक करते हुए कहा कि सिंगल यूज प्लास्टिक न केवल पर्यावरण के लिए घातक है, बल्कि यह हमारे शहर की स्वच्छता रैंकिंग को भी प्रभावित करता है। प्लास्टिक के उपयोग से बचकर ही हम धार को एक आदर्श स्वच्छ शहर बना सकते हैं। रविवार प्रातः 7 बजे आयोजित इस कार्यक्रम में नगर पालिका के अधिकारियों, कर्मचारियों और जागरूक युवाओं ने बड़ी संख्या में भाग लिया। लाल बाग परिसर में उपस्थित जनसमूह ने आगामी स्वच्छ सर्वेक्षण में धार को प्रदेश और देश में अग्रणी स्थान दिलाने का सामूहिक संकल्प लिया। नगर पालिका प्रशासन ने स्पष्ट किया कि इस प्रकार के जागरूकता अभियान निरंतर जारी रहेंगे ताकि जन-भागीदारी से 'क्लीन सिटी-ग्रीन सिटी' का लक्ष्य प्राप्त किया जा सके।इस अवसर पर मुख्य नगर पालिका अधिकारी ने शहर की विभिन्न सामाजिक संस्थाओं एवं जिले के समस्त गणमान्य नागरिकों से इस पुनीत कार्य में जुड़ने की विशेष अपील की। उन्होंने कहा कि– 'जो भी संस्था या प्रबुद्ध नागरिक स्वच्छता की इस पहल में अपना सहयोग देना चाहते हैं, वे निसंकोच आगे आएं। नगर पालिका परिषद उनके साथ मिलकर कार्यक्रम आयोजित करेगी और उन्हें हर संभव आवश्यक सहयोग प्रदान करेगी।'

खास-खास

@ नगर पालिका परिषद धार द्वारा स्वच्छ सर्वेक्षण 2026 के संकल्प को धरातल पर उतारने के उद्देश्य से 'प्लग रन 2026' का आयोजन किया।

@ लाल बाग परिसर से प्रारंभ होते हुए इंदौर नाके तक के पूरे मार्ग पर प्रतिभागियों ने दौड़ते हुए 'प्लगिंग' (कचरा संग्रहण) की, जिससे राहगीरों और दुकानदारों के बीच स्वच्छता के प्रति सकारात्मक संदेश पहुँचा।

अधिवक्ता सहित 40 किसान को होगा नुकसान, सीएम हेल्पलाइन में की शिकायत

सोहागपुर। जब एक अधिवक्ता के साथ पटवारी गड़बड़ी करता है। तब आम नागरिकों का कौन है रखवाला । हुआ यू कि रघुवंशीपुरा निवासी अधिवक्ता एवं भाजपा के सक्रिय सदस्य संजय तिवारी ने आरोप लगाया है कि ग्राम गोहनादेह के पटवारी ने मेरी हल्का नम्बर 15/32,खसरा नंबर 1/1 एवं 1/ 3 में 8 एकड़ 24 डिसमिल की भूमि का आनलाइन पंजीकरण नहीं करवाया। इससे मुझे प्रति क्विंटल 4 सौ रूपये का नुक़सान होगा। मामले में देरी होने के कारण वकील संजय तिवारी ने सीएम हेल्पलाइन पर 37318490 शिकायत की है । इस संबंध में श्री तिवारी ने बताया कि मैंने बीसियों बार ग्राम पटवारी भदोरिया को कहा था।कि हमारी भूमि जिसमें गेहूं की फसल लगाई गई है।उसका पंजीकरण कर देवें। पटवारी मुझे आश्वासन देता रहा कि आप वकील साहब बैफिक्र रहे ।आपका पंजीकरण कर दूंगा। जब तारीख निकली तो देखा हमारा पंजीकरण ही नहीं किया गया था। मैंने इसकी सूचना तहसीलदार आर एस झरबड़े को दी । उन्होंने कहा कि अब हम क्या कर सकते हैं। बाद में मजबूर हो कर सीएम हेल्पलाइन पर शिकायत दर्ज कराई है। मेरी भूमि से करीबन 125 से 150 क्विंटल उत्पादन होता। इससे मुझे प्रति क्विंटल 5 सौ रुपये का नुक़सान होगा। आपने आगे बताया कि हमारे ग्राम में ऐसे करीबन 40 से अधिक किसानों का पटवारी ने पंजीकरण का झांसा दे दे देकर नहीं किया है। यह देखना दिलचस्प होगा कि प्रदेश सरकार अपने आप को किसानों की हितैषी सरकार कहती है।वह पीड़ित किसानों की नुकसान की भरपाई कैसे करती है। यह देखने वाली बात रहेगी।

विदिशा सभी वर्गों में प्रथम रहा

प्रदेश स्तरीय लागोरी प्रतियोगिता बनखेड़ी में संपन्न , 32 टीमों के करीबन 4 सौ प्रतिभागी शामिल

सोहागपुर। प्रदेश लागोरी संघ के तत्वावधान में राज्य स्तरीय जूनियर एवं सब-जूनियर लागोरी प्रतियोगिता का आयोजन बनखेड़ी के जारारिया ग्रार्डन में मुख्य अतिथि सांसद प्रतिनिधि नीतिराज पटेल, रामेश्वर जरिया, शरद पटेल, संजीव चौधरी , धीरू तिवारी के अलावा प्रदेश रांगोली संघ अध्यक्ष एवं सोहागपुर नगर पंचायत परिषद पार्षद आशीष मालवीय विश्वकर्मा विशेष रूप से उपस्थित थे ।इस प्रदेश स्तरीय रांगोली प्रतियोगिता में प्रदेश की 32 टीमों के करीबन 4 सौ खिलाड़ियों में बच्चे एवं बच्चियां ने भाग लेकर उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।

तालियों की गड़गड़ाहट के बीच उपस्थित जनसमुदाय ने खिलाड़ियों का उत्साह वर्धन किया। कार्यक्रम में अतिथियों ने विजेताओं को पुरस्कृत करते ट्राफियां प्रदान की। इस अवसर पर अतिथियों ने कार्यक्रम को संबोधित किया। प्रदेश लागोरी संघ अध्यक्ष आशीष मालवीय विश्वकर्मा ने बताया कि प्रतियोगिता में

सब जूनियर बालिका वर्ग प्रथम स्थान विदिशा,द्वितीय स्थान रायसेन , तृतीय स्थान नर्मदापुरम, जूनियर बालिका वर्ग में प्रथम स्थान विदिशा, द्वितीय स्थान रायसेन तृतीय स्थान नरसिंहपुर, सब जूनियर बालक वर्प्रथम स्थान विदिशा,द्वितीय स्थान रायसेन,तृतीय स्थान भोपाल, जूनियर बालक वर्ग,प्रथम स्थान विदिशा,द्वितीय स्थान नर्मदापुरम तृतीय स्थान रायसेन ने विजयश्री हासिल की। कार्यक्रम में प्रदेश लागोरी संघ अध्यक्ष आशीष मालवीया विश्वकर्मा , महासचिव आकाश बंशकार, कोषाध्यक शिवम दुबे लागोरी संघ नर्मदापुरम के सचिव पवन जी, उप सचिव हेमंत ,देवेंद्र उरहा , कलीराम अहिरवार , मध्य प्रदेश टारगेट बॉल संघ के महासचिव अभिषेकसिंह राजपूत के अलावा कोच एवं रेफरी आदि उपस्थित थे।

'सतपुड़ा की रानी' पचमढ़ी में पर्यटन को बढ़ावा

प्राकृतिक सौंदर्य, आस्था और एडवेंचर का अनोखा संगम, पर्यटकों को मिलेगी सुरक्षित, सुविधाजनक यात्रा

सोहागपुर। नर्मदापुरम जिले सतपुड़ा पर्वत श्रंखला की वादियों में बसी 'सतपुड़ा की रानी' पचमढ़ी अपने मनमोहक प्राकृतिक सौंदर्य, शांत वातावरण, झरनों की मधुर ध्वनि और आध्यात्मिक स्थलों के कारण देश-विदेश के पर्यटकों का प्रमुख आकर्षण बनी हुई है। पर्यटन को और अधिक सुगम, व्यवस्थित एवं आकर्षक बनाने के उद्देश्य से जिला पर्यटन कार्यालय, नर्मदापुरम द्वारा पचमढ़ी के प्रमुख पर्यटन स्थलों की एक विस्तृत एवं उपयोगी गाइड जारी की गई है। यह गाइड पर्यटकों को न केवल विभिन्न स्थलों की जानकारी उपलब्ध कराती है, बल्कि यह भी बताती है कि किन स्थानों तक कैसे पहुँचना है, उनकी दूरी कितनी है तथा कहाँ अनुमति आवश्यक है। इससे पर्यटकों की यात्रा अधिक सुरक्षित, सुविधाजनक और यादगार बन सकेगी।

हर कदम पर नया अनुभव– पचमढ़ी में आस्था, इतिहास और प्रकृति का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। धार्मिक स्थलों में जटाशंकर गुफा, गुप्त महादेव, बड़ा महादेव मंदिर तथा चौरागढ़ महादेव विशेष आकर्षण हैं। वहीं पांडव गुफाएं ऐतिहासिक एवं पौराणिक महत्व के लिए प्रसिद्ध हैं। प्राकृतिक सौंदर्य के अंतर्गत बी फॉल (जमुना प्रपात), अप्सरा विहार, डचेस फॉल तथा रजत प्रपात पर्यटकों को आकर्षित करते हैं। सूर्योदय एवं सूर्यास्त के अद्भुत दृश्यों के लिए धूपगढ़, प्रियदर्शिनी पॉइंट, हांडी खोह, ईको पॉइंट और ग्रीन वैली प्रमुख स्थल हैं। इसके अलावा पचमढ़ी झील, बेगम पैलेस तथा सतपुड़ा राष्ट्रीय उद्यान जैसे स्थल भी यात्रा को और अधिक खास बनाते हैं।

पर्यटकों के लिए जरूरी सुझाव– गाइड में पर्यटकों को आवश्यक दिशा-निर्देश भी दिए गए हैं, जिनमें कुछ स्थलों के लिए वन विभाग की अनुमति, निर्धारित समय एवं मार्गों का पालन, प्लास्टिक उपयोग से बचाव तथा एडवेंचर स्थलों पर गाइड लेना अनिवार्य किया गया है बताया गया है। तथा 'स्वच्छ पचमढ़ी, सुंदर पचमढ़ी' के संदेश के साथ पर्यावरण संरक्षण पर भी विशेष जोर दिया गया है।

हर मौसम में खास, हर पल यादगार

पचमढ़ी में लगभग 15 से 20 प्रमुख पर्यटन स्थल हैं। जो प्रकृति, रोमांच एवं आध्यात्मिक अनुभव का अनूठा संगम प्रस्तुत करते हैं। जिला पर्यटन कार्यालय द्वारा जारी यह नई गाइड पर्यटकों को एक संपूर्ण, सुरक्षित और यादगार यात्रा अनुभव प्रदान करने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल साबित होगी।

पीएम मोदी ने देश में सर्वाधिक समय तक सेवा का कीर्तिमान स्थापित किया

मुख्यमंत्री ने पीएम मोदी को दी बधाई

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी को आज भारत में सर्वाधिक समय तक शासन प्रमुख के रूप में सेवा का कीर्तिमान स्थापित करने पर बधाई दी है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि भारत के नागरिक प्रधानमंत्री श्री मोदी के प्रति निरंतर स्नेह, विश्वास और समर्थन की भावना को अभिव्यक्त कर रहे हैं।

प्रधानमंत्री श्री मोदी ने सिक्किम के पूर्व मुख्यमंत्री श्री पवन कुमार चामलिंग के 8,930 दिनों के शासन करने के रिकार्ड को पीछे छोड़ा है। उनके सार्वजनिक जीवन के 8931 दिन गुजरात के मुख्यमंत्री और देश के प्रधानमंत्री के रूप में दर्शाते हैं कि उन्होंने राष्ट्र प्रथम के सिद्धांत पर कार्य करते हुए अपनी भूमिका को यादगार बनाया है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में विकसित भारत के ध्येय के साथ गरीब कल्याण से लेकर वैश्विक मंच पर हर क्षेत्र में देश की प्रतिष्ठा बढ़ी है। प्रधानमंत्री श्री मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व ने देश को विकास और सुशासन की नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने मंगलकामनाएं देते हुए विश्वास व्यक्त किया है कि मां भगवती प्रधानमंत्री श्री मोदी को ऊर्जावान बनाए रखें। संपूर्ण विश्व में भारत की साख बढ़ाने वाले हमारे प्रधानमंत्री श्री मोदी जी के नेतृत्व में हमारा राष्ट्र निरंतर प्रगति, समृद्धि और वैभव के पथ पर अग्रसर बना रहेगा।

प्रधानमंत्री श्री मोदी के मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री पद के दायित्व की वर्षवार अवधि की चर्चा करें तो वे वर्ष 2001 में गुजरात के मुख्यमंत्री बने थे। वर्ष 2002 में गुजरात विधानसभा के निर्वाचन के बाद वे दूसरी बार, वर्ष 2007 में तीसरी बार और वर्ष 2012 में चौथी बार गुजरात के मुख्यमंत्री बने। श्री मोदी वर्ष 2014 के लोक सभा चुनाव में पूर्ण बहुमत प्राप्त कर प्रधानमंत्री बने। वर्ष 2019 में पहले से भी बड़े जनादेश के साथ उनकी वापसी हुई और वे दूसरी बार प्रधानमंत्री बने। श्री मोदी ने वर्ष 2024 में तीसरी बार प्रधानमंत्री बन कर इतिहास रचा।

बेटे-बहू ने सास-ससुर को डंडों से पीटा

अस्पताल में भर्ती महिला बोली- हमें अधमरा कर दिया, रिपोर्ट तो करेंगे

छतरपुर (नप्र)। छतरपुर में पारिवारिक विवाद के चलते बहू और बेटे ने अपने ही माता-पिता पर हमला कर दिया। इस मारपीट में 60 वर्षीय आशा वाल्मीकि और उनके पति गंभीर रूप से घायल हो गए। घटना सिविल लाइन थाना क्षेत्र की बताई जा रही है। दोनों घायलों को इलाज के लिए जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। घायल आशा वाल्मीकि ने आरोप लगाया है कि उनके बेटे ने कुछ साल पहले प्रेम विवाह किया था। शादी के बाद से ही बहू का व्यवहार परिवार के प्रति ठीक नहीं था। आशा के अनुसार, बहू दहेज में कुछ नहीं लाई थी, लेकिन अब घर और संपत्ति में हिस्सा मांग रही है।

महिला बोली– पति बीमार रहते हैं, खुद मेहनत करने चली जाती– आशा ने बताया कि उनके पति बीमार रहते हैं, और वह स्वयं मेहनत कर घर चलाती हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि बहू घर के काम में सहयोग नहीं करती और अक्सर विवाद करती रहती है। बीती रात यह विवाद इतना बढ़ गया कि बहू ने अपने पति के साथ मिलकर सास-ससुर पर लाठी-डंडों से हमला कर दिया।

सिर, हाथ-पैर में आई चोट– इस हमले में आशा वाल्मीकि के सिर, आंख, हाथ-पैर और शरीर के अन्य हिस्सों में गंभीर चोटें आई हैं। उनके पति का हाथ टूट गया है। मारपीट के बाद दोनों घायल सीधे जिला अस्पताल पहुंचे, जहां उनका इलाज जारी है।

फिलहाल पीड़िता ने पुलिस में औपचारिक शिकायत दर्ज नहीं कराई है, लेकिन उन्होंने बेटे और बहू के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराने की बात कही है। पुलिस का कहना है कि अक्सर पारिवारिक मामलों में लोग शिकायत दर्ज कराने से बचते हैं। हालांकि, शिकायत मिलने के बाद मामले की जांच की जाएगी और उचित कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

मथुरा कांड पर भड़के बागेश्वर बाबा

फरसा वाले बाबा के हत्यारों को बीच चौराहे दो फांसी, अब सहेंगे नहीं

छतरपुर (नप्र)। मथुरा के छाता में गोतस्करों द्वारा फरसा वाले बाबा उर्फ चंद्रशेखर की कुचलकर हत्या किए जाने के मामले ने अब सियासी और धार्मिक मोड़ ले लिया है। बागेश्वर धाम के पीठाधीश्वर धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री ने इस घटना पर तीखी प्रतिक्रिया देते हुए दोषियों को फांसी देने की मांग की है। साधना में लीन होने के बावजूद महाराज ने मंच से स्पष्ट किया कि सनातन के लिए आवाज उठाने वालों को दबाने की कोशिश हो रही है।

जब साधना के बीच मंच पर आए बागेश्वर सरकार– धीरेंद्र शास्त्री इन दिनों माता रानी की विशेष

साधना कर रहे हैं। शनिवार शाम जब वे भक्तों को दर्शन देने पहुंचे, तो उनके चेहरे पर फरसा बाबा की मौत का दुख साफ दिखा। उन्होंने कहा, फरसा बाबा जैसा समर्पित गोरक्षक विरले ही मिलता है। उन्हें जिस तरह कुचलकर मारा गया, वह जघन्य अपराध है। मेरी बालाजी से प्रार्थना है कि दोषियों को कड़ी सजा मिले और बाबा को चरणों में स्थान मिले।

मुझे और मेरे परिवार को मिल रही जान से मारने की धमकियां– बागेश्वर बाबा ने इस दौरान एक बड़ा खुलासा करते हुए बताया कि हिंदुत्व की बात करने पर उन्हें और उनके परिवार को लगातार जान से मारने की धमकियां मिल रही हैं। उन्होंने भावुक होकर कहा कि अगर हम खुद मैदान में नहीं उतर सकते, तो कम से कम उन योद्धाओं के साथ तो खड़े हों जो धर्म के लिए अपनी जान दांव पर लगा रहे हैं।

कौन थे फरसा वाले बाबा और क्या था पूरा मामला?– मूल रूप से फिरोजाबाद के रहने वाले बाबा चंद्रशेखर 8 साल की उम्र में ही वैराग्य धारण कर चुके थे। अयोध्या में राम जन्मभूमि आंदोलन का हिस्सा रहे बाबा ने पिछले कई वर्षों से ब्रज को अपनी कर्मभूमि बनाया था। धीरेंद्र कृष्ण शास्त्री, बागेश्वर धाम ने कहा गोरक्षक होना कोई गुनाह नहीं है, लेकिन जिस तरह तस्करों ने क्रूरता की हदें पार कीं, उसके लिए सिर्फ फांसी ही एकमात्र न्याय है। सनातन योद्धाओं को इस तरह निशाना बनाना बर्दाश्त नहीं किया जाएगा।

तनावपूर्ण बना है मामला– बता दें कि फरसा बाबा की मौत के बाद मथुरा का माहौल बेहद तनावपूर्ण बना हुआ है। दिल्ली-आगरा हाईवे पर हुए उपद्रव के बाद इलाके में भारी पुलिस बल के साथ सेना की टुकड़ी भी तैनात की गई है।

बाइक चोरी कर घूम रहा था आरोपी, पुलिस ने पकड़ा

दूध के केन समेत बाइक बरामद, आरोपी पर पहले से 38 से अधिक अपराध दर्ज

भोपाल (नप्र)। भोपाल के टीटी नगर थाना पुलिस ने एक वाहन चोर को गिरफ्तार किया है। आरोपी के कब्जे से चोरी गई बाइक के साथ दूध के दो बड़े केन और एक छोटा ढबरा बरामद किया गया है। जब्त सामान की कुल कीमत करीब 25 हजार रुपए आंकी गई है।

पुलिस के अनुसार, 6 मार्च 2026 को फरियादी मुकेश मीणा ने अपने बेटे मनोहर मीणा के साथ थाने पहुंचकर शिकायत दर्ज कराई थी। उन्होंने बताया कि वे जीटीवी कॉम्प्लेक्स के पीछे दूध देने गए थे और जल्दबाजी में बाइक की चाबी वाहन में ही लगी छोड़ दी थी। वापस लौटने पर बाइक और उसमें रखे दूध के

केन व ढबरे गायब मिले। शिकायत पर अपराध क्रमांक 117/26 धारा 303(2) बीएनएस के तहत मामला दर्ज कर जांच शुरू की गई।

विवेचना के दौरान थाना प्रभारी निरीक्षक गौरव सिंह दोहर के नेतृत्व में टीम गठित कर वाहन की तलाश शुरू की गई। इसी दौरान मुखबिर से सूचना मिली कि एक व्यक्ति सुनहरी बाग क्षेत्र में संदिग्ध हालत में घूम रहा है। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर संदिग्ध को पकड़ा और पूछताछ की।

आरोपी ने अपना नाम बादशाह बेग (42) निवासी अरेरा हिल्स बताया और पूछताछ में 10-12 दिन पहले उक्त बाइक चोरी करना स्वीकार कर लिया। जांच में बरामद बाइक उसी मामले की पाई गई। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से बाइक, दो बड़े दूध के केन और एक छोटा ढबरा जब्त किया। पुलिस ने बताया कि आरोपी के खिलाफ पहले से 38 से अधिक आपराधिक प्रकरण दर्ज हैं। मामले में आगे की कार्रवाई जारी है।

संक्षिप्त समाचार

नगद इनाम की घोषणा

विदिशा (निप्र)। पुलिस अधीक्षक श्री रोहित काशवानी के द्वारा थाना सिविल लाइन विदिशा में दर्ज अपराध क्रमांक 33/2026 की विभिन्न धाराओ के दो फरार आरोपी आदित्य यादव निवासी धर्मकांटा गंजबासौदा और वासु पुत्र हरपाल सिंह भदौरिया निवासी करणपुरा इटावा की सूचना देने वालो को क्रमश : तीन-तीन हजार रूपए (प्रत्येक पर) नगद राशि देने की उद्घोषणा की है। सूचनाकर्ता चाहे तो उसका नाम गोपनीय रखा जाएगा।

कलेक्टर, एसपी ने बाड़ी पहुंचकर मृतक किसान के परिजनों को दी सांत्वना

रायसेन (निप्र)। रायसेन जिले के बाड़ी निवासी किसान नर्मदा कहार की गत दिवस थ्रेसर की चपेट में आने से मृत्यु होने हो गई थी। कलेक्टर श्री अरुण कुमार विश्वकर्मा तथा एसपी श्री आशुतोष गुप्ता ने बाड़ी में मृतक नर्मदा कहार के घर पहुंचकर परिजनों को ढांढस बंधाया। उन्होंने परिजनों को सांत्वना देते हुए कहा कि दुख की इस घड़ी में प्रशासन उनके साथ है। उन्होंने एसडीएम को निर्देशित किया कि मृतक नर्मदा कहार के परिवार को कृषक कल्याण योजना के तहत 04 लाख रुपए की सहायता राशि प्रदाय किए जाने हेतु कार्यवाही यथाशीघ्र पूर्ण की जाए।

ग्राम बिलोरी में पत्थरों के अवैध उत्खनन पर प्रभावी कार्यवाही

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता के निर्देशन में आज प्रभारी खनिज अधिकारी एवं खनिज निरीक्षक द्वारा खनिज अमले की टीम के साथ विदिशा तहसील के ग्राम विलौरी में पत्थरों के उत्खनन पर प्रभावी कार्यवाही की गई है। कार्रवाई करते हुए उत्खनन किए गए फर्शी, पत्थरों को हथौड़े से तोड़कर नष्ट किया गया एवं उत्खनन में प्रयुक्त हथौड़े, छैनी, सब्बल, गुनिया इत्यादि उपकरण सामग्री जप्त किए गए हैं। इसके अतिरिक्त प्रभारी खनिज अधिकारी ने बताया कि जिले में भ्रमण के दौरान 2 डंपरों द्वारा खनिज मुरम का अवैध परिवहन करते पाए जाने पर उक्त डंपरों को जप्त कर पुलिस थाना करारिया एवं नटेरन में सुरक्षार्थ रखे जाने की कार्यवाही भी की गई जिनके प्रकरण कलेक्टर न्यायालय में प्रस्तुत किए जाने की कार्यवाही की जाएगी।

ग्राम बिलोरी में पत्थरों के अवैध उत्खनन पर प्रभावी कार्यवाही

विदिशा (निप्र)। कलेक्टर श्री अंशुल गुप्ता के निर्देशन में आज प्रभारी खनिज अधिकारी एवं खनिज निरीक्षक द्वारा खनिज अमले की टीम के साथ विदिशा तहसील के ग्राम विलौरी में पत्थरों के उत्खनन पर प्रभावी कार्यवाही की गई है। कार्रवाई करते हुए उत्खनन किए गए फर्शी, पत्थरों को हथौड़े से तोड़कर नष्ट किया गया एवं उत्खनन में प्रयुक्त हथौड़े, छैनी, सब्बल, गुनिया इत्यादि उपकरण सामग्री जप्त किए गए हैं। इसके अतिरिक्त प्रभारी खनिज अधिकारी ने बताया कि जिले में भ्रमण के दौरान 2 डंपरों द्वारा खनिज मुरम का अवैध परिवहन करते पाए जाने पर उक्त डंपरों को जप्त कर पुलिस थाना करारिया एवं नटेरन में सुरक्षार्थ रखे जाने की कार्यवाही भी की गई जिनके प्रकरण कलेक्टर न्यायालय में प्रस्तुत किए जाने की कार्यवाही की जाएगी।

जिले में अनेक स्थानों पर जल गंगा संवर्धन अभियान के तहत अनेक जल संरक्षण गतिविधियां आयोजित

सीहोर (निप्र)। शासन के निर्देशानुसार प्रदेश के साथ ही सीहोर जिले मे 19 मार्च से 30 जून तक जल गंगा संवर्धन अभियान चलाया जा रहा है। अभियान के तहत जनभागीदारी के माध्यम से कुओं, तालाओं, नदियों एवं अन्य जल स्त्रोतों की साफ सफाई एवं गहरीकरण का कार्य किया जा रहा है। इसके साथ ही आमजन को जल संरक्षण के प्रति जागरूक भी किया जा रहा है। अभियान के तहत जल स्त्रोतों के जीर्णोद्धार के लिए जनप्रतिनिधि, अधिकारी एवं नागरिक मिलकर श्रमदान कर रहे हैं, ताकि जल स्त्रोतों का संरक्षण हो सके। इसी क्रम जल संरक्षण गतिविधियों के अंतर्गत 20 मार्च को बुधनी के वार्ड क्रमांक 07 में पुराने बोरवेल की सफाई की गई और मोटर पंप डालकर बोर को चालू किया गया, जिससे वहां के नागरिकों को सुलभ पेयजल उपलब्ध हो सकेगा। उल्लेखनीय है कि जल गंगा संवर्धन अभियान के अंतर्गत जिले में जल संरक्षण एवं संवर्धन से संबंधित खेत, तालाब, अमृत सरोवर, परकोलेशन टैंक, डगवेल, तालाब जीर्णोद्धार, जनभागीदारी के कार्य, कूप एवं बाउंड्री मरम्मत के कार्य किए जा रहे हैं। जल गंगा संवर्धन अभियान का प्रमुख उद्देश्य जनभागीदारी से जल संरक्षण तथा संवर्धन सुनिश्चित करना है। इस अभियान के अंतर्गत समाज की भागीदारी तथा और विभिन्न सहयोगी विभागो की समेकित पहल से जल संरक्षण संरचनाओं के निर्माण, भूजल संवर्धन, पूर्व से मौजूद जल संग्रहण संरचनाओं की साफ सफाई एवं जीर्णोद्धार का कार्य किया जा रहा है। अभियान के तहत जल संरक्षण जागरूकता के लिए अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया भी किया जा रहा है।

आईएएस कैडर के 10 सदस्यीय दल ने विदिशा के ग्रामों का भ्रमण कर योजनाओं की क्रियान्वयन स्थिति को जाना

गौशाला का अवलोकन, स्व सहायता समूह की महिलाओं और किसानों से संवाद किया

विदिशा (निप्र)। आईएएस कैडर के 10 सदस्यीय दल द्वारा आज विदिशा जिले में केंद्र व राज्य सरकार द्वारा क्रियान्वित कार्यों व शासकीय योजनाओं की क्रियान्वयन स्थिति का जायजा लिया गया है। टीम लीडर आईएएस श्री जसकरण सिंह सहित उनकी 10 सदस्यीय टीम विदिशा के विभिन्न ग्रामों में भ्रमण कर शासकीय योजनाओं की क्रियान्वयन स्थिति से रूबरू हुए हैं। इस दौरान उन्होंने ग्रामों में योजनाओं के कार्यों की भूरि-भूरि प्रशंसा भी की है।

टीम सदस्यों द्वारा सबसे पहले सुनपुरा गांव में पहुंचकर यहां संचालित आंगनबाड़ी के कार्यों का अवलोकन किया उन्होंने आंगनवाड़ी में दर्ज बच्चों को प्रदाय पोषण आहार सहित अन्य सुविधाओं के बारे में जाना है। उन्होंने आंगनबाड़ी में पदस्थ कार्यकर्ता व सहायिका से संवाद कर बच्चों की अच्छी देखभाल, भरण-पोषण व शिक्षा हेतु क्या-क्या कार्य किए जा रहे हैं के संबंध में जाना।

इस दौरान उन्होंने यहां पंचायत भवन का अवलोकन भी किया और ग्राम में शासकीय योजनाओं के कार्यों को जाना है। साथ ही साथ गोवंश के लिए बनाई गई गौशाला भी देखी, उन्होंने गौशाला में गौवंश के लिए की गई व्यवस्थाओं के संबंध में भी जाना। इसके बाद उन्होंने ग्राम की सहायता समूह की महिला सदस्यों के कार्यों को भी महिला सदस्यों से संवाद कर जाना है स्व सहायता समूह की महिला सदस्यों ने भी दल के सदस्यों को अपने अनुभव बताते हुए कहा कि

किस तरह उन्होंने आजीविका मिशन की मदद से स्व सहायता समूह से जुड़कर अपनी आय को बढ़ाया है और अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को सुधारा है। इस दौरान ग्राम की ड्रोन दीदी से भी टीम सदस्यों ने संवाद किया।

इसके अतिरिक्त टीम सदस्यों द्वारा ग्राम बागरी में निर्माणाधीन आवास कॉलोनी का अवलोकन किया। उन्होंने आवास कॉलोनी में हितग्राहियों को दी जाने वाली सुविधाओं के बारे में भी पूछताछ की। टीम सदस्यों द्वारा इमलिया ग्राम में प्रायमरी एग्रीकल्चरल क्रेडिट सोसाइटी (पैक्स) गतिविधियों के माध्यम से प्रदाय सुविधाओं के बारे में उपस्थित किसानों से संवाद कर जाना। किसानों ने पैक्स गतिविधि के माध्यम से दी जा रही सुविधाओं को बेहतर बताया। पैक्स के माध्यम से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने की दिशा में किये जा रहे कार्यों से किसानों ने टीम को अवगत कराया। इस दौरान उन्होंने बताया कि खाद्य वितरण, भंडारण कृषि व्यवसाय सहित अन्य सेवाओं से किसानो की आय बढ़ रही है और वह लाभान्वित हो रहे हैं।

भ्रमण के दौरान जनपद सीईओ श्री आयुष अग्रवाल, जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक मर्यादित के सीईओ श्री विनय प्रकाश सिंह सहित अन्य अधिकारी मौजूद रहे।

आमला विधायक डॉ.योगेश पंडाग्रे ने ग्राम बेहडी में 33/11 केव्ही विद्युत उपकेंद्र का किया भूमि पूजन

14 गांवों को मिलेगी बेहतर विद्युत आपूर्ति

बैतूल (निप्र)। ग्राम बेहडी में ग्रामीणों की लंबे समय से चली आ रही मांग को ध्यान में रखते हुए आमला विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे ने 20 मार्च को 33/11 केव्ही 5 एमव्हीए विद्युत उपकेंद्र का भूमि पूजन किया। इस उपकेंद्र की लागत 2.50 करोड़ रुपये है और इसकी क्षमता 5 एमव्हीए है। इस उपकेंद्र से 03 नम्बर पम्प कृषि फीडर और 01 नम्बर घरेलू फीडर के माध्यम से लगभग 14 गांवों को विद्युत आपूर्ति की जाएगी, जिनमें बेहडी, बारंगवाडी, मंगारा, कोठिया, चिखलार, नरेरा, मुवारिया, गजाढाना, रेंगाढाना, सरेकाडोल, भुमकाढाना, भुड़काल ढाना, मोहन ढाना और जमदेही कला शामिल हैं।

इस अवसर पर आमला विधायक डॉ पंडाग्रे ने कहा कि इस उपकेंद्र से क्षेत्र के विकास को नई गति मिलेगी और ग्रामीणों को बेहतर विद्युत आपूर्ति मिलेगी। कार्यक्रम में श्री नरेंद्र गड़ेकर, श्री सतीश हारोडे, श्री यशवंत यादव, श्री महेश मर्सकोले, श्री अशोक नागले, जनपद सदस्य श्रीमती सीमा रतन धुर्वे, श्री रवि सूर्यवंशी, श्री माखन उईके, मनोज विश्वकर्मा, श्री भररु यादव और विद्युत विभाग के एई श्री डोंगरे, जेई श्री चंदेलकर, डीई श्री बुसारे सहित ग्रामीण उपस्थित थे। इसके अलावा आमला विधायक डॉ. पंडाग्रे ने ग्राम जमदेही कला में जनजातीय बस्ती विकास योजना से स्वीकृत सीसी रोड का भूमि पूजन किया और ग्राम हसलपुर में मुख्यमंत्री विशेष निधि से स्वीकृत सामुदायिक भवन का भी भूमि पूजन किया।

सीएमएचओ ने जिला अस्पताल का निरीक्षण कर उपचार व्यवस्थाओं का लिया जायजा

रायसेन (निप्र)। जिले में नागरिकों को शासकीय अस्पतालों और स्वास्थ्य केन्द्रों में बेहतर उपचार मिले, इसके लिए कलेक्टर श्री अरूण कुमार विश्वकर्मा द्वारा सीएमएचओ डॉ एचएन मांडरे को जिले में शासकीय स्वास्थ्य संस्थाओं का निरीक्षण कर स्वास्थ्य सुविधाओं को और अधिक बेहतर बनाने के निर्देश दिए गए हैं।

इसी क्रम में सीएमएचओ डॉ एचएन मांडरे द्वारा शुक्रवार को जिला अस्पताल का आकस्मिक निरीक्षण किया गया। इस दौरान उन्होंने विभिन्न वार्डों में जाकर व्यवस्थाएं देखीं और भर्ती मरीजों से उपचार संबंधी जानकारी ली। सीएमएचओ द्वारा दवा वितरण कक्ष तथा स्टोर रूम का भी निरीक्षण कर दवाओं की उपलब्धता तथा स्टॉक रजिस्टर का अवलोकन किया। उन्होंने सिविल सर्जन डॉ यशपाल बाल्यान को मरीजों को बेहतर उपचार उपलब्ध कराने तथा नियमित साफ़-सफाई कराने के निर्देश दिए।

सीएमएचओ डॉ हुरमाड़े ने सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र घोड़ाडोंगरी का किया आकस्मिक निरीक्षण

बैतूल (निप्र)। मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. मनोज कुमार हुरमाड़े ने 20 मार्च को सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र घोड़ाडोंगरी का आकस्मिक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान कई अधिकारी एवं कर्मचारी ड्यूटी से नदारद पाए गए, जिन्हें कारण बताओं नोटिस जारी किए गए है।

निरीक्षण के दौरान चिकित्सा अधिकारी डॉ. सुरेन्द्र धाकड़ 20 मार्च को अनुपस्थित मिले, जबकि डॉ. रवि अधिकारी 17, 18 एवं 20 मार्च को ड्यूटी से गैरहाजिर पाए गए। इसके अलावा संविदा विकासखंड कम्युनिटी मोबिलाइजर श्रीमती अर्चना खातरकर भी 20 मार्च को अनुपस्थित रहीं। वहीं फार्मासिस्ट श्री धनराज डोंगरे हाजिरी पंजी में हस्ताक्षर करने के बावजूद ड्यूटी से अनुपस्थित पाए गए। इन सभी अधिकारी एवं कर्मचारियों को कार्यालय द्वारा कारण बताओ सूचना पत्र जारी किया गया। जवाब संतोषप्रद नहीं पाए जाने कि स्थिति में उनके विरूद्ध कठोर अनुशासनात्मक कार्यवाही की जाएगी।

निरीक्षण के दौरान सीएमएचओ ने ग्राम दानवाखेड़ा में खुजली एवं अन्य बीमारियों से प्रभावित मरीजों के उपचार की स्थिति की जानकारी भी ली।

उन्होंने भर्ती मरीजों के उपचार एवं देखभाल को लेकर आवश्यक निर्देश दिए। वर्तमान में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र घोड़ाडोंगरी में ग्राम दानवाखेड़ा के कुल 6 मरीज मंगल पिता सेखलाल उम्र 38, कस्तूरी पति मंगल उम्र 35, सतीश पिता मंगल उम्र 04, मुन्नी पिता मंगल उम्र 08, रीना पिता मंगल उम्र 06 और गीता पिता मंगल सेलुकर उम्र 3 माह उपचार के लिए भर्ती है। सभी मरीज खुजली की बीमारी से ग्रसित हैं, जिनकी स्थिति सामान्य है। इसके अलावा उन्होंने ओपीडी , एएनसी एवं पीएनसी वार्ड का निरीक्षण कर अन्य मरीजों की स्वास्थ्य सेवाओं की भी जानकारी ली। अस्पताल में भर्ती सभी मरीजों की स्थिति सामान्य पाई गई।

सामान्य गति से चल रही है यातायात व्यवस्था, श्रद्धालुओं के लिए लगाया गया है हेल्थ कैंप

श्रद्धालुओं की सुविधा के लिए अधिकारी-कर्मचारी मुस्तैदी से कर रहे हैं ड्यूटी

सीहोर (निप्र)। चैत्र नवरात्रि पर विजयासन देवी के दर्शन और पूजा-अर्चना के लिए बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं का सलकनपुर आगमन हो रहा है। श्रद्धालुओं को पूजा-अर्चना एवं दर्शन में किसी तरह की कोई परेशानी न हो इसके लिए कलेक्टर श्री बालागुरू के. के निर्देशानुसार प्रशासन द्वारा सभी व्यवस्थाएं सुनिश्चित की गई हैं। मंदिर आने वाले श्रद्धालुओं के लिए पर्याप्त पार्किंग, पेयजल, साफ-सफाई तथा पर्याप्त बिजली की व्यवस्था की गई है। मंदिर परिसर में श्रद्धालुओं के सुगम आगमन एवं निर्गमन के लिए पर्याप्त संख्या में पुलिस एवं प्रशासन के अधिकारी-कर्मचारियों की ड्यूटी लगाई गई है। इसके साथ ही मेला स्थल पर दुकानों को व्यवस्थित ढंग से लगाया गया है, जिससे किसी प्रकार की असुविधा न हो। ट्रैफिक नियंत्रण के लिए भी पर्याप्त संख्या में पुलिस एवं जिला प्रशासन के अधिकारियों-कर्मचारियों की ड्यूटी लगाई गई है।

मंदिर परिसर में श्रद्धालुओं के लिए हेल्थ कैंप

लगाया गया हैं। जिससे श्रद्धालुओं को चिकित्सा की आवश्यकता पड़ने पर तत्काल रूप से मेडिकल सहायता प्रदान की जा रही है।

इसके साथ ही इमरजेंसी सेवाओं के लिए महत्वपूर्ण स्थानों पर एंबुलेंस की व्यवस्था भी की गई है। बाहर से आने वाले श्रद्धालुओं को मंदिर परिसर में कोई परेशानी न हो, इसके लिए मुख्य स्थानों पर हेल्प डेस्क बनाए गए हैं। इसके साथ ही मंदिर परिसर में कन्ट्रोल रूम भी बनाए गए हैं, जिससे ड्यूटी के दौरान सभी अधिकारी-कर्मचारी सतत संपर्क में हैं और पूरी मुस्तैदी से ड्यूटी कर रहे हैं।

नर्मदापुरम में ईद उल फितर की नमाज

2500 से ज्यादा नमाजियों ने ईदगाह में झुकाया सिर; काजी बोले- ईमान की हिफाजत हमारा फर्ज

नर्मदापुरम। नर्मदापुरम में शनिवार को ईद-उल-फितर का त्योहार मनाया जा रहा है। सुबह 8:30 बजे शहर के ईदगाह में करीब 2500 से ज्यादा मुस्लिम धर्मावलंबियों ने मुख्य नमाज अदा की और देश, प्रदेश व शहर में अमन, चैन और खुशहाली की दुआएं मांगी। शहर काजी हाफिज अशफाक अली ने नमाज पढ़ाई, जिसके बाद लोगों ने एक-दूसरे के गले मिलकर ईद की मुबारकबाद दी। इस अवसर पर प्रशासनिक अधिकारी और स्थानीय जनप्रतिनिधि भी मुस्लिम समाज को बधाई देने के लिए ईदगाह पहुंचे।

शहर काजी हाफिज अशफाक अली ने नमाज के बाद समाज को संबोधित करते हुए कहा, 'ईमान की हिफाजत करना हर मुसलमान का फर्ज है। रमजान के पवित्र महीने में इबादत के बाद आने वाला त्योहार ईदुल फितर मीठी ईद के नाम से मनाया जाता है। मुस्लिमों को यह ईद रमजान के पाक महीने के बाद इनाम के तौर पर दी गई है। उन्होंने समाजजनों से अपील करते हुए कहा, 'भाईचारा और प्यार, मोहम्मद का पैगाम दें।' इसके साथ ही देश की खुशहाली के लिए विशेष दुआ की गई।

2500 से ज्यादा लोग हुए शामिल, सजीं दरगाहें और मस्जिदें : ईदगाह पर मुख्य नमाज में करीब 2500 से ज्यादा लोगों ने नमाज पढ़ी। नमाज पूरी होने के बाद सभी ने एक-दूसरे को गले लगकर मुबारकबाद दी। तय समय के अनुसार, ईद की नमाज ईदगाह के अलावा शहर की अलग-अलग मस्जिदों में भी संपन्न हुई। ईद पर्व को लेकर शहर की सभी मस्जिदों, ईदगाह और दरगाहों को विशेष रूप से सजाया गया है।

त्योहार के मद्देनजर प्रशासन भी मुस्तैद रहा। ईदगाह पर सिटी मजिस्ट्रेट देवेंद्र प्रताप सिंह, एसडीओपी जितेंद्र पाठक और कोतवाली टीआई कंचन सिंह ठाकुर पहुंचे और व्यवस्थाओं का जायजा लेने के साथ ही बधाई दी।

इनके अलावा राजनीतिक दलों के नेता भी पहुंचे। कांग्रेस से नगर पालिका नेता प्रतिपक्ष अनोखीलाल राजोरिया और धर्मेंद्र तिवारी ने भी ईदगाह पहुंचकर समाजजनों को ईद की बधाई दी।

नर्मदापुरम में साइबर ठगी करने वाले मामा-भांजे गिरफ्तार:मुंह छुपाते आए नजर

नर्मदापुरम,(निप्र)। नर्मदापुरम जिले के सिवनी मालवा पुलिस ने साइबर ठगी के एक मामले में बड़ी कार्रवाई करते हुए तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। आरोपियों में मामा अनुज यादव (44) निवासी बालाघाट, उसका भांजा आर्यन यादव (22) निवासी महासमुंद और उनका साथी अंकुश उर्फ नरेंद्र रहांगडाले (20) निवासी रायपुर शामिल हैं। एसपी सांई कृष्णा थोटा ने गुरुवार को मामले का खुलासा किया। फरियादी नर्मदा प्रसाद रघुवंशी का 9 फरवरी 2026 की शाम करीब 5:30 बजे बाजार में मोबाइल गिर गया था। काफी तलाश के बाद भी मोबाइल नहीं मिला। अगले दिन उन्होंने नई सिम ले ली।

13 फरवरी को जब वे एक्सिस बैंक से पैसे निकालने पहुंचे तो पता चला कि उनके खाते से 1.73 लाख रुपए निकल चुके हैं। इसके बाद एसबीआई खाते की जांच करने पर उसमें से भी 1.05 लाख रुपए निकले होने की जानकारी मिली। इसके बाद उन्होंने सिवनी मालवा थाने में शिकायत दर्ज कराई।

यूपीआई के जरिए कियोस्क खातों में ट्रांसफर कर निकाले पैसे : जांच में सामने आया कि आरोपियों ने मोबाइल मिलने के बाद फोन पे और गूगल पे का पासवर्ड देख लिया था। इसके बाद 9 और 10 फरवरी को छीपाबड़ और हरदा के अलग-अलग कियोस्क केंद्रों पर जाकर क्क्ष से

पैसे ट्रांसफर किए और नकद राशि ले ली।

पुलिस को गुमराह करने अलग-अलग जगह ट्रांजेक्शन किए : एसपी सांई कृष्णा थोटा ने बताया कि आरोपियों ने जानबूझकर अलग-अलग कियोस्क पर ट्रांजेक्शन किए, ताकि लेनदेन ट्रैक करना मुश्किल हो और पुलिस तक पहुंचने में देरी हो। आरोपियों ने तकनीकी और स्थानीय संसाधनों का इस्तेमाल कर योजना बनाकर ठगी को अंजाम दिया।

कियोस्क संचालक भी बने सहआरोपी : पुलिस के अनुसार इस गिरोह का मास्टरमाइंड अनुज यादव है। मामले में चार कियोस्क संचालकों–संदीप साहू (नौसर, टिमरनी), राजेश पटनारे (भटपुरा, सिराली), शीष कलम (छीपाबड़) और शिव गोपाल मालवीय (मालदा, हरदा)–को भी सहआरोपी बनाया गया है। एसपी ने बताया कि कियोस्क संचालकों को किसी भी व्यक्ति को पैसे देने से पहले उसकी पहचान जांचना जरूरी होता है, लेकिन कमीशन के लालच में उन्होंने यह गलती की।

टीम को मिलेगा 25 हजार का इनाम : मामले के खुलासे के दौरान एसपी सांई कृष्णा थोटा, एएसपी अभिषेक राजन और थाना प्रभारी सुधाकर बारस्कर मौजूद रहे। इस मामले को सुलझाने वाली टीम को 25 हजार रुपए का इनाम देने का प्रस्ताव आईजी को भेजा जाएगा।

आसान पासवर्ड रखने पर निकाले रुपए : एसपी साईंकृष्णा थोटा ने खुलासा करते हुए बताया कि आरोपियों ने इस केस में इसलिए आसानी से रुपए निकाले कि फरियादी के मोबाइल और यूपीआई आईडी में पासवर्ड आसान था। एसपी ने इस घटना से लोगों को जागरूक करने वाला संदेश है कि कभी भी आसान पासवर्ड न डाले। मोबाइल घूमने पर तत्काल सिम को डिएक्टिवेट कराएं। जैसे ही वारदात हो तो 1930 पर कॉल करें शिकायत संपर्क करें।

ये कैसी परीक्षा! कॉलेज में किताबें रखकर एग्जाम, इनविजीलेटर नदारद, बाहरी व्यक्ति कर लाया स्टिंग

बड़वानी (नप्र)। मध्य प्रदेश के बड़वानी जिले के पानसेमल स्थित शासकीय महाविद्यालय में एक अनोखा नजारा सामने आया है। बीएससी वनस्पति शास्त्र की प्रायोगिक परीक्षा में स्टूडेंट बाकायदा कॉपी और किताबों से नकल करते नजर आए। एक सामाजिक कार्यकर्ता ने कक्षा में प्रवेश कर वीडियो भी बना लिया।

पानसेमल के सामाजिक कार्यकर्ता ज्ञानेश्वर लाड़ ने बताया कि 17 मार्च को नकल की सूचना मिलने पर वे शासकीय महाविद्यालय पानसेमल पहुंचे थे। वे आसानी से अंदर प्रवेश कर गए उन्हें किसी ने रोका टोका भी नहीं। जब उन्होंने कक्षा में प्रवेश किया तो अनोखा नजारा सामने आया। चार छात्र-छात्राएं बाकायदा कॉपी और किताब रख नकल कर रहे थे, और इनविजीलेटर भी नदारद था।

यह परीक्षा मध्य प्रदेश भोज मुक्त विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित थी और बीएससी वनस्पति शास्त्र (बॉटनी) प्रायोगिक व परियोजना प्रतिवेदन परीक्षा हो रही थी। जैसे ही ज्ञानेश्वर लाड़ ने पूछा कि क्या परीक्षा में कॉपी रखने की अनुमति है? इस पर कुछ ना जवाब देते हुए परीक्षार्थी ने कॉपी बंद कर दी। एक अन्य छात्रा ने पूछे जाने पर केवल मुस्कुराहट में जवाब दे दिया।

प्रभारी सवाल पूछते ही बगले झांकने लगे- इसके बाद उन्होंने कहा बढ़िया पेपर चल रहा है। ज्ञानेश्वर लाड़ ने बताया कि जब उन्होंने इस बारे में चर्चा करनी चाही तो वह बगले झांकने लग गई। इसके बाद उन्होंने इधर-उधर फोन लगाने शुरू कर दिए।

आउटसोर्स कर्मचारी नकल को बढ़ावा दे रहे- इस मामले में सामाजिक कार्यकर्ता और स्टिंग करने वाले ज्ञानेश्वर लाड़ का कहना है कि, परीक्षा केंद्रों पर हो रही नकल शिक्षा व्यवस्था के लिए गंभीर खतरा है। उन्होंने आरोप लगाया कुछ आउटसोर्स कर्मचारी जिम्मेदारों की शह पर नकल को बढ़ावा दे रहे हैं, जिस पर सख्त कार्रवाई जरूरी है। उन्होंने मांग की कि दोषियों को निलंबित कर कड़ी सजा दी जाए।

परीक्षा केंद्र पर निगरानी और सीसीटीवी कैमरे लगाए

परीक्षा केंद्रों पर कड़ी निगरानी, सीसीटीवी और आधुनिक तकनीक का उपयोग अनिवार्य किया जाए। उन्होंने शिक्षा विभाग से पारदर्शी जांच और नकल रोकने के लिए सख्त नीति लागू करने की अपील की। परीक्षा प्रभारी ने बताया चार विद्यार्थी बॉटनी प्रैक्टिकल का पेपर दे रहे थे। इसी दौरान किसी ने वहां जाकर वीडियो बना लिया। उन्होंने कहा कि इनविजीलेटर इस दौरान लिस्ट लेने गए थे।उन्होंने अजीब सी दलील दी कि स्टूडेंट्स केवल प्रश्न लिखने के लिए किताब का उपयोग कर रहे थे। उन्होंने कहा वह नकल नहीं कर रहे थे। बताया कि विद्यार्थियों की मुख्य परीक्षा 14 मार्च को समाप्त हो चुकी थी।

मध्यप्रदेश बनेगा स्पेसटेक नीति-2026 से अंतरिक्ष तकनीक का प्रमुख केंद्र : मुख्यमंत्री

भारत की नई अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था में सशक्त भूमिका में रहेगा मध्यप्रदेश

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि मध्यप्रदेश को स्पेस टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में अग्रणी राज्य के रूप में स्थापित करने के उद्देश्य से राज्य सरकार ने मध्यप्रदेश स्पेसटेक नीति-2026 लागू की है। यह नीति स्पेसटेक नवाचार, विनिर्माण, अनुसंधान और तकनीक आधारित अनुप्रयोगों को बढ़ावा देकर प्रदेश को भारत की तेजी से विकसित हो रही अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था का महत्वपूर्ण केंद्र बनाएगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि वैश्विक स्तर पर अंतरिक्ष अर्थव्यवस्था तेजी से विस्तार कर रही है और भारत इस क्षेत्र में नई संभावनाओं के साथ आगे बढ़ रहा है। मध्यप्रदेश अपनी मजबूत औद्योगिक संरचना, प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थानों, डिफेंस कॉरिडोर और उभरते टेक्नोलॉजी इको सिस्टम के कारण स्पेसटेक निवेश के लिए एक अनुकूल और आकर्षक गंतव्य बन रहा है। यह नीति प्रदेश की वैज्ञानिक और खगोलीय विरासत को भविष्य उन्मुख तकनीकी नेतृत्व में बदलने का एक दूरदर्शी प्रयास है, जो युवाओं के लिए नए अवसर तैयार करेगी और प्रदेश को स्पेसटेक सेक्टर में नई पहचान दिलाएगी।

स्पेसटेक इको सिस्टम के समग्र विकास का विजन- स्पेसटेक नीति-2026 अंतरिक्ष क्षेत्र के अपस्ट्रीम, मिडस्ट्रीम और डाउनस्ट्रीम सभी क्षेत्रों के विकास का व्यापक रोडमैप प्रस्तुत करती है।इसमें सैटेलाइट और लॉन्च व्हीकल कंपोनेंट निर्माण, प्रणोदन प्रणाली, एवियोनिक्स, उन्नत सामग्री, असेंबली-इंटीग्रेशन-टेस्टिंग, मिशन संचालन, ग्राउंड स्टेशन, स्पेस सिचुएशनल अवेयरनेस और एआई आधारित डेटा एनालिटिक्स जैसे क्षेत्रों को शामिल किया गया है।नीति में आधुनिक मैन्युफैक्चरिंग, टेस्टिंग और डेटा इंफ्रास्ट्रक्चर विकसित किया जाएगा और युवाओं को विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रमों में स्पेसटेक क्षेत्र के लिए तैयार किया जाएगा।

अनुसंधान और नवाचार को मिलेगा नया आधार- नीति में स्पेसटेक सेंटर ऑफ एक्सीलेंस स्थापित किया जाएगा, जहां अनुसंधान, नवाचार, प्रोटोटाइप विकास और स्टार्टअप इनक्यूबेशन को बढ़ावा मिलेगा। साथ ही स्मालसेट डिजिटल ट्विन लैब एण्ड स्पेस इनोवेशन सैंडबोक्स जैसी आधुनिक सुविधाएं भी विकसित की जाएंगी। उज्जैन में खगोल भौतिकी और अंतरिक्ष विज्ञान के लिए अनुसंधान एवं विकास केंद्र स्थापित कर प्रदेश की वैज्ञानिक विरासत को आधुनिक तकनीकों से जोड़ा जाएगा।

कौशल विकास से तैयार होगा भविष्य का कार्यबल

स्पेसटेक सेक्टर में योग्य मानव संसाधन तैयार करने के लिए उच्च शिक्षण संस्थानों में विशेष पाठ्यक्रम शुरू किए जाएंगे। इसके लिए 20 लाख रुपये तक का अनुदान दिया जाएगा। छात्रों को 6 माह तक 10 हजार रुपये प्रतिमाह स्टाइपेंड के साथ इंटर्नशिप के अवसर मिलेंगे। साथ ही कर्मचारियों के कौशल उन्नयन के लिए 50 हजार रुपये तक सहायता और शोधकर्ताओं के लिए स्पेसटेक फेलोशिप का भी प्रावधान किया गया है।

स्टार्ट-अप और उद्योगों के लिए आकर्षक प्रोत्साहन

नीति में स्टार्टअप्स को 75 लाख रुपये तक आइडिया-टू-प्रोटोटाइप अनुदान, एक करोड़ रुपये तक टेक्नोलॉजी अधिग्रहण सहायता और 200 करोड़ रुपये का रणनीतिक फंड निवेश, राज्य भागीदारी कोष से उपलब्ध कराया जाएगा। साथ ही एक पेटेंट पर 50 प्रतिशत प्रतिपूर्ति, परीक्षण सुविधाओं के लिए 1 करोड़ रुपये तक सहायता और इसरो, इन-स्पेस और आईएसओ प्रमाणन के लिए 75 प्रतिशत प्रतिपूर्ति (अधिकतम 10 लाख रूपये) का प्रावधान किया गया है। डिजाइन लिंक्ड इंसेंटिव और इनक्यूबेशन सुविधाओं के लिए भी विशेष प्रोत्साहन दिए जाएंगे।

विश्वस्तरीय अधोसंरचना का होगा विकास

नीति में स्पेसटेक उद्योगों को 40 प्रतिशत तक पूंजी अनुदान (अधिकतम 150 करोड़ रुपये) दिया जाएगा। महिला उद्यमियों को अतिरिक्त प्रोत्साहन भी मिलेगा। स्पेस सिस्टम एवं एप्लीकेशन पार्क, परीक्षण प्रयोगशालाएं, क्लीन रूम और हाई परफॉर्मेंस कंप्यूटिंग आधारित डेटा सेंटर स्थापित किए जाएंगे। परीक्षण सुविधाओं के लिए 15 करोड़ रुपये तक अनुदान और स्टार्ट-अप एवं एमएसएमई को परीक्षण लागत पर 30 प्रतिशत तक प्रतिपूर्ति भी दी जाएगी।

विद्यार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण को मिलेगा बढ़ावा

स्पेसटेक के प्रति रुचि बढ़ाने के लिए 'अंतरिक्ष विहार' स्पेस एक्सप्लोरेशन पार्क स्थापित किया जाएगा। 'मिशन कल्पना' में स्कूल विद्यार्थियों में नवाचार को प्रोत्साहित किया जाएगा। इसरो के युवा वैज्ञानिक कार्यक्रम (युविका) में विद्यार्थियों की भागीदारी बढ़ाने के लिए सहयोग दिया जाएगा और चयनित विद्यार्थियों को 25 हजार रुपये की प्रोत्साहन राशि भी प्रदान की जाएगी।

निवेशकों के लिए सुगम प्रक्रियाएं

नीति के क्रियान्वयन के लिए एमपीएमईडीसी को नोडल एजेंसी बनाया गया है। निवेशकों और स्टार्टअप्स को सिंगल विंडो क्लीयरेंस, ऑनलाइन पंजीयन और सरल प्रक्रियाओं के माध्यम से सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएंगी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि स्पेसटेक नीति-2026 प्रदेश में निवेश आकर्षित करने, उद्योगों को नई गति देने और युवाओं के लिए रोजगार के अवसर बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। यह नीति मध्यप्रदेश को अंतरिक्ष तकनीक के क्षेत्र में देश के अग्रणी राज्यों में स्थापित करने की दिशा में मील का पत्थर साबित होगी।

कांग्रेस से लोकसभा चुनाव लड़ी मोना अब भाजपा में महामंत्री

मप्र महिला मोर्चा की नई प्रदेश कार्यकारिणी घोषित; टीम में 7 उपाध्यक्ष, 8 प्रदेश मंत्री

भोपाल (नप्र)। कांग्रेस के टिकट पर लोकसभा चुनाव लड़ चुकीं मोना सुस्तानी को अब बीजेपी ने बड़ी जिम्मेदारी दी है। उन्हें भाजपा महिला मोर्चा की नई प्रदेश कार्यकारिणी में प्रदेश महामंत्री बनाया गया है।

मोना सुस्तानी मार्च 2023 में कांग्रेस छोड़कर बीजेपी में शामिल हुई थीं। भोपाल में पार्टी के तत्कालीन राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने उन्हें सदस्यता दिलाई थी। अब उन्हें संगठन में अहम पद मिलने को लेकर सियासी चर्चाएं भी तेज हो गई हैं। भारतीय जनता पार्टी महिला मोर्चा की प्रदेश अध्यक्ष एडवोकेट अश्विनी परांजपे राजवाड़े ने शनिवार को नई कार्यकारिणी की घोषणा की है। इसमें प्रदेशभर के विभिन्न जिलों से महिलाओं को जिम्मेदारियां सौंपी गई हैं।

जिपं सदस्य रह चुकी हैं मोना- मोना सुस्तानी इससे पहले एक बार जि पंचायत सदस्य और एक बार जनपद पंचायत की सदस्य भी रहीं हैं। वहीं मोना सुस्तानी के ससुर गुलाबसिंह सुस्तानी राजगढ़ विधानसभा से 2 बार विधायक चुने गए और दिग्विजय शासन काल में लंबे समय तक एमपी एग्रो के चेयरमेन रहे हैं।

भाजपा के रोडमल नागर ने हराया था- 2019 के लोकसभा चुनाव में राजगढ़ संसदीय क्षेत्र से कांग्रेस के टिकट पर चुनाव लड़ीं थीं, उन्हें भाजपा के रोड़मल नागर ने 2 लाख से अधिक मतों से हरा दिया था। उसके एक साल बाद भोपाल में जाकर भाजपा में शामिल हो गईं। राजगढ़ में लालचुनर के नाम से संगठन बनाकर नातरा प्रथा के खिलाफ बीते 5 साल से लड़ाई लड़ रहीं हैं।

इन्हें मिली जिम्मेदारियां

ये बनीं उपाध्यक्ष

नीलिमा शिंदे (ग्वालियर)

आशा गुप्ता (पन्ना)

माया पटेल (देवास)

शालिनी सरावगी (शहडोल)

एड़. अंजना पटेल (बड़वानी)

विभा श्रीवास्तव (अशोकनगर)

डॉ. याकृति जाड़िया (सागर)

इन्हें बनाया प्रदेश मंत्री

शशि पटेल (मंडला)

खुशबू गुप्ता (ग्वालियर)

रीना दंडोतिया (मुरैना)

ममता मालवीय (बैतूल)

डॉ. अंजली रायजादा (ग्वालियर)

चारुलता यादव (खंडवा)

सीमा जायसवाल (सिंगरौली)

प्रमिला यादव (उज्जैन)

कोषाध्यक्ष एवं कार्यालय प्रभार

कोषाध्यक्षः सीए निधि बंग (इंदौर)

सह कोषाध्यक्षः अर्चना अग्रवाल (जबलपुर), पूर्णिमा तिवारी (रीवा)

कार्यालय मंत्रीः भावना सिंह (भोपाल)

सह कार्यालय मंत्रीः विमला तिवारी (भोपाल), ललिता पुर्तिया (नर्मदापुरम)

मीडिया, सोशल मीडिया और आईटी प्रभार

मीडिया प्रभारीःहर्षा ठाकुर (खंडवा)

सह मीडिया प्रभारीः प्रियांशा उरमलिया (सतना)

सोशल मीडिया प्रभारीः स्मृति जैन (नरसिंहपुर)

सह सोशल मीडिया प्रभारीः सारिका उपाध्याय (ग्वालियर), एड़ गायत्री सिंह ठाकुर (भोपाल)

आई.टी.प्रभारीः सुधा सुख्यानी (इंदौर)

सह आई.टी.प्रभारीः रश्मि पाण्डे (भोपाल), किरण भदोरीया (ग्वालियर)

नीति, शोध एवं प्रशिक्षण प्रभार

नीति एवं शोध प्रभारीः डॉ. साक्षी भारद्वाज (भोपाल)

सह नीति एवं शोध प्रभारीः सुमन सिंह (सीधी), इंदु चौधरी (सागर)

प्रशिक्षण प्रभारीः शिवानी अडसपुरकर (इंदौर नगर)

सह प्रशिक्षण प्रभारीः डॉ. वंदना आर्य (नरसिंहपुर), चेतना शर्मा (शाजापुर)

बीजेपी ओबीसी मोर्चा की प्रदेश कार्यकारिणी घोषित, शिवराज सिंह के चचेरे भाई बने उपाध्यक्ष

भारतीय जनता पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष हेमंत खंडेलवाल की सहमति से पिछड़ा वर्ग मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष पवन पाटीदार ने नई प्रदेश कार्यकारिणी की घोषणा कर दी है। इस सूची में अनुभवी और नए चेहरों का संतुलन बनाया गया है।इनमें भोपाल नगर निगम के पूर्व अध्यक्ष और केन्द्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान के चचेरे भाई सुरजीत सिंह चौहान उपाध्यक्ष बनाए गए हैं। खास बात ये है कि बीजेपी में 33 प्रतिशत महिला आरक्षण के दावे के उलट ओबीसी मोर्चा की प्रदेश कार्यकारिणी में एक भी महिला को पदाधिकारी नहीं बनाया गया।

आठ उपाध्यक्ष बनाए

जमना सेन, प्रकाश राठौर, संजय यादव, रणजीत सिंह सोंधिया, सुरजीत सिंह चौहान, उदय प्रताप सिंह, राम पटेल, सुरेन्द्र यादव।

दो महामंत्री बनाए, एक पद होल्ड रखा- बीजेपी ओबीसी मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष पवन पाटीदार ने दो प्रदेश महामंत्री घोषित किए हैं, एक पद होल्ड रखा है। रविन्द्र लोधी और नरेन्द्र राठौर को प्रदेश महामंत्री बनाया गया है।

मंडला में पुलिया में गिरी बाइक, अंधेरे में नहीं दिखी टूटी दीवार, चार दोस्तों की मौके पर मौत

मंडला (नप्र)। मंडला जिले के बीजाडांडी थाना क्षेत्र में शनिवार रात सड़क हादसे में चार बाइक सवार युवकों की मौत हो गई। हादसा भैंसवाही और टिकराटोला के बीच एक जर्जर पुलिया से गिरने के कारण हुआ। स्थानीय लोगों ने प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क विभाग पर गंभीर लापरवाही का आरोप लगाया है। उनका कहना है कि यह पुलिया पिछली बरसात में टूट गई थी, लेकिन इसका निर्माण या मरम्मत अब तक नहीं कराई गई। हादसे के समय पुलिया के दोनों ओर न तो बैरिकेडिंग की गई थी और न ही कोई चेतावनी बोर्ड लगाया गया था। अंधेरे में तेज रफ्तार बाइक सवार युवक पुलिया से नीचे गिर गए। वे नीचे रखे सीमेंट पाइप से टकरा गए, जिससे चारों की मौके पर ही मौत हो गई। मृतकों की पहचान प्रमोद कुमार नरेती (24), संतलाल उइके (23), शिवम यादव (17) और

गंगाराम उइके (22) के रूप में हुई है। रविवार को बीजाडांडी स्वास्थ्य केंद्र में पोस्टमार्टम के बाद शव परिजनों को सौंप दिया गया।

ग्रामीणों ने कहा-शिकायत के बाद भी नहीं बनायी पुलिया- स्थानीय ग्रामीणों ने प्रशासन पर गंभीर लापरवाही का आरोप लगाया है। भैंसवाही निवासी नन्ने सिंह परस्ते ने बताया कि पुलिया टूटने के बाद कई बार शिकायतें की गईं, जिसमें 181 हेल्पलाइन पर भी सूचना देना शामिल है, लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई। ग्रामीणों ने ही आवागमन के लिए अस्थायी रास्ता बनाया था।

कही-सुनी

रवि भोई

(लेखक पत्रिका समवेत सृजन के प्रबंध संपादक और स्वतंत्र पत्रकार हैं।)

छत्तीसगढ़ के राजनीतिक राज्यपालों की इच्छाएं

पिछले 25-26 सालों में आईएएस-आईपीएस, सेना अधिकारी और राजनेता सभी तरह के विशिष्टजन छत्तीसगढ़ के राज्यपाल बने हैं। देखा गया है कि सक्रिय राजनीति से लोकभवन में आने वाले विशिष्टजन अपने रिश्तेदारों को भी राजनीति में उतारने की इच्छा रखते हैं। छत्तीसगढ़ के राज्यपाल रहे स्व बलरामदास जी टंडन अपने बेटे को सक्रिय राजनीति में लाने में लगे रहे, उनका बेटा चंडीगढ़ भाजपा के अध्यक्ष रहे। बताते हैं कि स्व. टंडन जी अपने पुत्र को चुनाव में भाजपा की टिकट दिलाने में लगे रहे। स्व. टंडन जी जनसंघ के जमाने के नेता थे। छत्तीसगढ़ के राज्यपाल रहे विश्वभूषण हरिचंदन अपने पुत्र को ओडिशा विधानसभा चुनाव की टिकट दिलाने में सफल रहे। श्री हरिचंदन के पुत्र चुनाव जीते और अभी मोहन चरण माझी के कैबिनेट में मंत्री हैं। बताते हैं छत्तीसगढ़ के वर्तमान राज्यपाल रमेन डेका अपनी बेटी को इस बार असम विधानसभा चुनाव में भाजपा की टिकट दिलवाना चाहते थे, पर पार्टी ने उनकी बेटी को उम्मीदवार नहीं बनाया। खबर है कि रमेन डेका पलासबारी विधानसभा सीट से अपनी बेटी की उम्मीदवारी चाहते थे, पर भाजपा ने वहां हिमांशु शेखर बैश्य को टिकट दे दिया।

कौन होगा नया जनसंपर्क आयुक्त ?

राज्य के जनसंपर्क आयुक्त डॉ रवि मित्तल के प्रधानमंत्री कार्यालय में उप सचिव बनाए जाने की खबर के बाद नए जनसंपर्क आयुक्त के लिए कयासबाजी शुरू हो गई है। जनसंपर्क विभाग सरकार का चेहरा चमकाने के साथ मुख्यमंत्री की छवि निखारने के साथ कई भूमिका में होता है। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय को अपने करीब 27 माह के कार्यकाल में तीसरा जनसंपर्क आयुक्त नियुक्त करना पड़ेगा। साय सरकार ने पहले आईपीएस मयंक श्रीवास्तव को जनसंपर्क आयुक्त बनाया। इसके बाद 2016 बैच के आईएएस डॉ रवि मित्तल को जनसंपर्क आयुक्त के तौर पर लाया गया। डॉ मित्तल पीएमओ में जाने वाले हैं ऐसे में साय सरकार को नए जनसंपर्क आयुक्त की नियुक्ति करनी पड़ेगी। नए जनसंपर्क आयुक्त के लिए 2009 बैच के आईएएस अवनीश शरण, 2012 बैच के आईएएस रजत बंसल और 2013 बैच के आईएएस और रायपुर कलेक्टर गौरव सिंह का नाम चर्चा में है। मुख्यमंत्री रहते भूपेश बघेल ने 2006 बैच के आईएएस एस भारतीदासन को रायपुर कलेक्टर के पद से तबादला कर जनसंपर्क आयुक्त बनाया था।

रवि मित्तल पीएमओ में छत्तीसगढ़ कैडर के तीसरे अधिकारी

अमित अग्रवाल, डॉ रोहित यादव के बाद डॉ रवि मित्तल पीएमओ में पदस्थ होने वाले तीसरे आईएएस अधिकारी है। 1993 बैच के आईएएस अमित अग्रवाल जुलाई 2004 से नवंबर 2012 के बीच प्रधानमंत्री कार्यालय में रहे। वे पीएमओ में उप सचिव के रूप में गए थे। संयुक्त सचिव भी रहे। 2002 बैच के आईएएस अधिकारी रोहित यादव फरवरी 2020 से जुलाई 2023 तक पीएमओ में संयुक्त सचिव रहे। अब छत्तीसगढ़ कैडर के 2016 बैच के आईएएस रवि मित्तल पीएमओ में उप सचिव पदस्थ किए गए हैं। बताते है रवि मित्तल पीएमओ में मंत्रियों से समन्वय,महत्वपूर्ण योजनाओं की मॉनिटरिंग अन्य काम देखेंगे। रवि मित्तल छत्तीसगढ़ में जनसंपर्क आयुक्त के साथ मुख्यमंत्री सचिवालय में संयुक्त सचिव हैं। माना जा रहा है कि पीएमओ में पोस्टिंग से रवि मित्तल को काम करने का बड़ा कैनवास मिलेगा। चर्चा है कि पीएमओ में नियुक्ति के छत्तीसगढ़ के दो अफसरों का नाम था, जिसमें रवि मित्तल का चयन किया गया।

मंत्रालय और जिलों में बड़े बदलाव की चर्चा

विधानसभा का बजट सत्र निपटने के बाद मंत्रालय और जिलों में बड़े बदलाव की चर्चा शुरू हो गई है। उम्मीद की जा रही है कि अगले हफ्ते बड़ा बदलाव हो जाएगा। चर्चा है कि जिलों से ज्यादा मंत्रालय में बदलाव होगा। माना जा रहा है कि जिन अफसरों के पास काम का बोझ ज्यादा है, उन्हें हल्का किया जाएगा और जिनके पास वर्कलोड कम है, उन्हें कुछ अतिरिक्त विभाग दिए जाएंगे। खबर है कि दो साल से एक ही विभाग में पदस्थ अफसरों में उलटफेर हो सकता है। 2011 बैच के आईएएस और कांकेर कलेक्टर निलेश कुमार महादेव क्षीरसागर केंद्र सरकार में प्रतिनियुक्ति पर जाने वाले हैं। अब तक कलेक्टर रहते राज्य के कई अफसर भारत सरकार में प्रतिनियुक्ति पर जा चुके हैं। 2008 के बाद प्रतिनियुक्ति नियमों में बदलाव के कारण राज्य के कई अफसर भारत सरकार की तरफ रुख करने लगे हैं। बताते हैं 2006 बैच के आईएएस अंकित आनंद, 2010 बैच के आईएएस सारांश मित्तर और कुछ अन्य अधिकारी भी भारत सरकार में डेपुटेशन पर जाना चाहते हैं, लेकिन राज्य सरकार से अनुमति नहीं मिलने के कारण अटके हैं।

चुनाव ड्यूटी निरस्त कराने में कामयाब अफसर

पश्चिम बंगाल समेत पांच राज्यों के चुनाव में राज्य के कई आईएएस-आईपीएस और एलाइड सर्विस के अफसरों की ड्यूटी लगी है। कुछ अफसर अलग -अलग विधानसभा क्षेत्रों में पहुंच गए हैं, तो कुछ अफसरों को चुनाव आयोग रिजर्व में रखा है। विधानसभा चुनाव ड्यूटी को लेकर कई अफसर परेशान भी रहे और हैं भी। पर राज्य के अफसर ऐसे भी निकले जिन्होंने अपनी चुनाव ड्यूटी निरस्त करवा ली। इस अफसर के पास चुनाव आयोग से चुनाव ड्यूटी कैंसल होने का पत्र भी आ गया। अब चुनाव ड्यूटी से परेशान अफसर इस अधिकारी की पहुँच और संपर्क का पता लगाने में लगे हैं। यह अफसर कई साल भारत सरकार में पदस्थ रहे और महत्वपूर्ण जगह पर, तो इतना तो बनता ही है। यह अफसर राज्य में कई विभागों के सचिव और भी कुछ महत्वपूर्ण पद पर पदस्थ हैं।

सदन में आक्रामक दिखे महंत

विधानसभा के बजट सत्र में नेता प्रतिपक्ष डॉ चरणदास महंत के तेवर कुछ आक्रामक दिखे। स्थगन प्रस्ताव और सवालों के माध्यम से सरकार को घेरा। इस बार विधानसभा में कांग्रेस को कई मुद्दे भी मिले। धान खरीदी तो बड़ा मुद्दा था ही, लाखों रुपये के धान चूहे खा जाने की घटना, राज्य में अफीम की खेती और उसमें एक भाजपा नेता की संलिप्तता, बीजापुर के पोटा कैबिन में तीन छात्राओं के गर्भवती होने का मामला और रसोई गैस की कीमतों में 60 रुपए की वृद्धि जैसे कई और मुद्दे भी सरकार पर हमले के लिए कांग्रेस को मिल गए। कांग्रेस ने कई मौकों पर सदन के गर्भगृह में जाकर अपनी ताकत दिखाई, तो कई बार बहिर्गमन भी किया। विधानसभा की पिछली कार्यवाहियों में सत्ता पक्ष के विधायक अजय चंद्राकर ही छाये दिखते थे, पर इस बार कांग्रेस के उमेश पटेल, रामकुमार यादव जैसे विधायकों ने भी अपनी उपस्थिति दिखाई। पहले संभावना जताई जा रही थी कि विधानसभा सत्र निर्धारित समय से पहले समाप्त हो जाएगा, पर तय समय तक ही चला। यह भी विपक्ष के लिए अच्छा रहा।

नए पीसीसीएफ मई के बाद

चर्चा है कि राज्य को नया पीसीसीएफ और वन बल प्रमुख इस साल मई के बाद मिलेगा। वर्तमान पीसीसीएफ और वन बल प्रमुख वी श्रीनिवासराव 31 मई को रिटायर हो जाएंगे। माना जा रहा है कि इसके बाद वन विभाग के मुखिया की जिम्मेदारी अरुण पांडे को मिलेगी। अरुण पांडे अभी पीसीसीएफ वन्य प्राणी हैं। अरुण पांडे मई में वन बल प्रमुख बनते हैं, तो उन्हें एक साल से कुछ अधिक समय काम करने का मौका मिलेगा। वैसे श्रीनिवासराव के रिटायरमेंट के बाद अरुण पांडे से वरिष्ठ तपेश झा और अनिल साहू सेवा में रहेंगे, पर तपेश झा इस साल जून में और अनिल साहू इस साल जुलाई में रिटायर हो जाएंगे। तपेश झा तो श्रीनिवासराव से भी वरिष्ठ हैं और अनिल साहू उनके बैच के हैं। अब श्रीनिवासराव के रिटायरमेंट के बाद अनिल साहू को वन बल प्रमुख का स्केल मिलता है या नहीं, यह देखने वाली बात होगी। अनिल साहू अभी राज्य लघु वनोपज संघ के प्रबंध संचालक हैं।

स्कूल शिक्षा विभाग जूनियर अफसरों के भरोसे

कहते हैं स्कूल शिक्षा सचिव सिद्धार्थ कोमल परदेशी और डीपीआई ऋतुराज रघुवंशी के चुनाव ड्यूटी में जाने के बाद स्कूल शिक्षा विभाग में चार मई तक तो कोई नीतिगत निर्णय नहीं होना है। खबर है कि ऋतुराज रघुवंशी डीपीआई के अलावा शिक्षा विभाग से सबद्ध अन्य संस्थाओं के भी मुखिया हैं। इन संस्थाओं का चालू प्रभार मातहतों को सौंप दिया गया, पर उन्हें निर्णय लेने का अधिकार नहीं होगा। डीपीआई का चार्ज सहायक संचालक स्तर के एक अफसर को सौंपे जाने की खबर है। डीपीआई में सीनियर के रहते जूनियर को डीपीआई का कामकाज सौंपे जाने को लेकर भी कानाफूसी हो रही है। शिक्षा सत्र के पहले बड़े अफसरों की गैरहाजिरी से विभाग का कामकाज कैसे चलेगा, यह बड़ा सवाल है।

पुलिस कमिश्नरी सिस्टम और रायपुर

राजधानी रायपुर में पुलिस कमिश्नरी सिस्टम लागू हुए करीब दो महीने हो गए। इस दो महीने में न तो अपराध में कोई कमी दिखाई दी और न ही ट्रैफिक सुधार दिखा। चाकूबाजी और गोलीबारी की घटनाएं वैसी ही हैं। नशे की चीजें भी धड़ल्ले से बिक रही हैं। कहते हैं राजधानी में कमिश्नरी सिस्टम से ऊपर स्तर पर तो अधिकारी बढ़ गए। नीचे का स्टाफ नहीं बढ़ा। रायपुर ग्रामीण जिला और कमिश्नरी सिस्टम लागू होने से स्टाफ का बंटवारा हो गया। पुलिस कमिश्नर,एसीपी,डीसीपी और दूसरे अफसरों के बैठने की व्यवस्था जैसे तैसे हो गई है। रायपुर ग्रामीण एसपी का आफिस कम ही लोगों को मालूम है। अब सरकार बिलासपुर और दुर्ग में पुलिस कमिश्नर सिस्टम लागू करने की सोच रही है, तो व्यवस्था पहले करे,तभी पुलिस कमिश्नर सिस्टम का फायदा लोगों को मिलेगा और अच्छे नतीजे भी सामने आएंगे।